Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

साध नें श्रावक रतनां री माला,एक मोटी दूजी नांनी। गुण गुंथ्या च्यारूं तीरथ नां इविरत रह गई कांनी ॥

साधु और श्रावक –दोनों रत्नों की माला हैं। एक बड़ी और दूसरी छोटी। वे चारों तीर्थों के गुणों से गूंथी हुई हैं। अविरति एक और अलग रह गई।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 28 • अंक 05 • 02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 31-10-2026 • पेज 28 • ₹ 10 रुपये

अंबर से गुरु-दृष्टि का वरदान
धरा पर 'योगक्षेम' का पावन अनुष्ठान :
पूज्य गुरुदेव तुलसी 113वाँ जन्मोत्सव विशेषांक



गुरु गगन में, शिष्य धरा पर, बीच अटूट विश्वास महान
एक की दृष्टि, एक के चरण, यही है संघ की पहचान!
'ऊपर से देखूँगा तुमको', इस वचन में बसते प्राण
महाश्रमण के हर संकल्प में, मुस्काए तुलसी का अरमान!



भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक एवं प्रकाश-पर्व दीपावली की पावन आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ!

–अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

सुधर्मा सभा में 'मार्दव से क्या मिलेगा?' विषय पर आचार्यश्री का मंगल पाथेय

'कहे कबीरा वही बड़ा, जाका बड़ा स्वभाव नम्रता ही है जीवन का सच्चा संस्कार' —आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूँ।
21 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के दिव्य प्रेरक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में आध्यात्मिक चेतना का महाप्रवाह निरंतर प्रवहमान है। पूज्य प्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित विषय 'मार्दव से क्या मिलेगा?' पर आगम आधारित अत्यंत गंभीर, दार्शनिक एवं प्रामाणिक देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।



अहंकार का विनाश और मार्दव की अनुप्रेक्षा :

1. मान का प्रतिपक्षी भाव मार्दव: आचार्यश्री ने प्रवचन के आरंभ में 'मृदु' शब्द की व्याकरणिक व्युत्पत्ति समझाते हुए फरमाया कि जैसे 'ऋजु' से 'आर्जव' शब्द बनता है, ठीक उसी प्रकार 'मृदु' शब्द से भाववाचक संज्ञा के रूप में मृदुता, मृदुत्व या मार्दव निष्पन्न होता है। हमारे भीतर मान (अहंकार) कषाय विद्यमान रहता है, जिसका प्रतिपक्षी भाव मार्दव है। अहंकार विनयशीलता का नाश करने वाला महादोष है, जिसे परास्त करने के लिए निरंतर मार्दव की अनुप्रेक्षा का अभ्यास करना चाहिए।

2. सुविनीत को संपत्ति, अविनीत को विपत्ति : पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि मनुष्य के जीवन में अनेक सद्गुण हो सकते हैं, जिनमें मार्दव या विनयशीलता अत्यंत प्रमुख है। अविनीत आत्मा दुःखी होती है, जबकि सुविनीत आत्मा अक्षय सुख को प्राप्त करती है। चाहे धर्मसंघ हो, समाज हो, राजनीति हो अथवा घर-परिवार—जो अविनीत होता है उसे विपत्ति और जो सुविनीत होता है उसे संपत्ति प्राप्त होती है। यह सार्वभौमिक नियम केवल मानव जगत में ही नहीं, अपितु देव जगत में भी समान रूप से लागू होता है।

> विद्या विनय से शोभित होती है। ज्ञान पर मौन, दान पर निस्पृहता और शक्ति होने पर क्षमा कर देना बड़प्पन है।
>
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

3. स्वभाव से ही महानता : जिस व्यक्ति में नम्रता, क्षमाशीलता और अपने आराध्य के प्रति निष्ठावान भक्ति होती है, वही वास्तव में बड़ा आदमी बनता है। व्यक्ति अपने दुर्गुणों और स्वभाव से ही नीच बनता है और अपने सुसंस्कृत स्वभाव व नम्रता से ही महानता के शिखर को छूता है।

बौद्धिक विकास बनाम व्यवहार कुशलता और आठ मदस्थान :

1. ज्ञान के साथ शांत प्रकृति : आचार्यश्री ने व्यावहारिक जीवन का मर्म उद्घाटित करते हुए फरमाया कि कोई व्यक्ति कितना ही पढ़ा-लिखा, ज्ञानी और बौद्धिक रूप से विकसित क्यों न हो, यदि उसकी प्रकृति शांत और स्वभाव में विनयशीलता नहीं है, तो वह अधूरा है। ज्ञानी होने के साथ-साथ प्रकृति का शांत होना और स्वभाव में नम्रता का होना अनिवार्य है। जीवन में किताबी पढ़ाई-लिखाई से कहीं अधिक महत्त्व व्यवहार कुशलता का होता है।

2. बड़प्पन के तीन लक्षण : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि—१. अगाध ज्ञान होने पर भी मौन धारण कर लेना, २. दान देकर भी प्रशंसा (श्लाघा) की अपेक्षा न रखना, और ३. असीम शक्ति होते हुए भी क्षमा कर देना—ये ही मनुष्य के सच्चे बड़प्पन और मार्दव गुण की असली पहचान हैं। विद्या हमेशा विनय से ही शोभित होती है।

शेष पृष्ठ 20 पर...

एक 'कैरी री खटाई' सूं तय हुयो संघ रो युवाचार्य!!!!!!!

जब दो समान योग्य साधुओं में से उत्तराधिकारी चुनना कठिन हो गया, तब एक आचार्य श्री ने ली 'मार्दव' और 'विनय' की एक अनूठी परीक्षा... पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा सुनाया गया शिक्षाप्रद प्रसंग!

A. आचार्य श्री का चिंतन एवं निर्णय की चुनौती :

जब एक पूज्य आचार्य श्री 70 वर्ष से अधिक की आयु पार कर अपने आठवें दशक में प्रवेश कर रहे थे, तब संघ के भविष्य को लेकर उनके मन में गंभीर चिंतन जागा:

1. उत्तराधिकारी की खोज : उन्होंने एकांत में पूरे साधु-समुदाय की योग्यता, ज्ञान और सेवा-भाव का निष्पक्ष अवलोकन किया।

2. दो समान दावेदार : मानसिक आकलन के अंत में दो ऐसे साधु सामने आए जो ज्ञान, वक्तृत्व कला, दीक्षा पर्याय और आयु में लगभग बिल्कुल समान स्तर पर थे।

3. निर्णय की जटिलता : जब दोनों साधु हर मापदंड पर समकक्ष दिखे, तो आचार्य श्री के सामने यह प्रश्न खड़ा हुआ कि युवाचार्य पद का दायित्व किसे सौंपा जाए?

B. 'मार्दव' और 'विनय' की अनोखी परीक्षा :

बौद्धिक समानता के कारण आचार्य श्री ने एक व्यावहारिक पैमाना चुना— 'मार्दव' (अहंकार-शून्यता व व्यवहार कुशलता) की परीक्षा।

1. पारणा के दिन आचार्य श्री का प्रयोग : उपवास के पारणे के अगले दिन आचार्य श्री ने जानबूझकर दोनों साधुओं को अलग-अलग समय पर अपने पास बुलाया और अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए खट्टी चीज (जैसे कैरी या कैरी का अचार) लाने के लिए कहा।

2. प्रथम साधु का व्यवहार : जब प्रथम साधु (जो संतों को पढ़ाने में व्यस्त था) आचार्य श्री के पास पहुँचा, तो वह थोड़ा अनमना था। आचार्य श्री द्वारा कैरी लाने की इच्छा जताए जाने पर उसने थोड़ा तेजी और आवेश में कहा— 'कैरी कल्पती है क्या? साधु को कैरी लाना, क्या बात करते हैं आप?' उसने गुरु-सेवा के स्थान पर अपने अध्ययन-कार्य के व्यवधान को अधिक महत्व दिया।

3. दूसरे साधु की सहज गुरु-भक्ति : इसके बाद जब आचार्य श्री ने दूसरे साधु को बुलाया, तो वह भी संतों को पढ़ाने में व्यस्त था, किंतु गुरुदेव के याद करते ही उसने तुरंत अपनी क्लास रोकी, तत्काल वंदना की और पूरी तत्परता से सेवा में हाजिर हुआ। गोचरी का निर्देश मिलते ही बिना किसी तर्क या संकोच के वह तुरंत श्रावक के घर गया, कैरी का अचार और रोटी प्राप्त की और अत्यंत विनयपूर्वक गुरुदेव को आहार करवाया।

C. निर्णय की घोषणा और पश्चाताप का पावन दृश्य :

1. युवाचार्य पद की घोषणा : इस व्यावहारिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विनयशील साधु को आचार्य श्री ने अपना उत्तराधिकारी (युवाचार्य) घोषित कर दिया। वे वर्षों तक गुरु-चरणों में रहे और अंततः आचार्य पद पर आसीन हुए।

2. गलती का अहसास : जिस साधु से उस समय आवेश में प्रतिक्रिया हुई थी, उसे अपनी भूल का गहरा अहसास हुआ कि वह गुरु की कसौटी पर खरा नहीं उतर सका।

3. क्षमा-याचना और उदारता : जब वे पहले वाले साधु आचार्य पद पर आसीन हुए, तो दूसरे साधु उनके पास गए और अपने पूर्व के व्यवहार के लिए निष्कपट भाव से क्षमा माँगी। नए आचार्य ने विशाल हृदय दिखाते हुए न केवल उन्हें क्षमा किया, बल्कि उनकी योग्यता व पश्चाताप को देखते हुए उन्हें 'उपाध्याय' पद पर नियुक्त किया।

भीड़ तो घणी है, पण ज्याँने देख्याँ 'कालजै में ठंडक' व्है... वो मिनख कठी गयो?

प्रवचन में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने संत कबीर दास जी के इस ऐतिहासिक दोहे को आधार बनाते हुए मनुष्यों के स्वभाव और आचरण पर गहरा प्रकाश डाला :

'कबीरा सो कोसा फिरयों, मिनखां तणो सुकाल।
जाको देखै हियौ ठरै, ताको बड़ौ अकाल'॥

A. जनसंख्या का सुकाल और गुणों का अकाल :

इस दोहे के माध्यम से आचार्य श्री ने समाज के यथार्थ को समझाया :

1. मिनखां तणो सुकाल : यदि आप सौ कोस तक भी यात्रा करें, तो आपको अनगिनत मनुष्य मिल जाएंगे। संख्या की दृष्टि से समाज में इंसानों का 'सुकाल' (प्रचुरता) है।

2. सद्गुणों का अकाल : किंतु, ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व मिलना आज कठिन हो गया है जिन्हें देखते ही सामने वाले के हृदय को ठंडक और शांति (हियौ ठरै) प्राप्त हो। आज गुणों और आत्मीयता का भारी 'अकाल' है।

B. IQ बनाम E Q : उच्च शिक्षा और व्यवहार कुशलता का संतुलन :

1. बौद्धिक ज्ञान (IQ) बनाम भावात्मक विकास (EQ) : आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि केवल उच्च डिग्रियाँ (जैसे बी.ए., एम.ए., सी.ए. आदि) प्राप्त कर लेना या उच्च बौद्धिक स्तर (IQ) होना ही जीवन की सफलता नहीं है। इसके साथ जीवन में 'इमोशनल कोशेंट' (EQ), विनयशीलता और 'मार्दव' (मृदुता) का होना अनिवार्य है।

2. कार्यालय का व्यावहारिक उदाहरण : इसे समझाते हुए आचार्य प्रवर ने बताया कि यदि किसी कार्यस्थल पर कोई व्यक्ति अत्यधिक पढ़ा-लिखा (High IQ) है, लेकिन उसका व्यवहार झगड़ालू और कठोर है, तो वह पूरी व्यवस्था को बिगाड़ देगा। इसके विपरीत, एक कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी यदि उच्च EQ (शांत, मृदुभाषी और विनीत) वाला है, तो वह अपने मधुर व्यवहार से हर जगह समन्वय और शांति स्थापित कर लेता है।

C. निष्कर्ष: मार्दव गुण ही जीवन का सच्चा आभूषण है :

संदेश : मनुष्य को अपनी बाहरी योग्यताओं (डिग्रियों) के साथ-साथ अपने भीतर के मार्दव गुण और भावात्मक विकास को निखारने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

मधुर, शांत और विनयपूर्ण व्यवहार ही मनुष्य को समाज में सच्चा आदर और जीवन में परम शांति दिलाता है।

Big Degrees या फिर Good Nature: जानिए असली 'Greatness' का Secret!

मानव जीवन में बड़प्पन और अहंकार-शून्यता के वास्तविक अर्थ को उजागर करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणादायी दोहे का संदर्भ लिया :

'नमन खमन अरु दीनता, सबका आदर भाव।
कहे कबीरा वही बड़ा, जाका बड़ा स्वभाव॥'

A. वास्तविक बड़प्पन का लक्षण :

1. पद और कद से परे महानता : आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि कोई भी व्यक्ति केवल शारीरिक कद-काठी, विशाल धन-दौलत या ऊँचे पद पर आसीन होने से 'बड़ा' नहीं कहलाता।

2. स्वभाव ही असली पहचान : सच्चा बड़प्पन व्यक्ति के बाहरी आवरण में नहीं, बल्कि उसके आंतरिक स्वभाव, व्यवहार और विचारों की निश्छलता में निहित होता है।

B. बड़प्पन के 4 मूल स्तंभ :

कबीर साहिब के दोहे में वर्णित चार प्रमुख सद्गुणों को आचार्य श्री ने बहुत ही सरल रूप से समझाया:

1. नमन (विनम्रता) : जो सर्वत्र अहंकार का त्याग कर उचित स्थान पर झुकना जानता है और जिसके व्यवहार में नम्रता समाहित है।

2. खमन (क्षमाशीलता) : जिसके भीतर दूसरों की भूलों को सहने, सहर्ष क्षमा करने का धैर्य और अपार सामर्थ्य है।

3. दीनता (भक्ति व समर्पण) : अपने आराध्य, गुरु और प्रभु के प्रति अनन्य श्रद्धा, निष्कपटता और समर्पण का सहज भाव।

4. आदर भाव (शिष्टाचार) : जो समाज में बिना किसी भेदभाव के सभी के साथ आदर, सम्मान और मधुरता का व्यवहार करता है।

C. आकृति नहीं, 'प्रकृति' से बनती है महानता :

संस्कृत सूक्ति का संदर्भ : आचार्य श्री ने फरमाया कि दुनिया में कोई भी मनुष्य अपनी आकृति (चेहरे या शरीर) से नीच या महान नहीं होता, बल्कि अपनी प्रकृति (स्वभाव व आचरण) से ही महान या नीच बनता है।



'योग सत्य से क्या मिलेगा?' विषय पर आचार्यश्री की ओजस्वी देशना

'कठिनाइयां चाहे जितनी आएं, पर अंततः विजय सत्य की ही होती है' —आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप के CPS ट्रेनर कॉन्क्लेव क्षितिज 3.0 का हुआ भव्य आयोजन

लाडनूं।
24 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में आगम और अध्यात्म का महाप्रवाह अनवरत प्रवाहित हो रहा है। पूज्य प्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित विषय 'योग सत्य से क्या मिलेगा?' पर आगम आधारित विस्तृत अमृत देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

आत्मा और शरीर: जीवन के दो मूल तत्त्व और त्रियोग की व्यापक प्रवृत्तियां :

1. जीवन के दो आधार तत्त्व: प्रवचन के आरंभ में पूज्य आचार्यश्री ने जीवन के दार्शनिक यथार्थ को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि हमारे संपूर्ण अस्तित्व में केवल दो ही मूल तत्त्व हैं—एक 'आत्मा' और दूसरा 'शरीर'। इन दोनों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। इन दोनों की संयुक्त अवस्था (संयुक्ति) के परिणामस्वरूप ही यह भौतिक शरीर सक्रिय रहता है, वाणी बोलती है, मन विचार करता है तथा प्राण और पर्याप्तियां संचालित होती हैं।

2. त्रियोग की निरंतर सक्रियता: आत्मा और शरीर की सहयोगी अवस्था में ही 'योग' का अस्तित्व होता है। शरीर की प्रवृत्ति, वाणी की प्रवृत्ति और मन की प्रवृत्ति—इन तीनों का होना ही योग है। मनुष्य जीवन में निरंतर इनकी प्रवृत्तियां चलती रहती हैं।

3. मन, वचन और काय का विस्तार : आचार्यश्री ने समझाया कि साधु जब विहार करता है, तब चलते समय भी उसके मन में अनेकानेक विचार आ सकते हैं। भोजन करते समय या विश्राम (सोते समय) करते समय भी मन में विचार श्रृंखला चलती रहती है। मनुष्य के मन में कभी तनाव, चिंता या भय के भाव भी आ जाते हैं। इसी प्रकार, वाणी की प्रवृत्ति किसी से संवाद करने या अकेले में जप-स्वाध्याय करने के रूप में होती है। शरीर की प्रवृत्तियां दो प्रकार की होती हैं—पहली, शरीर के भीतर आंतरिक तंत्र में स्वतः चलने वाली सहज प्रवृत्ति और दूसरी, मनुष्य द्वारा प्रयत्नपूर्वक की जाने वाली प्रयत्नजन्य प्रवृत्ति। इस प्रकार काय योग, वचन योग और मनोयोग सदैव हमारे साथ रहते हैं।

योग सत्य: मन, वचन और काय की सच्चाई और उसका प्रतिफल :

शेष पृष्ठ 20 पर...



The Art of Presentation: Acharya Mahashraman Ji's Divine Insights on CPS

प्रस्तुतीकरण की कला ही ज्ञान को असरदार बनाती है... आचार्यश्री महाश्रमण जी ने CPS (Confidence Public Speaking Course) के संदर्भ में फरमाया यह पावन बोध!

A. प्रस्तुतीकरण का महत्व और 'खारी/कड़वी दवा' का दृष्टांत :

1. ज्ञान और प्रस्तुति का अंतर : आचार्य श्री ने सीपीएस के संदर्भ में स्पष्ट किया कि ज्ञान का होना एक पक्ष है, लेकिन उसे किस कला और तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, वही उस ज्ञान के वास्तविक प्रभाव को तय करता है।

2. माध्यम का चयन : 'शुगर कोटेड' (चीनी चढ़ी हुई) खारी/कड़वी दवा का उदाहरण देते हुए समझाया कि जैसे इस दवा को बच्चे के लिए सुलभ बनाने हेतु मीठा आवरण दिया जाता है, वैसे ही कठिन सिद्धांतों को भी श्रोताओं की समझ और क्षमता के अनुसार सरल व आकर्षक माध्यमों में ढालकर प्रस्तुत करना चाहिए।

B. आचार्य भिक्षु का ऐतिहासिक दृष्टांत और तार्किक संवाद :

1. भ्रांति का प्रसंग : आचार्य श्री ने आचार्य भिक्षु के प्रसंग का उल्लेख किया कि कैसे एक महिला संतों को पानी 'बहराने' (दान देने) से इस तर्क के साथ मना कर रही थी कि वह पानी अस्वच्छ या गंदा है, और यदि वह ऐसा जल देगी तो अगले जन्म में उसे भी वैसा ही फल मिलेगा।

2. तार्किक संवाद और पानी बहराना : आचार्य भिक्षु ने उस महिला को बहुत ही सरल तरीके से समझाया— 'जैसे गाय को घास-फूस खिलाने पर वह पौष्टिक दूध देती है।' यहाँ देना कुछ और है (घास) और पाना कुछ और (दूध) है। आचार्य प्रवर ने बताया कि इस सटीक और तार्किक संवाद से उस महिला की भ्रांति ऐसी टूटी कि उसने तुरंत अपनी गलती स्वीकार की और सहर्ष संतों को पानी बहराया (दान दिया)!

C. CPS का मूल उद्देश्य और स्वाध्याय :

1. बात रखने की कला : आचार्य श्री ने CPS के संदर्भ में समझाया कि यही प्रस्तुतीकरण की कला वक्ता को सीखनी चाहिए, ताकि सही उदाहरणों से वह दूसरों की उलझन दूर कर सके।

2. स्वाध्याय और अनुभव का मेल : उन्होंने बल दिया कि केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है; व्यक्तिगत स्वाध्याय के साथ स्वयं का अनुभव जुड़ने से वक्ता की वाणी में प्रामाणिकता और गहराई आती है।



एक झूठ छिपायो नी सौ झूठ गले पड़ जावसी... जाणो 'किमपाक फल' रो ओ अणछूयो भेद!

दिखने में मनमोहक और खाने में विषैला 'किमपाक फल' जैसा होता है झूठ का प्रलोभन... एक बार फँसे तो जिंदगी भर उलझनों का चक्रव्यूह बन जाता है।

'किमपाक फल' का दृष्टांत और झूठ का आकर्षक प्रलोभन :

पूज्य आचार्यश्री ने झूठ और सत्य के मार्ग के अंतर को समझाने के लिए अत्यंत सुंदर और सटीक उदाहरण दिया:

1. किमपाक फल का रहस्य : आचार्य श्री ने 'किमपाक फल' (एक ऐसा जहरीला फल जो बाहर से देखने में बेहद सुंदर, आकर्षक और स्वादिष्ट प्रतीत होता है) का दृष्टांत दिया।

2. तात्कालिक सुख, दीर्घकालिक पतन: जिस प्रकार वह सुंदर फल खाने में भले ही एक क्षण के लिए अच्छा लगे, किंतु भीतर जाकर भयंकर परिणाम देता है; ठीक वैसे ही संकट से बचने या तात्कालिक लाभ पाने के लिए लिया गया झूठ का सहारा भी पहली बार में आसान लग सकता है, पर उसका अंत हानिकारक ही होता है।

झूठ का उलझा हुआ जाल और मानसिक भार :

1. झूठ पर झूठ की श्रृंखला : आचार्य श्री ने समझाया कि झूठ बोलने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे एक ऐसे अंतहीन जाल में फँस जाता है, जहाँ एक झूठ को छिपाने के लिए उसे बार-बार सौ नए झूठ बोलने पड़ते हैं।

2. पाप की गांठे : यह पूरी प्रक्रिया व्यक्ति के भीतर मानसिक तनाव और 'पाप की गांठें' (मानसिक भार) पैदा करती है।

3. विश्वास का संकट : निरंतर झूठ का सहारा लेने से व्यक्ति समाज और अपनों के बीच अपना दीर्घकालिक विश्वास हमेशा के लिए खो बैठता है।

सत्य का सीधा, सरल और तनावमुक्त मार्ग :

1. पारदर्शिता और सुगमता : इसके विपरीत, सत्य का मार्ग हमेशा सीधा, सरल और स्पष्ट होता है।

2. स्मरण रखने की झंझट से मुक्ति : सत्य बोलने वाले व्यक्ति को कभी यह ताना-बाना बुनने या यह याद रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती कि 'मैंने पिछली बार क्या कहा था' या 'अब अगला झूठ क्या बोलना है'।

3. आंतरिक शांति : सत्य एक ही होता है, इसलिए वह जीवन को पूरी तरह पारदर्शी, हल्का और तनावमुक्त बनाता है।

संपादकीय संदेश :

'झूठ एक ऐसा कर्ज है जो ब्याज सहित मानसिक शांति को लील जाता है, जबकि सत्य की पूंजी भले ही छोटी लगे, पर वह जीवन को हमेशा सिर ऊँचा करके जीने का संबल देती है।'

गहणां सूं कोनी, इण 3 बातां सूं चमके आत्मा! जाणो पूज्य प्रवर सूं साचो श्रृंगार

बाहरी गहने और चंदन का लेप तो क्षणिक हैं... आत्मा को वास्तविक सौंदर्य और आंतरिक शांति देने वाले आभूषण कौन से हैं? पूज्य प्रवर का पावन बोध!

जीवन के वास्तविक आभूषण : श्लोक का पावन भावार्थ :

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि बाहरी आभूषणों की तुलना में आंतरिक गुण ही व्यक्ति के सच्चे आभूषण हैं:

1. कान की शोभा (श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन) : कानों की असली शोभा स्वर्ण-कुंडल पहनने से नहीं, बल्कि सत्संग, ज्ञान और पूज्य संतों की वाणी सुनने से होती है।

2. हाथ की शोभा (दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन) : हाथों का वास्तविक सौंदर्य कंगन या सोने की अंगूठियाँ पहनने में नहीं, बल्कि दीन-दुखियों और जरूरतमंदों को दान देने में है।

3. शरीर की शोभा (गात्रं परोपकारैः न तु चन्दनेन) : शरीर की शोभा सुगंधित चंदन का लेप लगाने से नहीं, बल्कि करुणा भाव से परोपकार और सेवा के कार्य करने से होती है।

'गिविंग थेरेपी': दान केवल सहयोग नहीं, मन की शुद्धि का साधन :

आचार्य श्री ने 'दान' को एक आध्यात्मिक चिकित्सा (गिविंग थेरेपी) के रूप में निरूपित किया:

1. त्रिविध दान का महत्व : जरूरतमंदों की सहायता करना, संतों-साधुओं की सेवा करना, और दूसरों को ज्ञान का दान (शिक्षण एवं सही मार्गदर्शन) देना अत्यंत निर्जराकारी है।

2. निजी कल्याण और निर्जरा : दान देने से केवल पाने वाले का भला नहीं होता, बल्कि देने वाले की आत्मा से लोभ-कषाय घटता है, जिससे मन की शुद्धि और कर्मों की निर्जरा होती है।

3. आंतरिक निखार : जब व्यक्ति उदारतापूर्वक अपने ज्ञान, संसाधन और करुणा को बाँटता है, तो उसका आंतरिक सौंदर्य स्वयं कई गुना बढ़ जाता है।

परोपकार का व्यापक स्वरूप और जीवन का सच्चा श्रृंगार :

1. भौतिक सीमा से परे परोपकार : आचार्य श्री ने समझाया कि परोपकार केवल धन या वस्तुओं के दान तक सीमित नहीं है; समय, श्रम और भावों के माध्यम से की गई सेवा भी परोपकार है।

2. सच्चा श्रृंगार : बीमारों की सेवा करना, औषध पहुँचाना और संकट के समय दूसरों का संबल बनना ही मानव जीवन का सच्चा श्रृंगार है।

3. अंतिम संदेश : बाह्य आभूषण क्षणिक और नश्वर हैं, जबकि श्रवण (ज्ञान), दान और परोपकार ही ऐसे अक्षय आभूषण हैं जो आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करते हैं।



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

आचार्यश्री ने सुधर्मा सभा में समझाई मन की शुद्धि और 'मनोगुप्ता' की महिमा

प्रसन्न चित्त और उच्च मनोबल से हर कठिन परिस्थिति हो जाती है आसान—आचार्यश्री महाश्रमण

(पूज्य प्रवर ने ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर प्रदान की पावन प्रेरणा)



लाडनूं।
26 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में अध्यात्म, मानसिक स्वास्थ्य और ज्ञानशाला के सुदृढ़ीकरण को समर्पित एक अत्यंत प्रेरणादायक कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूज्य प्रवर ने अपनी अमृत देशना के अंतर्गत निर्धारित विषय 'मनोगुप्ता से क्या मिलेगा?' पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए जीवन में मन की शुद्धि, मनोबल और एकाग्रता के महत्व को समझाया।

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता :

1. मन का सुख-दुःख और प्रभाव : प्रवचन के आरंभ में आचार्यश्री ने फरमाया कि हमारे जीवन में मन का भी अपना अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मन कभी सुखी बन जाता है तो कभी दुःखी भी हो जाता है। जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य का महत्व है, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का भी अपना विशिष्ट स्थान है।

2. डिप्रेशन और मनोबल की स्थिति : यदि आदमी का शरीर ठीक है किंतु मन परेशान रहता है, डिप्रेशन या अवसाद जैसी स्थिति बन जाती है, तो यह एक गंभीर समस्या का रूप ले लेती है। इसके विपरीत, यदि मन प्रसन्न है और मनोबल अच्छा है, तो शरीर की कोई छोटी-मोटी गड़बड़ होने पर भी उसकी कोई खास परवाह नहीं होती। वहीं मनोबल कमजोर हो तो छोटी-छोटी समस्याएं भी व्यक्ति को अत्यधिक परेशान कर देती हैं।

> सामने वाले की बात सही प्रतीत होने पर भी केवल अपने पूर्वाग्रह या अहंकार के कारण अपनी बात का आग्रह रखना सर्वथा अनुचित है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

मनोगुप्ता और मनोकुलता का जीवन में व्यावहारिक प्रभाव :

1. सहज शांति और यात्रा का उदाहरण : शास्त्रों में 'मनोगुप्ता' की बात कही गई है, जो यह सिखाती है कि मन कैसे मजबूत और सहज शांति में रहे। शरीर से आदमी कोई अच्छा कार्य करना चाहता है तो साथ में मन का योग भी अनिवार्य रूप से चाहिए। उदाहरण देते हुए आचार्यश्री ने समझाया कि यदि मन अनुकूल और प्रसन्न है, तो व्यक्ति १५ किलोमीटर की यात्रा भी खुशी-खुशी तय करके लौट आता है, और यदि मन खिन्न हो तो मात्र दो किलोमीटर चलना भी कई बार भारी पड़ जाता है।

2. विहार और चिंतन की शक्ति: हमारे जीवन में मनोकुलता का बड़ा स्थान है कि हर स्थिति में मनोबल और मानसिक प्रसन्नता बनी रहे। चित्त में प्रसन्नता और शारीरिक अनुकूलता हो तो साधु-साध्वियां भी अच्छे ढंग से अपनी विहार यात्रा संपन्न कर सकते हैं। यदि चिंतन अच्छा हो तो कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी आसानी से पार पाया जा सकता है।

'मनोगुप्ता से क्या मिलेगा?' — एकाग्रता और अशुभ संकल्पों से रक्षा :

1. एकाग्रता की प्राप्ति : 'मनोगुप्ता से क्या मिलेगा?' इस प्रश्न का समाधान करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि मनोगुप्ता के अभ्यास से एकाग्रता को प्राप्त किया जा सकता है। एकाग्रचित्त वाला जीव अशुभ संकल्पों से अपने मन की रक्षा करने वाला बन जाता है।

शेष पृष्ठ 12 पर...

मन रो घोड़ो दुष्ट है या कुलीन? जाणो आतम-शांति री असली चाबी!

पूज्य प्रवर ने अपने पावन प्रवचन में मन की गहराइयों को टटोलते हुए एक ऐसा अचूक मार्ग बताया है, जो मनुष्य को बाहर भटकने के बजाय उसके भीतर ही आनंद का झरना (स्रोत) दिखा देता है :

A. मन की निर्मलता: आनंद का असली स्रोत :

1. भीतर ही है सुख : आचार्य श्री ने स्पष्ट फरमाया कि यदि मनुष्य अपने मन को निर्मल और विकारों से पूरी तरह मुक्त कर ले, तो उसे दुनिया में कहीं और आनंद खोजने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी; आनंद स्वयं उसके भीतर से प्रस्फुटित होने लगेगा।

2. पावन पंक्तियाँ : मन की शुद्धि के इस महामंत्र को इन सुंदर पंक्तियों से समझाया गया—

'मन निर्मलता को प्राप्त करो,
आनंद स्वयं मिल जाएगा।'
'समता सरिता में स्नान करो,
जीवन उपवन खिल जाएगा।'

अर्थ: इसका सीधा अर्थ है कि 'समता' (समानता और शांति) की पवित्र नदी में अपने विचारों और भावों को डुबकी दिलाने से यह जीवन रूपी उपवन हमेशा के लिए खुशियों से महक उठता है।

B. मन की दो मुख्य बीमारियाँ: चंचलता और मलिनता :

प्रवचन में बहुत ही वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टि से समझाया गया है कि मन मूल रूप से दो बड़ी समस्याओं से ग्रस्त रहता है:

1. चंचलता : इसका गहरा संबंध 'योग' आश्रव से है, जिसके कारण मन लगातार भटकता रहता है।

2. मलिनता : इसका संबंध 'कषाय' (यानी क्रोध, मान, माया और लोभ) से है, जो मन को गंदा और भारी बना देते हैं।

C. समाधान : दुष्ट अश्व से कुलीन अश्व तक की यात्रा :

1. मन रूपी घोड़ा: आचार्य श्री ने मन को एक 'अश्व' (घोड़े) की संज्ञा दी है। यदि यह अनियंत्रित हो, तो दुष्ट अश्व की तरह जीवन को गड्ढे में गिरा देता है।

2. साधना की लगाम: यदि सही प्रशिक्षण, संयम और साधना के माध्यम से इन दोनों समस्याओं (चंचलता और मलिनता) पर नियंत्रण पा लिया जाए, तो यही मन का 'घोड़ा' एक 'कुलीन अश्व' बनकर सही दिशा में लंबी छलांग लगाने लगता है।

साधना में बाधा आते ही क्या कर बैठते हैं लोग? जानें सही राह!

A. विकृति और संस्कृति का अंतर:

1. मन का भटकना : आचार्य श्री ने समझाया कि जप, ध्यान या सामायिक करते समय कई बार मन में अनावश्यक, व्यर्थ या 'गंदे' विचार (विकृतियाँ) आ सकते हैं।

2. गलत निर्णय से बचाव : ऐसी स्थिति में साधक को कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि 'अब मुझसे यह नहीं होगा और मैं माला फेरना या सामायिक करना ही छोड़ देता हूँ।' साधना स्वयं में संस्कृति है, और विकारों को हावी नहीं होने देना चाहिए।

B. व्यावहारिक दृष्टांत : कपड़े और जूँ का रहस्य :

1. सटीक उदाहरण : आचार्य श्री ने एक अत्यंत सुंदर और व्यावहारिक उदाहरण देते हुए समझाया— 'जैसे वस्त्र (कपड़े) में जूँ पड़ जाने पर हम पूरा कपड़ा फेंक नहीं देते, बल्कि केवल जूँ को ही चुनकर अलग करते हैं।'

2. कर्तव्य : ठीक इसी प्रकार, जप-साधना को छोड़ने के बजाय हमें केवल मन में उठने वाले उन बुरे विचारों (विकृति) को ही बाहर निकालने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

C. साधना की निरंतरता और सजगता :

1. अधीरता से बचें : विकृत विचारों के कारण कभी भी अधीर या निराश नहीं होना चाहिए और न ही अपनी नियमित साधना को बंद करना चाहिए।

2. पुनः वापसी : यदि जप या ध्यान के दौरान मन भटक भी जाए, तो जैसे ही अपनी भूल का भान हो, बिना समय गँवाए मन को पुनः अपने जप या ध्येय पर केंद्रित कर लेना ही सच्ची साधना है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ



अध्यात्म, शिक्षा और शोध का वैश्विक केंद्र : जैन विश्व भारती, लाडनूं के रूप में आचार्य तुलसी का महा-अवदान!

जन–जन के भाग्यविधाता थे : आचार्य श्री तुलसी

● मुनि कमल कुमार ●

आचार्य श्री तुलसी एक दूरदर्शी, महान चिंतक व साधना के शिखर पुरुष थे! बाल्यावस्था में ही वे तेजस्वी, यशस्वी व अनुशासित थे। इसी कारण मात्र 11 वर्ष की अवस्था में तेरापंथ धर्म संघ के अष्टम आचार्य परम पूज्य कालुगणी के कर-कमलों से दीक्षित होकर अध्ययन की गहराई में उतरे। उसी का सुपरिणाम था कि 16 वर्ष की अल्पायु में आप एक कुशल शिक्षक बन गए। आपके द्वारा दर्शाए पथ पर चलने वाले अनेक संत विद्वान बने, जिनके द्वारा लिखित साहित्य पढ़कर लोग बाग-बाग हो जाते हैं।

इससे बढ़कर भी बता सकते हैं कि आप तो मात्र 22 वर्ष की अवस्था में आचार्य बने और आपके कठोर अनुशासन में रहने वाले मुनि नथमलजी आपके कुशल उत्तराधिकारी बने, जिन्हें लोग विवेकानंद समझते थे। मुनि नथमलजी का साहित्य व वक्तव्य सुनकर दिग्गज लोग भी सहज नतमस्तक हो जाते हैं। तेरापंथ धर्म संघ में आप नवमाचार्य थे। आपने अपने दीर्घ चिंतन और साधना से धर्म संघ को नए-नए आयामों से सजा दिया। आज जो इस संघ का इतना वर्चस्व बढ़ा है, जैन-अजैन सबके लिए आकर्षण का केंद्र बना है, यह सब गुरुदेव श्री तुलसी की दूरदर्शिता का ही परिणाम है।

A. साहित्य सृजन और धर्म संघ का अभूतपूर्व विकास :

जिस धर्म संघ में साध्वियों का साहित्य देखने में नहीं आता था, उस धर्म संघ में साध्वियाँ और श्रमणणियाँ ही नहीं, आज तो श्राविकाएँ भी साहित्याकार, लेखक व वक्ता बनी हैं।

1. आगमों का प्रकाशन : आठ आचार्यों तक किसी तरह का साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ था, आज धर्म संघ में आगम भी प्रकाशित हो चुके हैं।

> **'जिसने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को पहचानकर परंपरा की पूर्ण सुरक्षा के साथ संघ को नए आयाम दिए, वही युगदृष्टा आचार्य कहलाता है।'**

2. विशाल साहित्य संपदा : अणुव्रत साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, इतिहास साहित्य के साथ तत्वज्ञान गद्य-पद्य में प्रचुर साहित्य प्रकाशित हुआ है।

3. आस्था का परिवर्तन : युगानुकूल भाषा में प्रकाशित होने के कारण यह साहित्य जन-आस्था को बढ़ाने वाला साबित हुआ है। कई लोग अकारण ही द्वेष भावना से भरे हुए थे, परंतु ज्यों-ज्यों उन्होंने साहित्य पढ़ा, उनकी आस्था बदल गई और द्वेष भावना भक्ति भावना में परिणत हो गई।

B. कुरीतियों का उन्मूलन और समाज का कायाकल्प :

आचार्य श्री तुलसी एक क्रांतिकारी आचार्य थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने में जो श्रम किया, उससे समाज स्वस्थ, मस्त व विश्वस्त बना है।

1. कुप्रथाओं का परिहार : छुआछूत, दहेज प्रथा ही नहीं, बालविवाह व मृत्युभोज का जिस प्रकार परिहार हुआ है, उससे लगता है कि समाज का सारा कायाकल्प हो गया है।

2. संगठनात्मक सशक्तिकरण : समय-समय पर कई संगठन बनाए, जिससे समाज के प्रत्येक व्यक्ति का उत्थान हुआ—कन्यामंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला, युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, समन श्रेणी, उपासक, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ, प्रेक्षाध्यान के प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएँ, जैन संस्कार विधि आदि इस प्रकार के संगठन बनाकर समाज को सक्षम बना दिया।

3. दूरदर्शी नेतृत्व और आचार्य पद का ऐतिहासिक विसर्जन :

आचार्य श्री तुलसी प्रथम आचार्य कहे जा सकते हैं, जिनका शासनकाल तेरापंथ में सब आचार्यों से अधिक रहा। गुरुदेव ने देश-प्रदेश की यात्राएँ कर श्रावक-श्राविकाओं को संस्कारवान बनाया। जीवन के नवें दशक तक आप धर्मसंघ के विकास के लिए तत्पर रहते थे।

हमें प्रसन्नता है कि हमें एक ऊर्जावान, ज्ञानवान व समय की नब्ज को पहचानने वाले आचार्य मिले, जिन्होंने द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव को समझकर मूल की पूर्ण सुरक्षा करके नए-नए प्रयोगों से धर्मसंघ को गति प्रदान की है। इसे युग ही नहीं, शताब्दियों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

पद का विसर्जन : आचार्य पद का विसर्जन पद-लिप्सित युग के लिए एक अनोखी प्रेरणा है।

योग्य उत्तराधिकारी : आचार्य श्री महाश्रमण जी भी उनकी गहरी सूझबूझ से ही हमें प्राप्त हुए हैं। हम आचार्य श्री की दृष्टि का पालन कर अपने आपको धन्य बना सकते हैं।

दिव्य पुरुष 'तुलसी'

● शासन श्री साध्वी संघमित्रा ●

घणी दुर्लभ मिनखाजुणरी
इं भौतिक देह मां विराजमान
विराट व्यक्तित्व रो धणी
दिव्य पुरुष ₹तुलसी₹
भानुड़ै सो भलकतो पलपलाट करतो
उन्नत भाल
कनक कचौले-सी बड़ी-बड़ी चमकती
अमिय भरी आंख्या
बाला स्यू घणा ओपता अलबेला कान
मुलकतो मुस्करातो गुलाबी मुखड़ो
वाणी में मिसरी सो मिठास
जको भी पहुंच ज्यातो बी दर
हो जातो निहाल
जिण री सांसां मानवता री राह माथै
भेंटणो चढ़गी
जिण रै जीवन रो खिण-खिण पल-पल
पुरुषार्थ और पराक्रम रो
पर्याय बणग्यो
वो कण्ठ और कलम रो धणी हो
बीं रै मुख स्यूं निकलयोड़ा
अनमोल बोल, अंधियारी गलिया में
भूल्या भटक्या पथिका रे वास्ते
दिया सा चसग्या
जिण रे कलम री नौंक स्यूं
लिख्योड़ा आखर-आखर
काल रे भाल माथै अमिट चिह्न बणग्या
जुग पर जुग बीत ज्यावैला
पण बी दिव्य पुरुष रा पद चिह्नां ने
काल री सघन परता भी
नहीं मिटा पावैला
वी रै कंठा स्यूं गायेड़ा सुरां ने
जन-जन बार-बार गावैला
आप-आपरा सुर साथै मिलावैला
अमर बणग्या लोह पुरुष रा
मानव री भलाई खातिर
करया अणगिनत काम
बीं आत्मजयी और कालजयी पुरुष रै
पगल्या मां म्हारो श्रद्धा सिकत
भाव भरयो भेंटणो
कोड़ा कोड़ प्रणाम ॥

ज्ञानशाला : आचार्य तुलसी का युग को संस्कारमय अवदान

● बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमार ●

A. संस्कार का महत्त्व और दूरदर्शिता :

किसी भी समाज का भविष्य उसकी भावी पीढ़ी के संस्कारों में आकार लेता है। ज्ञान, कौशल और उपलब्धियाँ व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने का अवसर देती हैं, किंतु उसके व्यक्तित्व को सही दिशा देने का कार्य संस्कार करते हैं। इसी दृष्टि से ज्ञानशाला तेरापंथ धर्मसंघ का एक महत्त्वपूर्ण संस्कारपरक उपक्रम है। ज्ञानशाला की परिकल्पना के मूल में युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की दूरदर्शिता और युगीन आवश्यकताओं को पहचानने वाली दृष्टि रही है। आचार्यश्री तुलसी केवल अपने समय की चुनौतियों का समाधान खोजने वाले आचार्य नहीं थे, अपितु आने वाले समय की संभावनाओं और आवश्यकताओं को भी पहचानने वाले युगद्रष्टा थे। उन्होंने अनुभव किया कि धर्मसंघ की भावी पीढ़ी को संस्कारित करना है, तो बालावस्था से ही उसके जीवन में धर्म, दर्शन और नैतिकता का सहज समावेश करना होगा। childhood (बचपन) वह अवस्था है, जब मन कोमल होता है और ग्रहणशीलता प्रखर होती है।

B. ज्ञानशाला का स्वरूप और संस्कारी व्यक्तित्व का निर्माण : आचार्यश्री तुलसी ने बच्चों के शुभ भविष्य को ध्यान में रखकर ज्ञानशाला को महत्त्वपूर्ण स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि इस प्रकार के प्रयासों की परंपरा पहले से विद्यमान थी, किंतु वर्ष 1991 में इसे व्यवस्थित रूप में प्रारंभ किया गया। 5 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को केंद्र में रखकर विकसित यह उपक्रम केवल धार्मिक जानकारी देने तक सीमित नहीं है।

1. मूल उद्देश्य : बालमन में जैन दर्शन के सिद्धांतों को इस प्रकार पिरोना कि अहिंसा, संयम, सहिष्णुता, अनुशासन और नैतिकता उनके व्यक्तित्व की सहज अभिव्यक्ति बनें।

2. विवेक-दृष्टि का विकास : धर्म का वास्तविक प्रभाव तभी प्रकट होता है, जब वह जीवन में उतरता है। ज्ञानशाला बालकों को केवल यह नहीं बताती कि क्या उचित है, बल्कि उनके भीतर उचित-अनुचित को समझने की विवेक-दृष्टि विकसित करती है। इसका लक्ष्य ज्ञानी बालक के साथ-साथ संस्कारी, विवेकशील और संवेदनशील व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

C. आचार्य परंपरा का मार्गदर्शन और संगठित प्रयास :

ज्ञानशाला को वास्तविक शक्ति तेरापंथ की आचार्य परंपरा से प्राप्त हुई है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन और पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद से यह उपक्रम निरंतर विस्तार पा रहा है।

1. आध्यात्मिक नेतृत्व : आचार्य प्रवर ने मुनि श्री सुमेरमलजी (मंत्री मुनि) को इसका आध्यात्मिक प्रभारी नियुक्त किया। उनके मार्गदर्शन में ज्ञानशाला के विकास को दिशा मिली।

2. मुनिश्री का संस्मरण : मुनिश्री सुमेरमलजी के साथ मुझे (मुनिश्री उदित कुमारजी) सहप्रभारी के रूप में नियुक्त किया गया; बाद में आचार्यश्री महाश्रमणजी की आज्ञा से आध्यात्मिक पर्यवेक्षक का दायित्व निभाते हुए इसके विकास में निरंतर जुड़ने का अवसर मिल रहा है। ३. साझा प्रयासः आज ज्ञानशाला प्रशिक्षकों का श्रम, अभिभावकों का विश्वास, तेरापंथी महासभा का संगठनात्मक प्रयास और आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलकर इसे एक जन-आंदोलन का रूप दे रहे हैं।

D. उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला :

ज्ञानशाला का वास्तविक मूल्यांकन उसके केंद्रों या विद्यार्थियों की संख्या से ही नहीं, बल्कि उन जीवन-मूल्यों से होगा, जो बच्चों के व्यक्तित्व में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित होते हैं। जब बालमन में संयम संवेदना बनती है, संस्कार स्वभाव बनता है और धर्म जीवन जीने की दृष्टि बन जाता है, तभी संस्कार निर्माण की प्रक्रिया सार्थक होती है। ज्ञानशाला केवल एक शैक्षिक उपक्रम नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण की आध्यात्मिक कार्यशाला है। आचार्यश्री तुलसी ने संस्कारित पीढ़ी का जो स्वप्न देखा, वह आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण में निरंतर पुष्पित-पल्लवित हो रहा है। यही इस महान अवदान की सार्थकता है और यही इसके उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है।



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026

आचार्य श्री तुलसी : केवल एक नाम नहीं, परिवर्तन का तूफान

(Acharya Shri Tulsi: Not Just a Name, A Storm of Transformation)

● मुनि काव्य कुमार ●

प्रस्तावना : एक युगद्रष्टा का व्यक्तित्व :

कल्पना कीजिए! एक ऐसा व्यक्तित्व, जिसके सामने प्रशंसा आए तो वह अहंकारी न बने, विरोध आए तो वह विचलित न हो, और सर्वोच्च पद मिले तो वह उसे पहचान का बंधन न बनने दे। वह व्यक्तित्व थे—युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी।

> **घटनाएँ इतिहास बनाती हैं, लेकिन गुण व्यक्तित्व बनाते हैं। उपलब्धियाँ लोगों को प्रभावित करती हैं, लेकिन व्यक्तित्व की विशेषताएँ पीढ़ियों को प्रेरित करती हैं।**

आचार्यश्री को समझने के लिए केवल यह जानना पर्याप्त नहीं कि उन्होंने कब दीक्षा ली या कब अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। इन ऐतिहासिक घटनाओं से भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि उनके पीछे कौन-सी मानसिक शक्ति, कार्यशैली और जीवन-मूल्य सक्रिय थे। आज की युवा पीढ़ी को भी ऐसे ही गुणों की आवश्यकता है। उनके जीवन से जुड़े सात प्रमुख सूत्र—Vision, Discipline, Courage, Consistency, Empathy, Innovation और Humility—आज भी हमारे लिए उतने ही प्रासंगिक हैं।

1. VISION (दृष्टि): वर्तमान से आगे देखने की क्षमता :

साधारण व्यक्ति वही देखता है, जो सामने होता है; दूरदर्शी वह देखता है, जिसके आने की संभावना है। आचार्य तुलसी ने केवल अपने समय की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया, बल्कि समाज को नैतिक रूप से सशक्त बनाने की दीर्घकालिक सोच रखी। अणुव्रत आंदोलन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसने नैतिकता को व्यावहारिक जीवन से जोड़ा।

आज के युवाओं के लिए लक्ष्य की स्पष्टता और सही दिशा उतनी ही जरूरी है जितनी मेहनत। Vision का अर्थ केवल सपने देखना नहीं, बल्कि उन्हें साकार करने की स्पष्ट सोच विकसित करना है।

2. DISCIPLINE (अनुशासन): स्वयं पर शासन की शक्ति :

आचार्यश्री के जीवन में अनुशासन, गंभीरता और संयम की प्रमुख भूमिका थी। अनुशासन का अर्थ केवल समय का पाबंद होना नहीं, बल्कि अपने मन, आदतों और प्रतिक्रियाओं को विवेकपूर्ण दिशा देना है।

आज डिजिटल भटकाव और एकाग्रता की कमी के दौर में नियमित अभ्यास और समय का सदुपयोग अत्यंत आवश्यक है।

अनुशासन जीवन को सीमित नहीं करता, बल्कि उसकी संभावनाओं को विकसित करता है। अपने ऊपर नियंत्रण के बिना क्षमताओं का पूरा उपयोग संभव नहीं है।

3. COURAGE (साहस): विरोध के बीच सही दिशा में खड़े रहना :

साहस का अर्थ केवल शारीरिक शक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक कुरीतियों (जैसे छुआछूत, दहेज, नशा) के विरुद्ध आवाज उठाने और अपने मूल्यों पर टिके रहने का सामर्थ्य है। आचार्यश्री ने सामाजिक सुधार के लिए निरंतर संवाद और धैर्य का मार्ग अपनाया।

सच्चा साहस बिना सोचे विरोध करना नहीं, बल्कि तथ्यों को समझकर उचित निर्णय लेना और न्याय के पक्ष में खड़ा होना है।

4. CONSISTENCY (निरंतरता): साधारण प्रयास को असाधारण बनाना :

आचार्यश्री ने अपने जीवन में लगभग 62,000 मील की पदयात्राएं कीं। यह उनकी अटूट कर्मठता और निरंतरता का प्रमाण है।

प्रेरणा शुरुआत कराती है, लेकिन निरंतरता आगे बढ़ाती है।

सफलता किसी एक दिन के बड़े प्रयास से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे कदमों के नियमित अभ्यास से मिलती है। अपने प्रयास को ऐसी आदत बनाइए जो आपको लगातार आगे बढ़ाती रहे।

5. EMPATHY (संवेदनशीलता) : दूसरों को समझने की क्षमता :

आचार्यश्री के जनसंपर्क और संवाद का आधार उनकी संवेदनशीलता थी। Empathy का अर्थ केवल दया करना नहीं, बल्कि दूसरे की परिस्थिति और दृष्टिकोण को ईमानदारी से समझना है।

आज के दौर में सुनने की क्षमता और मानवीय सम्मान को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है।

यह गुण न केवल व्यक्तिगत संबंधों को बेहतर बनाता है, बल्कि नेतृत्व को भी प्रभावशाली बनाता है।

6. INNOVATION (नवीनता): मूल्यों के साथ नए रास्ते खोजना :

आचार्यश्री ने परंपरा और नवीनता के बीच सुंदर समन्वय स्थापित किया। अणुव्रत आंदोलन, जैन विश्व भारती का विकास और समण श्रेणी की स्थापना उनके नवीन प्रयोगों को दर्शाती है।

Innovation का अर्थ केवल तकनीक नहीं, बल्कि किसी समस्या का बेहतर समाधान खोजना है।

मूल्यों के प्रति निष्ठा रखते हुए परिस्थितियों के अनुसार कार्यपद्धति को बेहतर बनाना ही सच्ची नवीनता है।

7. HUMILITY (विनम्रता): ऊँचाई पर पहुँचकर भी जमीन से जुड़े रहना :

किसी व्यक्ति की वास्तविक परीक्षा तब होती है, जब उसके पास अधिकार और प्रतिष्ठा होती है। सन् 1994 में आचार्यश्री ने आचार्य पद का विसर्जन कर आचार्य महाप्रज्ञ को नेतृत्व सौंपा, जो पद के प्रति उनकी अनासक्ति का अनूठा उदाहरण है।

विनम्रता का अर्थ कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी सीमाओं के प्रति सजग रहना है।

सफलता व्यक्ति को ऊँचा उठा सकती है, लेकिन विनम्रता उसे दूसरों के लिए प्रेरणादायी बनाती है।

निष्कर्ष : ये सात गुण—Vision, Discipline, Courage, Consistency, Empathy, Innovation और Humility—एक संपूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

युगप्रभावी आचार्य श्री तुलसी के जीवन से प्रेरणा लेकर यदि हम अपने समय, आदतों और सोच को व्यवस्थित कर सकें, तो हमारे जीवन में भी सार्थक परिवर्तन आ सकता है। प्रश्न यह नहीं है कि उनके जीवन में क्या हुआ, बल्कि यह है कि हम उनके आदर्शों को अपने दैनिक जीवन में कितना उतार पाते हैं।

उतरा द्वितीया का चाँद घरा पर

● शासनश्री साध्वी सुमनश्री ●

उतरा द्वितीया का चाँद घरा पर मधुर-मधुर मुस्काया था।
नई रोशनी लेकर के श्री तुलसी जग में आया था।।

जय-जय गुरुवरं, जय-जय गुरुवर होऽऽऽ ॥आं।

तेजस्वी नयनों में तेरे भिक्षु का तेज झलकता था।
कोमलता करुणा में मानों मघवा सा रूप छलकता था।
गलती पर देने डांट वहीं, डालिम सा पोज दिखाया था।।1।।

अनुशास्ता का रूप प्रखर श्री जय की याद दिलाता था।
श्री कालू की कमनीय कला करुणा के कमल खिलाता था।
फिर भारीमाल ऋषिराय और, माणक सा रूप समाया था।।2।।

ज्ञान भक्ति और कर्म योग का तुम में अद्‌भुत संगम था।
कंचन सी कोमल काया में फौलादी सीना अनुपम था।
मेरु सी मजबूती ने तो, अद्‌भुत इतिहास रचाया था।।3।।

सचमुच ही महाप्राण थे तुम कितने अभियान चलाये थे।
जीवन के हर चौराहे पर जागृति के दीप जलाये थे।
हे शिखर पुरुष ! तुमने तो, तेरापथ को शिखर चढ़ाया था ॥4।।

तुम चले गये तेरी यादें रह-रह कर सबको आती है।
सांझ सवेरे तुलसी-तुलसी सांसे संगीत सुनाती है।
गूंज रही अमृत वाणी, जागृति का गीत सुनाया था।।5।।

तर्ज : है प्रीत जहां की रीत यहाँ.....

अनुत्तर योगी, दिव्य प्रकाशी परम प्रयोगी...

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

1. परमार्थ गुणों से मंडित,
पंडित प्रभुवर जीवन गंगा धारा।
समता, क्षमता, पवित्रता
अद्भुत संगम था मनहारा।
जिनके ज्योतिर्मय जीवन से,
जन-जन में उजियाला छाया।।
इसलिए तुम हो प्रणम्य प्रणेता।

2. पारदर्शी परख निराली,
हे गण नायक, हे सत्यदर्शी।
अनुत्तर योगी, दिव्य प्रकाशी,
परम प्रयोगी, हे सूक्ष्मदर्शी।
कर्ता, धर्ता भाग्य विधाता,
मंगलकारक हे ब्रह्म ऋषि।।
इसलिए तुम हो प्रणम्य प्रचेता ।

3. राग-द्वेष से मुक्ति पाकर,
बने अमल-धवल अविकारी।
तत्वचिंतक आत्म गवेषी,
निश्चल साधक प्रज्ञा निराली।
आनंद के नील गगन में
अलौकिक आभा अतिशय धारी।।
इसलिए तुम हो प्रणम्य नेता ।

4. अन्तस्तल में अवगाहन कर,
अन्तर का दीप जलाया।
भास्कर आस्था वलय में,
अभय का आलय बनाया।
तुम्हारी चरण-शरण में आकर
सुख-शांति स्रोत बहाया।।
इसलिए तुम हो प्रणम्य नेता।



छोटे संकल्प, बड़ी क्रांति : अणुव्रत के आलोक से नशामुक्त समाज का शंखनाद!

आचार्य तुलसी का 'अणुव्रत': सेल्फ-मास्टरी से सुपर-सक्सेस का युवा रोडमैप

● मुनि जिनेशकुमार ●

युगदृष्टा आचार्य तुलसी :

जो प्रमाद की नींद में सोता है, उसके लिए हर समय कलियुग है। जो अंगड़ाई लेकर जगने का प्रयास करता है उसके लिए द्वापर युग है, जो आगे बढ़ने के लिए तत्पर है उसके लिए त्रेतायुग है और जो लक्ष्य की ओर निरंतर प्रवर्धमान है उसके लिए सतयुग है। आचार्य तुलसी ने समाज में व्याप्त दहेज, घूंघट प्रथा, मृत्युभोज व दिखावे जैसी कुरीतियों पर कड़े प्रहार करने के साथ नारी उत्थान और समाज की उन्नति के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए। साध्वी समाज को शिक्षित करने के साथ उन्होंने अज्ञान के अंधकार में डूबे समाज को प्रकाश का मार्ग दिखाया। देश के नैतिक उन्नयन एवं चारित्रिक विकास के लिए उन्होंने १ मार्च १९४९ को सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक, गरीब की झोपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक करीब साठ हजार किलोमीटर की पदयात्रा कर लाखों लोगों के हृदय में नैतिकता की अलख जगाई।

1. जीवन वृत्त और असाधारण उपलब्धियाँ:

आचार्यश्री तुलसी का जन्म राजस्थान के लाडनूं में वि.सं. १९७१ कार्तिक शुक्ला द्वितीया को माता वदनाजी एवं पिता झूमरमलजी खटेड़ के यहाँ हुआ (नौ भाई-बहनों में आठवें)।

दीक्षा और युवाचार्य पद : ११ वर्ष की लघुवय में अष्टमाचार्य श्री कालूगणी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण की।

प्रमुख योगदानः आचार्य बनने के बाद सर्वप्रथम साध्वियों को शिक्षित किया। तत्पश्चात् वि.सं. २००५ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। आगम संपादन और 'नयामोड़' समाज सुधार उनकी विशिष्ट देन हैं।

उनके मानवतावादी कार्यों से प्रभावित होकर युगप्रधान पद, भारत ज्योति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार, हकीम खाँ सुर सम्मान जैसे महनीय अलंकरण उनके चरणों में स्वयं सम्मानित हुए। आचार्य पद का विसर्जन उनके अनुपम आत्मविश्वास का परिचायक है।

2. व्यक्तित्व के विविध आयाम :

आचार्यश्री तुलसी विकास के शलाका पुरुष, अध्यात्म के शिखर पुरुष, ज्ञान के हिमालय और जैन परंपरा के तेजस्वी आचार्य थे। महिला जागरण, कला, संस्कृति और साहित्य को जीवंत दिशा देने वाले उनका जीवन श्रम, साहस, संघर्ष, स्पंदन एवं सोच—इन पाँच सकारों का समवाय था।

मात्र ३४ वर्ष की उम्र में चारित्रिक उत्थान के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रमाण है।

3. अणुव्रत के ग्यारह नियम :

अणुव्रत मानवमात्र के लिए श्रेष्ठ जीवन जीने की आचार संहिता (छोटे-छोटे नियम) हैः

–प्राणी रक्षा : निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध, आत्महत्या और भ्रूण हत्या नहीं करूंगा।

–अहिंसा एवं शांति : आक्रमण और आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा; विश्व-शांति व निःशस्त्रीकरण का प्रयत्न करूंगा।

–हिंसा निषेध : हिंसक एवं तोड़-फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

–मानवीय एकता : जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को उच्च/निम्न या अस्पृश्य नहीं मानूंगा।

–धार्मिक सहिष्णुता : धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा और साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊंगा।

–व्यावसायिक प्रामाणिकता : व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा; छलपूर्ण व्यवहार से बचूंगा।

–संयम और सीमा : ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूंगा।

–राजनीतिक नैतिकता : चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।

–कुरीति विरोध : सामाजिक कुरीतियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।

–व्यसन मुक्ति : मादक तथा नशीले पदार्थों (शराब, गांजा, चरस, तंबाकू आदि) का सेवन नहीं करूंगा।

–पर्यावरण चेतना : हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा और पानी का अपव्यय नहीं करूंगा।

4. अणुव्रत का सार्वभौम स्वरूप और प्रेरणा:

अणुव्रत किसी संप्रदाय से अनुबंधित न होकर मानव मात्र के लिए है। इसके प्रमुख उद्घोष हैं:

–'इंसान - पहले इंसान फिर हिन्दू या मुसलमान'

–'संयम : खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है'

–'निज पर शासन - फिर अनुशासन'

अणुव्रत अध्यात्म की संजीविनी से युक्त एक नैतिक अभियान है। यह आज की अंधी दौड़ व विषाक्त वातावरण में सुरक्षा कवच और हृदय परिवर्तन का दर्शन है।

5. Support from National Leaders and Intellectuals:

इस आंदोलन में डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर देश के प्रायः सभी राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों का योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त जयप्रकाश नारायण, विनोबा भावे, दलाईलामा, जैनेन्द्र कुमार, महादेवी वर्मा, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जैसे प्रख्यात साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने सक्रिय सहयोग दिया है।

Conclusion:

वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण इसी अणुव्रत आंदोलन को नए आयाम दे रहे हैं। आचार्य तुलसी की नश्वर देह भले ही हमारे समक्ष नहीं है, पर उनका अमर उपदेश 'अणुव्रत', नयामोड़, प्रेक्षाध्यान और जन-जागरण जैसे आयाम सदियों तक मानवजाति का पथ आलोकित करते रहेंगे।

एक बार पुनः विश्व सन्त श्री तुलसी के जन्म दिवस 'अणुव्रत दिवस' पर उन्हें शत्-शत् नमन... शत्-शत् नमन... शत्-शत् नमन...

एक और आचार्य तुलसी चाहिए...

● मुनि मोहजीतकुमार ●

शलाका पुरुष और नैतिक क्रांति :

आचार्य तुलसी मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापकों में शलाका पुरुष थे। उन्होंने अपने आध्यात्मिक नेतृत्व, ऊर्जावान व्यक्तित्व और सृजनशील कर्तृत्व से युग को नई दिशा दी। सन् 1947 की आजादी के बाद उनके मन में एक चिंतन उभरा—जिसका सुपरिणाम केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि नैतिक और चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना था।

A. जनजागरण और अणुव्रत का प्रादुर्भाव :

–आचार्यश्री ने सामाजिक एवं व्यावहारिक चेतना को अपनी अनुभव की आँखों से देखकर जनजीवन को संबोध प्रदान किया।

–उन्होंने सर्वजन हिताय के भावों से भावित कुछ मौलिक कसौटियाँ प्रस्तुत कीं, जिनकी पराकाष्ठा 'अणुव्रत आंदोलन' के रूप में प्रकट हुई।

–यह आंदोलन केवल नियमों और संकल्पों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति को प्रवृत्ति से निवृत्ति, भोग से त्याग और असंयम से संयम की ओर बढ़ने का संकल्प दिलाया गया।

B. वर्तमान जीवनशैली और नैतिक क्षरण :

वर्तमान जीवनशैली में भौतिकता, असहिष्णुता, मानसिक और भावनात्मक तनाव, खान-पान का अशुद्धीकरण, उच्छृंखलता और चरित्रहीनता का तांडव परिवार, समाज और जनजीवन में मुखर है। जीवन मूल्यों के इस क्षरण का परिणाम अनाचार, अन्याय, भेद-भाव, घृणा, द्वेष, शत्रुता, ईर्ष्या और कुंठा के रूप में सामने आ रहा है।

विज्ञान और आंतरिक चेतनाः

–आज विज्ञान जगत ने मनुष्य को सुख-सुविधाओं और मनोरंजन के अनेकों साधनों के साथ कृत्रिम बुद्धि के प्रवाह को भी विकसित किया है, जो एक सीमा तक ही उपयोगी हैं।

> जग गया इंसान तो मौसम बदल कर ही रहेगा।
> जल गया है दीप तो अंधेरा ढल कर ही रहेगा॥

–भविष्य की उज्जवलता के लिए अतीत का सिंहावलोकन और अनागत की सुखद कल्पना अनिवार्य है।

–अप्रामाणिकता, अनाचार, कुत्सित सोच और स्वार्थी मनोव्यवहार के आवरण से सामाजिक एवं राष्ट्रीय क्रांति संभव नहीं है।

C. पारिवारिक क्रांति और वर्तमान समय की माँग :

वर्तमान युग की मानसिकता में बदलाव के लिए सामुदायिक सघन प्रयास की आवश्यकता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से प्रवचन, व्यक्तिगत प्रेरणा, प्रशिक्षण और प्रयोग के द्वारा व्यक्ति-व्यक्ति के भीतर जागरण का शंखनाद किया था।

पारिवारिक विघटन और समाधान :

–आज से पूर्व सामाजिक क्रांति का स्वर अधिक मुखर था, पर आज पारिवारिक क्रांति की आवश्यकता ज्यादा महसूस की जा रही है।

–परिवारों में आने वाली विकृतियाँ, हिंसा, असंयम, आपसी संबंधों में बिखराव, अर्थलोलुपता, अपरिमित आकांक्षाएँ और असहिष्णुता का जो स्वरूप नजर आ रहा है, ऐसे में आज फिर से एक और आचार्य तुलसी की आवश्यकता है, ताकि मानव की मानवता का भविष्य सुरम्य बन सके।

D. उपसंहार : आचार्य तुलसी का प्रत्यक्ष प्रवास :

मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए आचार्य तुलसी सा उल्लास चाहिए। मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए आचार्य तुलसी सा विश्वास चाहिए। मन, भाव और युग परिवर्तन की आश हमारे मन में पनपती रहे, इसके लिए—

मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए आचार्य तुलसी सा उल्लास चाहिए।

मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए आचार्य तुलसी सा विश्वास चाहिए।

मन, भाव और युग परिवर्तन की आश हमारे मन में पनपती रहे –

इसके लिए एक बार फिर आचार्य तुलसी का प्रत्यक्ष प्रवास चाहिए॥



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

वज्र-सा अनुशासन, सागर-सी करुणा : निज पर शासन से युग-सृजन के शिल्पी!

आचार्य तुलसी : सुधारवादी धर्म समन्वयक और युगपुरुष

● मुनि पुलकित कुमार ●

'तुम बिना ताज पहने भी
लाखों दिलों के सरताज थे,
निर्बल की शक्ति और
मानवता की मुखर आवाज थे।'

महापुरुष समय के साथ कुछ विशिष्ट कार्य करते हैं। उसका साक्षात उदाहरण हमें आचार्यश्री तुलसी के जीवन में देखने को मिलता है। उनके त्याग, चरित्र व पवित्रता का आभामण्डल इतना तेजस्वी था कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे निरपेक्ष व्यक्ति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे।

A. बहुमुखी व्यक्तित्व और आचरण शुद्धि के प्रणेता :

आचार्य तुलसी बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अध्यात्म और जन कल्याण के क्षेत्र में अपने शिष्य समुदाय को जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने व्यक्ति के आचरण शुद्धि पर विशेष बल दिया। इसके लिए उन्होंने अपने शिष्यों को प्रशिक्षण देकर सुदूर क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार के लिए भेजा।

आचार्यश्री की असाधारण स्मृतियाँ और कार्य :

1. अल्पावस्था में आचार्यपद : 10 वर्ष की अल्पावस्था में दीक्षित होकर उन्होंने गुरु का पूर्ण विश्वास अर्जित किया, जिससे 22 वर्ष की युवावस्था में उन्हें चतुर्विध धर्मसंघ का आचार्य बनाया गया।

2. विशाल पाण्डित्य : उन्हें संस्कृत-प्राकृत भाषा के 22 हजार पद्य (श्लोक) कंठस्थ थे। उन्होंने जैन आगम (साहित्य) के सम्पादन का दुस्सह कार्य शिष्य मंडली के सहयोग से प्रारंभ किया जो अभी भी गतिमान है।

B. सुधारवादी, उदारवादी तथा धर्म समन्वयक रूप :

वे जैन शासन के महाप्रतापी आचार्य थे। उन्होंने अपनी पहचान सुधारवादी, उदारवादी तथा धर्म समन्वयक आचार्य के रूप में बनाई।

1. सर्वधर्म समभाव : वे स्वयं चलकर मस्जिदों, मठों, चर्चों, गुरुद्वारों, हिंदू मंदिरों तथा जैन उपाश्रयों एवं विभिन्न धर्मस्थानों में जाते रहते थे।

2. अणुव्रत का जन-अभियान : अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उन्होंने पूरे भारत में पदयात्रा की। उन्होंने नशा मुक्ति का इतना प्रचार-प्रसार किया कि हजारों-लाखों लोगों ने व्यसन के विष-दरिये से छुटकारा पाया।

3. राष्ट्रीय एवं वैश्विक सम्मान: राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने दुनिया के 14 महापुरुषों पर अंग्रेजी भाषा में 'लिविंग विद पर्पज' (Living with Purpose) नामक पुस्तक लिखी, जिनमें से एक आचार्यश्री तुलसी भी थे। उन्हें वैश्विक शांति प्रयासों के लिए 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से भी विशेष सम्मानित किया गया।

C. 'नया मोड़' आंदोलन और विचारों का समन्वय : आचार्य तुलसी ने 'नया मोड़' आंदोलन के द्वारा समाज की अनेक कुरीतियों पर प्रहार किया। उन्होंने छोटे-छोटे नियम देकर जन-जीवन को प्रभावित किया और समाज को नई राह दिखाई।

युगबोध और संघ की रक्षाः तत्कालीन स्थितियों में जनता कुरीतियों में इतनी जकड़ी हुई थी कि कुछ नया सुनना व परिवर्तन करने की इच्छा मानो मृतप्रायः हो चुकी थी। ऐसे विकट समय में उन्होंने न केवल नया विचार जनता के गले उतारा, बल्कि तेरापंथ समाज को विखंडित होने से भी बचा लिया—समाज के दो टुकड़े नहीं होने दिए।

प्राचीन और नवीन का समन्वयः बैंगलोर में स्थानकवासी श्रमणसंघ के उपप्रवर्तक नरेश मुनिजी ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि आचार्य तुलसी ने जो नए और पुराने विचारों के बीच समन्वय स्थापित किया, वह हर किसी के वश की बात नहीं थी। उनकी विशेषता थी कि चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति का साकार रूप त्वरित गति से होता था।

D. शिक्षा, अनुशासन और सृजनशीलता के पर्याय :

आचार्य श्री तुलसी के मन में छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने और संस्कारित करने का विशेष उत्साह रहता था, इसलिए उन्होंने 'ज्ञानशाला' का उपक्रम चलाया। दूर देश-विदेश में धर्म प्रचार के लिए समण श्रेणी का निर्माण किया।

शासन और अनुशासन : आचार्य तुलसी संघीय परिप्रेक्ष्य में अनुशासन को विशेष महत्व देते थे। उनका प्रसिद्ध घोष वाक्य था— 'निज पर शासन—फिर अनुशासन'। वे कहते थे कि 'मैं मेरे शिष्यों को अपने से अधिक योग्य, गुणवान और प्रतिभावान देखना चाहता हूँ।'

अध्यात्म और विज्ञान का संगमः आचार्यश्री तुलसी शिष्यों में अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय देखना चाहते थे, इसलिए 'योगक्षेम वर्ष' की न केवल परिकल्पना की बल्कि उसका साकार रूप भी दिखाया।

वैश्विक विस्तारः आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ को सात समंदर पार पहुँचाकर जैनों का नेतृत्व करने वाला बना दिया।

निष्कर्ष :

आज वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी और युवाचार्य श्री महावीर के रूप में उसी यशस्वी परंपरा का पुनरावर्तन हो रहा है। ऐसे प्रखर व्यक्तित्व के धनी का जीवन गुणों का भंडार था। उनके लिए कवि की यह पंक्ति बिल्कुल सटीक बैठती है—

'तुम बिना ताज पहने भी
लाखों दिलों के सरताज थे,
निर्बल की शक्ति और
मानवता की मुखर आवाज थे।'

अनुशासन के अप्रतिहत प्रणेता : आचार्य तुलसी और उनका निर्माण-शिल्प

● साध्वी काव्यलता ●

1. बाल-मुनियों के निर्माता और 'तुलसी पाठशाला'

प्राचीन धर्मग्रंथों में कहा है— 'जो स्वयं पर अनुशासन करना जानता है, वही दूसरे पर अनुशासन करने में सफल हो सकता है।'

आचार्य तुलसी ने 'निज पर शासन फिर अनुशासन' का केवल नारा ही नहीं दिया, स्वयं वैसा करके औरों को प्रेरित किया और अनुशासन की अद्भुत कला सिखाई! आचार्य तुलसी के अनुशासन की कथा अपने आप में अनुकरणीय और संघ विकास की धरोहर है।

मात्र ग्यारह वर्ष की अल्प वय में उन्होंने अष्टम आचार्य श्री कालूगणी के चरणों में कठोर संन्यास का मार्ग स्वीकार किया। अपने आराध्य के विश्वास को जीता, उसी की फलश्रुति है कि पूज्य कालूगणी ने मात्र 16 वर्ष की उम्र में मुनि तुलसी को बाल मुनियों के अध्यापन का कार्य सौंप दिया। इस शाला को 'तुलसी पाठशाला' के नाम से प्रसिद्धि मिली।

2. अनुशासन की अनूठी मिसाल और कोमल-कठोर शिक्षण शैली :

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आपके अनुशासन में कोमलता के साथ कठोरता भी थी। जिस समय आपकी पाठशाला में बाल मुनि नथमलजी और मुनि मुदितजी अध्ययन करते थे, दोनों अध्ययन करते-सीखते-सीखते हंसने लग जाते, तो विद्यागुरु मुनि तुलसी कभी कड़ा अनुशासन करते—कभी विषय-वर्जन, कभी खड़े-खड़े स्वाध्याय। इस प्रकार कुछ दंड देकर उन्हें सजगता का सुंदर प्रेरणामय पाठ पढ़ाते!

मुनि तुलसी को प्रसन्न करना सरल नहीं था। एक समय गुरुकुल वास में एक नया माहौल बना; छोटे-छोटे संत व्याख्यान, गीतों एवं दोहे-पद्य की डायरियां बनाने लगे, ताकि जब बाहर विचरण करेंगे तो उपयोगी बनेंगी। अपने साथियों को डायरी बनाते जब बाल मुनि नत्थू (मुनि नथमलजी) ने देखा, तो उन्होंने भी डायरी बनानी शुरू कर दी। जब मुनि तुलसी को दिखाई, तो उन्होंने मना किया कि 'डायरी की तुम्हें आवश्यकता नहीं है', क्योंकि मुनि तुलसी, मुनि नत्थू को स्वयं के पास रखकर अपने हाथों से निर्मित करना चाहते थे।

पर बाल मुनि नथमलजी समझे नहीं। उनके बाल-हठ ने मुनि श्री को नाराज कर दिया। यह नाराजगी देखकर मुनि नथमलजी रात्रि के समय दो घंटे चरण पकड़ कर बैठ गए और तब तक बैठे रहे जब तक कि मुनि तुलसी प्रसन्न नहीं हुए।

यह था महाप्रज्ञ (यानी मुनि नत्थू) का गुरु के प्रति अद्भुत समर्पण! आपने इस श्लोक को चरितार्थ कर दिखाया :

अप्रसन्नो गुरुर्भूयात् किञ्चित् कारण मासाद्य।
प्रसन्नो कुरु कुरुतां शिष्यो नम्र-वाक्य-निवेदनात्॥

जब मुनि तुलसी कंठस्थ करने का फरमाते, तो अकृपा के कारण बाल मुनि को एक दिन में दो श्लोक भी सीखने में कठिनाई होती। उस समय मुनि तुलसी स्वयं पास बैठकर आधा-आधा श्लोक उनको रटाते। ऐसा करते-करते मुनि नथमलजी ने ऐसी छलांग लगाई कि एक दिन में 100 श्लोकों की रचना करने की क्षमता अर्जित कर ली! यह तुलसी के निर्माण की कला थी, तो मुनि नत्थू का अहम-रहित समर्पण!

3. सृजन और अनुशासन के विविध आयाम :

अतीत के झरोखे में झांकने से लगा कि तुलसी ने केवल वात्सल्य ही नहीं, कठोर अनुशासन का नया पाठ पढ़ाकर जीवन को नई दिशा का मार्ग प्रशस्त किया। बात उस समय की है जब पूज्य श्री कालूगणराज का पदाभिषेक दिवस था। मुनि नथमलजी के विद्यागुरु होने के नाते मुनि श्री तुलसी ने एक सुंदर छंद बनाकर दिया। विद्वत्तापूर्ण और गंभीरतापूर्ण छंद बाल मुनि नथमल को पसंद नहीं आया और उनका मुख उदास हो गया।

मुनि तुलसी बाल मुनि की मानसिकता समझ गए और तत्काल कठोर अनुशासन का प्रयोग करते हुए कहा— 'आज से तुम्हारे लिए कोई श्लोक, पद्य नहीं बनाऊंगा, तुम स्वयं बनाना'। आश्चर्य तब होता है जब बाल मुनि ने तुलसी के कठोर अनुशासन को विनम्रता से स्वीकार किया। बाल मुनि ने गुरु की दृष्टि को समझा और सृजन क्षेत्र में विकास करने लगे।

नए-नए प्रयोगों से मुनि मुदित का निर्माण :

इसी प्रकार बाल मुनि मुदित की क्षमताओं को पहचाना और उन्हें समय-समय पर सामने लाते गए। अपने पास शयन करवाना, ईर्यासमिति/पंचसमिति के लिए पानी लेकर अनुगामी बनकर चलना, तत्त्व-चर्चा आदि के प्रसंग में संतों की परिषद में मुनि मुदित से प्रश्न पूछना, किसी विषय पर विवेचन करवाना आदि कार्य करवाते थे।

उदयपुर मर्यादा महोत्सव के भव्य समारोह में आचार्य महाप्रज्ञजी के सचिव व सलाहकार के रूप में निर्दिष्ट कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। प्रथम 'योगक्षेम वर्ष' के अवसर पर दो नये पदों की सर्जना की, उसमें मुनि मुदित को 'महाश्रमण' पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

इतना ही नहीं, पूरी परिषद में घोषणा की— 'आगे का कार्य महाप्रज्ञजी करेंगे'। समय-समय पर उन पर मेहर-नजर करते हुए उन्हें कहते— 'ऊपर जाकर भी तुम्हारा ध्यान रखूंगा'!

आचार्य तुलसी की शिल्प-कला का ही परिणाम है कि आज आचार्यश्री महाश्रमणजी, गुरुदेव तुलसी के वचनों को साकार कर रहे हैं।

निष्कर्ष और कृतज्ञता :

शुभ भविष्य है सामने :

परम पूज्य गुरुदेव की निर्माण-कला को व्याख्यायित कर सकें, ऐसा हमारे शब्दों में सामर्थ्य नहीं है। कवि के शब्दों में :

सब धरती कागद करूं,
लेखन सब बन राय।
सात समंदर स्याहि करूं,
पर गुरु गुण लिखा न जाय॥



नारी शक्ति का पावन उत्थान : अखिल भारतीय महिला मंडल से आचार्य तुलसी का युगपरिवर्तक अवदान!

प्रकाश पुंज आचार्य तुलसी : सकारात्मकता, सृजन, ऊर्जा और कर्मठता के अमर प्रतीक

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

'पुण्यों की खान तुलसी,
मुस्कान मन की तुलसी,
वीणा की तान तुलसी,
शासन की शान तुलसी।
आस्था की आन तुलसी,
जिनवाणी प्राण तुलसी,
मर्यादा मान तुलसी,
शिव संविधान तुलसी।'

1. Positive Vision: विधायक सोच और सफलता का रहस्य :

एक जननायक, एक महानायक, एक राष्ट्र उन्नायक, एक सत्य संगायक, एक महान विचारक, एक समाज सुधारक, और एक विश्व संत आचार्य श्री तुलसी की सफलता का मुख्य रहस्य उनकी विधायक सोच (Positive Attitude) रही है। इसी सकारात्मक दृष्टि के बल पर गुरुदेव तुलसी देश और दुनिया पर एकछत्र राज करते रहे।

आइंस्टीन से जब एक छात्र ने सफलता का राज पूछा, तो उन्होंने कहा—'तिरस्कार में भी मैंने हौसला कभी नहीं छोड़ा। मेरी सफलता का रहस्य है—हिम्मत नहीं हारना, निराश नहीं होना, विश्वास के साथ अभ्यास करना।'

'हारे नहीं हैं हौसले,
तब कम हुए हैं फासलें।'
'काम करने के लिए मौसम नहीं,
मन चाहिए।'

आचार्य श्री तुलसी हर बड़े योगदान में हमेशा प्रथम पंक्ति में परिलक्षित होते थे। उनके प्रमुख ऐतिहासिक और सेवा प्रकल्प इस प्रकार हैं : अग्रणी आयामः अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान, समणश्रेणी, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, जैन विश्व भारती University, महासभा और तेयुप महिला मंडल।

महनीय सम्मान व वर्षः युगप्रधान अलंकरण, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, वाक्पति Award, हकीम खाँ सूरी पुरस्कार, अनुशासन-संयम-प्रेक्षा-स्वाध्याय वर्ष, प्रज्ञापर्व भिक्षु चेतना वर्ष, कालूजन्म शताब्दी और वीर शताब्दी आदि।

विशिष्ट निर्णय : आगम संपादन, आचार्य पद का विसर्जन और महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर मनोनयन जैसे दुर्लभ दस्तावेज उनके अद्वितीय विजन को दर्शाते हैं।

2. Creative Vision : युग की तकदीर और तस्वीर बदलने वाले महापुरुष :

'कोई उन्हें अमीर कहता, कोई उन्हें फकीर कहता, मगर हकीकत यह है—यह राष्ट्र उन्हें युग की तकदीर कहता।'

युग की तकदीर और तस्वीर बदलने वे संसद भवन, प्रधानमंत्री निवास, राष्ट्रपति भवन और गरीबों की झुग्गियों तक पधारे। पूछने पर वे फरमाते—'मैं सबसे पहले एक मानव हूँ, जैन हूँ, फिर जैनाचार्य हूँ। मेरा ध्येय है—कोई व्यक्ति जैन बने या न बने, पर Good Man अवश्य बने।'

उनके राष्ट्रव्यापी और वैचारिक योगदान के मुख्य बिंदु :

–Man को superman बनाने वाले अणुव्रत अनुशास्ता ने राजीव-लोंगोवाल वार्तालाप और संसद गतिरोध को दूर करने में अहम् भूमिका निभाई।

–प्रथम विश्वयुद्ध के समय विश्वशांति का संदेश दिया और राष्ट्रीय एकता परिषद में सम्मानित हुए।

–डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक 'Living with Purpose' में उनके जीवनवृत्त को स्थान दिया, और 'तुलसी वाङ्मय' की 108 पुस्तकों की सीरिज़ उनके अनमोल विचारों का महासंग्रहालय है।

3. Energetic Vision: करिश्माई व्यक्तित्व और Loving :

करिश्माई व्यक्तित्व के दर्शन पाकर नयन निहाल हो जाते। आचार्य श्री तुलसी एक 'Talented Personality' के धनी थे। उन्होंने 'Unique Dreams' से देश और समाज का नक्शा बदला और अपनी 'Loving Leadership' से सबको मैत्री, करुणा और संयम का संदेश दिया।

वैश्विक स्वीकार्यता : कोई इन्हें आर्य सुधर्मा और जम्बू कहता, तो कोई आगम वाचना का देवर्द्धिगणि या कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र।

दार्शनिक झलक : उनकी छवि में दुनिया ने लेनिन, कान्ट, अरस्तू और सुकरात को देखा। उनके हर पहलू में बुद्ध की करुणा, ईसा का प्रेम, गांधी का सत्याग्रह और महावीर का अहिंसा दर्शन झलकता था।

4. Active Vision: जीवंत कर्मठता और योगक्षेम वर्ष :

गुरुदेव की कर्मठता उनके हर कदम पर दिखाई देती थी। छोटी उम्र में दीक्षा लेना, आचार्य बनना, पाठशाला का अध्यापक और मॉनिटर बनना उनके Active Vision का परिचायक है। उन्होंने संघ को एक उज्ज्वल वर्तमान और भविष्य दिया।

योगक्षेम वर्ष की महत्ताः योगक्षेम वर्ष युगपुरुष के मस्तिष्क का अद्भुत उपहार था, जिसमें साधु-साध्वियों को अध्यात्म और विज्ञान का प्रायोगिक प्रशिक्षण मिला।

वर्तमान का संदर्भ : 2026 का योगक्षेम वर्ष आचार्य श्री महाश्रमण एवं युवाचार्य श्री महावीर के पावन सान्निध्य में धर्मसंघ को नवोन्मेष प्रदान कर रहा है। संपूर्ण मानव जाति को हर्ष है कि तेरापंथ शासन योगक्षेम वर्ष से पंचामृत की साधना का लाभ ले रहा है।

महामानव को वंदन है! पुण्यपुंज को वंदन है!
वदना नंदन तुलसी को नमन
कालू कुंदन तुलसी को नमन
नैतिक मूल्यों के प्रणेता को नमन
नई सदी के महापुरुष को नमन
वंदना-नंदन तुलसी को शत्-शत् सादर वंदन है!

नैतिक क्रांति के सूत्रधार आचार्य तुलसी

● डॉ. साध्वी ऋद्धियशा ●

प्रस्तावनाः कलापूर्ण जीवन और धर्म का स्वरूप :

आचार्य श्री तुलसी ने व्यवहार बोध में लिखा है—

'सभी कलाएँ हैं विकलाएँ, पंडित सभी अपंडित हैं। नहीं जानते कैसे जीना, केवल महिमामंडित हैं।'

जीवन सभी जीते हैं, अच्छे से अच्छे स्टैंडर्ड का जीवन जीते हैं, पर वह सब व्यर्थ है यदि कलापूर्ण जीवन जीना नहीं आया। कलापूर्ण जीवन जीने का तरीका है धर्म। धर्म के दो रूप हैं :

1. उपासनात्मक धर्म : सबकी अपनी-अपनी उपासना पद्धति और उपयोगिता है।

2. चारित्रात्मक धर्म : चारित्रात्मक (नैतिक) धर्म के अभाव में उपासना केवल एक विडंबना बनकर रह जाती है। इसके अभाव में व्यक्ति के साथ-साथ समाज भी पिछड़ जाता है।

A. अणुव्रतः आंतरिक विकास की नैतिक क्रांति :

समाज को ऊपर उठाने के लिए समय-समय पर अनेक क्रांतियाँ हुईं, किंतु वे सब लगभग बाह्य विकास के लिए थीं। आंतरिक विकास के लिए कोई क्रांति नहीं हुई। आचार्य श्री तुलसी ने इसकी आवश्यकता महसूस की और एक महान नैतिक क्रांति (Moral Movement) का सूत्रपात किया, जिसे हम 'अणुव्रत' के रूप में जानते हैं।

1. समय के मूल्य की प्रासंगिकता : कहा जाता है — 'जो समय के मूल्य को समझता है, समय उसे अनमोल बना देता है।' आज अन्य क्रांतियाँ जहाँ मौन और इतिहास का विषय बन चुकी हैं, वहीं अणुव्रत आज भी अपनी प्रासंगिकता के साथ मुखर है।

2. असंयम और संग्रह की समस्या : आचार्यश्री ने अनुभव किया कि समाज में असंयम और संग्रह की मनोवृत्ति बढ़ती जा रही है। नदी और सागर के संवाद की तरह—संग्रहवृत्ति ही जीवन के मधुर जल को खारा बनाती है।

3. मूल उद्घोष : अणुव्रत का मूल उद्घोष है —'संयमः खलु जीवनम्' (संयम ही जीवन है), यही इसके आज भी प्रासंगिक बने रहने का मुख्य कारण है।

B. अदम्य आत्मविश्वास और असाधारण अवदान :

धार्मिक जगत् के इतिहास में यह अद्वितीय दस्तावेज़ है कि आचार्य तुलसी एक संप्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे। उनका चिंतन था कि मानव में श्रेष्ठता के गुण बढ़ें ताकि राष्ट्र का नैतिक व चरित्र बल सुदृढ़ हो।

1. आत्मविश्वास की शक्ति : आचार्यश्री ने जो भी कार्य किए, वे जादू की छड़ी से नहीं बल्कि अपने प्रबल आत्मविश्वास के बल पर किए।

2. बाधाओं को अवसर बनाना : उनके जीवन का दृष्टिकोण इस अंग्रेजी पंक्ति से चरितार्थ होता है —

'On the path of life always lie big 'O's! Many read them as obstacles, only few read them as opportunities.'

सभी संघर्षों और विरोधों को अवसर मानकर वे अपने सकारात्मक चिंतन और दृढ़ आत्मविश्वास के साथ सदैव आगे बढ़ते रहे।

उपसंहार : श्रद्धांजलि :

अतुल साहसी आचार्य श्री तुलसी के अवदान इतने विराट हैं कि उनके लिए यही कहा जा सकता है —

'उसके काम अगणित
उनकी लीलाएं अगणित
उसके आगे व्यर्थ हो जाते हैं
सारे गणित॥'

उनके जन्मोत्सव पर उस परम पुण्यात्मा और दिव्यात्मा के चरणों में अनंतानंत हार्दिक श्रद्धांजलि!

हे वदनानंदन तुलसी गुरुराज

● शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम) श्री डूंगरगढ़ ●

हे वदनानंदन तुलसी गुरुराज
भारत भूमंडल को है तुम पर नाज।।

मेरे लिए तुम्हीं हो राम-घनश्याम
महामहिम महा पुंज तुम्हीं हो महावीर स्वाम।।

मेरे जीवन के आप ही हो आधार
तुम्हीं हो नाव केवट और पतवार।।

किन शब्दों में करूँ गुरुवर तुमरा वर्णन
दिव्य जीवन दिव्य दर्शन को मेरा नमन।।

आपकी कृपा से मैं हो गयी निहाल
दूर कर दिए मेरे आल-जंजाल।।

निश्चिंत हो गयी मैं यह शासन पाकर
विकास करूँ ऐसा दो मुझे आशीर्वर।।

गुरुवर आए मानवता की तकदीर बनकर
अनगिन अवदानों से बन गए ज्योतिर्धर।।

अणुव्रत है नैतिक मूल्यों का अभियान
विश्व में डंका बजा रहा यह अरमान।।

प्रेक्षाध्यान की साधना का क्या कहना
यह है आध्यात्मिक वैज्ञानिक सपना।।

महिला समाज का किया अद्भुत उद्धार
प्रगति का दिया उसे नया संसार।।

साध्वी परिवार पर है असीम उपकार
दीक्षा महोत्सव की बेला में नमन बार हजार



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026

योगक्षेम वर्ष : दूरदृष्टि, उपलब्धि और संरक्षण का युगीन महाअभियान– तुलसी से महाश्रमण तक

● मुनि अभिजीतकुमार ●

A. परिकल्पना का प्रादुर्भाव और युगीन दूरदृष्टि :

कई आयोजन सामयिक होते हैं, किन्तु कुछ विरल आयोजन ऐसे होते हैं, जो समय को नई दिशा देते हैं, इतिहास को नया आयाम देते हैं और भविष्य की संभावनाओं का सृजन करते हैं। 'योगक्षेम वर्ष' एक ऐसी ही युगान्तकारी परिकल्पना है, जिसके प्रणेता थे युगद्रष्टा, गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी। एक ऐसा व्यक्तित्व, जिसने मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में संयम-पथ स्वीकार किया और बाईस वर्ष की युवा अवस्था में सम्पूर्ण धर्मसंघ के नेतृत्व का गुरुतर दायित्व संभाला।

यह अपने आप में चिंतन का विषय है कि जिस उम्र में सामान्य युवा अपने भविष्य की दिशा खोजता है, उस उम्र में आचार्य तुलसी सम्पूर्ण धर्मसंघ के भविष्य को दिशा दे रहे थे। उनके पास न भौतिक संसाधनों का संचय था, न आर्थिक साम्राज्य, न आधुनिक विश्वविद्यालयों की उपाधियाँ। किन्तु उनके पास थी चिंतन की समृद्धि, अनुभव की गहराई, नेतृत्व की क्षमता और भविष्य को पढ़ने वाली विलक्षण दूरदृष्टि।

इसी दूरदृष्टि की एक अनुपम अभिव्यक्ति थी सन् 1989 में लाडनूं की पुण्यधरा पर आयोजित 'योगक्षेम वर्ष'।

सहयोगी मनीषा और योजना निर्माणः

1. वैचारिक मार्गदर्शन : इस महत्त्वपूर्ण आयोजना मेंः तत्कालीन युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी की प्रज्ञा, वैचारिक मार्गदर्शन और आध्यात्मिक मनीषा ने विशेष भूमिका निभाई।

2. परियोजना एवं कैलेंडर निर्माण : तत्कालीन मुनि मुदितकुमारजी (वर्तमान में आचार्यप्रवर महाश्रमणजी) तथा आगम मनीषी मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी ने इसकी परियोजना पर अपनी विलक्षण प्रतिभा से कैलेंडर निर्माण किया।

3. व्यापक प्रशिक्षण : अनेक विद्वान साधु-साध्वीवृंद के माध्यम से प्रशिक्षण, अध्ययन, साधना और व्यक्तित्व-विकास की एक व्यापक प्रक्रिया को गति मिली।

B. योगक्षेम का दर्शनः उपलब्धि से संरक्षण तक :

यहाँ एक मौलिक प्रश्न उभरता है—आखिर इस विशिष्ट आयोजना का नाम 'योगक्षेम' ही क्यों रखा गया? श्रीमद्भगवद्गीता का प्रसिद्ध उद्घोष है—**'योगक्षेमं वहाम्यहम्।'**

1. योग (नवीन उपलब्धि) : योग अर्थात् अप्राप्त की प्राप्ति, नवीन उपलब्धि, नई संभावनाओं का अर्जन।

2. क्षेम (स्थायित्व व सुरक्षा) : क्षेम अर्थात् प्राप्त की सुरक्षा, अर्जित ज्ञान और उपलब्धियों का संरक्षण, संवर्धन एवं स्थायित्व।

आज सम्पूर्ण संसार योग की दौड़ में लगा है। व्यक्ति कुछ नया प्राप्त करना चाहता है—प्रतिष्ठा, पद, ज्ञान, शक्ति और सफलता अर्जित करना चाहता है। किन्तु जिसे प्राप्त हो गया, उसके मन में दूसरा भय जन्म लेता है—कहीं प्राप्त उपलब्धि नष्ट न हो जाए, कहीं अर्जित संपदा बिखर न जाए, कहीं स्थापित व्यवस्था कमजोर न पड़ जाए। यही योगक्षेम की विलक्षणता है—केवल नया प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं, प्राप्त को सुरक्षित, सार्थक और निरन्तर विकसित करना भी आवश्यक है। योग विकास की प्रक्रिया है, तो क्षेम विकास की निरन्तरता का आधार है। योग नवीन संभावनाओं का उद्घाटन है, तो क्षेम अर्जित क्षमताओं का संरक्षण और पुनर्जागरण है।

C. आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण :

आचार्य तुलसी ने इस सिद्धान्त को केवल आध्यात्मिक अवधारणा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक व्यापक प्रशिक्षण एवं व्यक्तित्व-विकास की प्रक्रिया का स्वरूप दिया। इसका महान लक्ष्य था—'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण'।

इसके पीछे आचार्य तुलसी की असाधारण दृष्टि थी।

1. विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय : जहाँ विज्ञान हमें साधन देता है, वहाँ अध्यात्म साधना उन साधनों के सदुपयोग की दिशा देती है।

2. आंतरिक एवं बाह्य विकास : विज्ञान बाह्य जगत की संभावनाओं को उद्घाटित करता है, अध्यात्म आन्तरिक चेतना की गहराइयों को प्रकाशित करता है। विज्ञान में शक्ति है, अध्यात्म में शान्ति है। दोनों का समन्वय ही संतुलित, समर्थ और संवेदनशील व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। यही योगक्षेम वर्ष की मूल आत्मा है।

D. प्राचीन आगमिक परम्परा से संबंध :

योगक्षेम की यह अवधारणा कोई अचानक जन्मा विचार नहीं, अपितु इसका सम्बन्ध प्राचीन आगमिक ज्ञान-परम्परा की गहराइयों से भी जुड़ा हुआ है। जैन आगमों का इतिहास वस्तुतः योग और क्षेम की एक अद्भुत यात्रा है। प्राचीन काल में ज्ञान का प्रवाह गुरु-शिष्य परम्परा से होता था। शिष्य की पात्रता, मेधा, स्मरणशक्ति, संयम-परिपक्वता और अध्ययन-क्षमता के अनुरूप गुरु द्वारा उसे आगमिक ज्ञान प्रदान किया जाता था। शिष्य जितना ज्ञान प्राप्त करता, उसका नियमित स्वाध्याय, आवर्तन और संरक्षण करता। अर्जित ज्ञान में परिपक्वता आने पर उसे अगले स्तर का ज्ञान प्रदान किया जाता।

> नया पाना ही काफी नहीं, जो मिला है उसे सुरक्षित और सार्थक बनाना ही सच्चे विकास की पहचान है—यही 'योगक्षेम' का अमर संदेश है।

E. आधुनिक युग में प्रासंगिकता और आचार्य महाश्रमण की नवदृष्टि :

आचार्य तुलसी की विलक्षणता यह थी कि उन्होंने इसी प्राचीन सिद्धान्त को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नया विस्तार दिया। उन्होंने सोचा कि धर्मसंघ की चारित्रात्माएँ केवल शास्त्रीय ज्ञान में समृद्ध न हों, बल्कि आधुनिक चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक समझ, अभिव्यक्ति-कौशल और युगीन समस्याओं के समाधान की क्षमता से भी संपन्न हों।

आज, लगभग छत्तीस वर्षों के पश्चात्, छत्तीस गुणों के धारक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की युगदर्शिता में पुनः इस महान परिकल्पना को नवीन आयाम प्राप्त हो रहा है। शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की भावनाओं और विशेष निवेदन से जुड़ी इस आयोजना को वर्तमान गुरुदेव ने व्यापक चिंतन और नवदृष्टि के साथ आगे बढ़ाया है।

समीक्षा और पुनरावलोकन का महत्त्व : वर्तमान योगक्षेम वर्ष की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रशिक्षण के साथ चिंतन, मंथन और तटस्थ समीक्षा को भी महत्त्व दिया जा रहा है। समीक्षा केवल ज्ञानपक्ष की नहीं, बल्कि क्रियापक्ष और संस्थापक्ष की भी :

–प्रश्न केवल यह नहीं कि हमने क्या सीखा? प्रश्न यह भी है कि हमने जो सीखा, उसे जीवन में कितना उतारा?

–हमारी संस्थाएँ किस दिशा में कार्य कर रही हैं? कौन-सी व्यवस्थाएँ समय के अनुरूप विकसित हो रही हैं और किन्हें परिष्कृत या परिवर्तित करने की आवश्यकता है?

F. दो ऐतिहासिक प्रसंग और स्वर्णिम उत्तराधिकार :

योगक्षेम वर्ष के दो ऐतिहासिक प्रसंग विशेष उल्लेखनीय हैं :

1. प्रथम योगक्षेम वर्ष : आचार्य तुलसी ने तत्कालीन मुनि मुदितकुमारजी को 'महाश्रमण' जैसे गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित किया। वही महान संत आज तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता के रूप में नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

2. वर्तमान योगक्षेम वर्ष : 27 जुलाई 2026 को आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी को युवाचार्य पद पर मनोनीत कर धर्मसंघ की उत्तराधिकार-परम्परा में एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। यह प्रसंग आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक संदर्भों से भी जुड़ा।

यह कितना अद्भुत संयोग है कि एक योगक्षेम वर्ष में भविष्य के महाश्रमण का विशिष्ट पद के रूप में अभ्युदय होता है और दूसरे योगक्षेम वर्ष में वर्तमान महाश्रमण अपने भावी उत्तराधिकारी का मनोनयन करते हैं। यही तो योगक्षेम है!

निष्कर्ष : 'अतीत की उपलब्धियों का संरक्षण और भविष्य की संभावनाओं का सृजन ही योगक्षेम की अमर प्रेरणा है।'

वास्तव में योगक्षेम वर्ष हमें एक महत्त्वपूर्ण संदेश देता है—जो प्राप्त नहीं है, उसे प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें। जो प्राप्त है, उसे सुरक्षित रखने की सजगता रखें। जो निष्क्रिय हो गया है, उसमें पुनः प्राण फूँकने का प्रयास करें। और जो गतिमान है, उसे अधिक प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने का चिंतन करें। आचार्य तुलसी ने जिस बीज का वपन किया, आचार्य महाप्रज्ञ ने जिसे अपनी प्रज्ञा से संपोषित किया, आज आचार्य महाश्रमण उसी को युगानुकूल नवीन आयाम प्रदान कर रहे हैं।

मुझे जगाया 'तुलसी' प्रभु ने...सौभाग्य का सूरज उगाया

● साध्वी विनम्रयशा ●

अष्टसंपदा जिनवाणी की
दीपित शोभित नवमासन में।
श्रद्धा भक्ति का गुलदस्ता
अर्पण करते पूज्य चरण में।।

1. साधना के शिखर पुरुष को
भाव भरा प्रणाम है।
तुलसी तुलसी ॐ जय तुलसी
जपते आठों याम हैं।
अष्ट सिद्धियाँ नौ निधियाँ
बसती वदना नन्दन में।।

2. अणुव्रतों का बिगुल बजाया
प्रेक्षा का जय ध्वज फहराया।
जीवन विज्ञान से भाग्य सजाया
नया मोड़ जग में छाया।
दिव्य फरिश्ता तुलसी गुरुवर
उतरा भिक्षु नन्दनवन में।।

3. कार्यकर्त्ता अनगिन बनाए
रत्नत्रयी से जग हरसाया।
सम्यक्त्व दीप कितने जलाए
पतितों के पावन कहलाए।
वाह वाह धन्य धरा सपूत
हम आए तुलसी शरण में।।

4. परमपुरुष ने मुझे जगाया
सौभाग्य का सूरज उगाया।
साध्वी बना वरदान दिराया
असीम उपकार छत्र छाया।
प्रकाशकुंज तेरा ही सब कुछ
गूँज रही ध्वनि कण कण में।।

5. जीवन पथ में हो उजियारा
आशीर्वाद दो गुरुवर प्यारा।
निर्मल निश्छल जीवनधारी
चमक उठे किस्मत सितारा।
अर्हम् आत्मा का अभ्युदय
करना मुझको गण शरण में।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ



तेरापंथ रा हा ताज,
जैन शासन रा सिरताज।

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी की प्रभावी सुदीर्घ यात्राएँ

● साध्वी राकेशकुमारी 'बायतु' ●

● मुनि कमल कुमार ●

तेरापंथ रा हा ताज,
जैन शासन रा सिरताज।
करग्या नैया पार,
करग्या नया पार।
म्हारै हिवड़ै रा हार,
म्हारै प्राणा रा आधार।
म्हारै तुलसी गुरु ने
करूं वंदन बार हजार॥ ध्रुव॥

मां वदना रा लाल
लाडनूं में जन्म पायो है।
लाल रो सुन जन्म
सब परिजन हर्षायो है।
झूमरमलजी रे छायो
मन हर्ष अपार॥ 1॥

छोटी सी उमर मांहीं
तज्यो है संसार ने।
धन्य-धन्य केवे सारा
मां वदना रे लाल ने।
कर गुरु सूं विनय
भर्यो ज्ञान रो भण्डार॥ 2॥

सोलह वर्षा री उमर में
बनग्या आप शिक्षक हो।
कालूगणी जोर का हा
निश्चित ही परीक्षक हो।
ढूंढ काढ्यो हीरो चन्देरी
स्यूं देख्यो जोरदार॥ 3॥

साल तेणमें गंगापुर में
भाद्रव तीज आई हो।
कालूगणी के देह में
व्याधि जोर खाई हो।
सोंप दियो तुलसी गुरु ने
सारो शासन भार॥ 4॥

बावीस वर्षा री वय में
आचारज पद पायो हो।
नीरख गुरु री सूरत सबरो
हिवड़ो हर्षायो हो।
माणण लाग गया सगला ही
आपरो आधार॥ 5॥

चौतीस वर्षा री वय में
अणू अभियान चलायो हो।
अणुव्रत रे माध्यम सूं
ही जग में नाम छायो हो।
होण लाग गयो
धूमधाम धर्म प्रचार॥ 6॥

देश प्रदेश धूम
करयो धर्म प्रचार हो।
सह्या घणां कष्ट
रायपुर चुरू बाजार हो।
बांरी हिम्मत रो के केणो
बांरी हिम्मत अपरम्पार॥ 7॥

निर्धन हो धनवान सबने
संयम पथ दिखलायों हो।
ज्ञान रूपी दान देकर
जीवन सफल बनायो हो।
गुण गाया दिल खोलकर
कमल कुमार॥ 8॥

A. जन-जागरण की महायात्रा और पाद-विहार :

'आचार्य श्री तुलसी महान परिव्राजक-पदयात्री थे।' जो प्राणवान होता है, वही परिभ्रमण करता है। वही प्राणवान योद्धा होता है। जैन मुनि पाद-विहारी होते हैं। उनके जीवन का एक व्रत होता है—पांव-पांव चलना।

–पाद-विहार के मुख्य लाभ :

–छोटे-बड़े सभी लोगों से मिलकर संवाद द्वारा सीधा संपर्क साधना।

–छोटी-बड़ी परिस्थितियों के साथ सहज भाव से सामंजस्य बिठाना।

–जनता में प्रत्यक्ष रूप से नैतिक मूल्यों और चेतना का संचार करना।

आचार्य श्री तुलसी की पदयात्रा विशेष उद्देश्य के साथ हुई। इसका मूल्यांकन करते हुए भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा था—'तुलसी पदयात्री हैं। समूचे देश में घूम-घूम कर व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के लिए कल्याणकारी काम कर रहे हैं। आप सरकार से न कोई मदद की मांग करते हैं और न ही कुछ लेते हैं। आपको सरकार की जरूरत नहीं है, बल्कि सरकार को आप जैसे त्यागी संन्यासी की जरूरत है।'

तीर्थों और शिक्षण संस्थानों की यात्राएं :

–राष्ट्रीय व ऐतिहासिक तीर्थः पंडित नेहरू के नए तीर्थ (माइथान, मयूराक्षी बांध, झुमरी तिलैया बांध), देवघर, प्रयाग, सारनाथ, बोधगया और नालंदा।

–धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र : कन्याकुमारी, स्वर्णमंदिर, दरगाह और चर्च।

–प्रमुख शिक्षण संस्थान : बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, शांति निकेतन, बड़ौदा संस्कृत विद्यालय, पूना भण्डारगार शोध संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, मद्रास, अन्नामलै, हिसार कृषि विश्वविद्यालय और जयपुर विश्वविद्यालय।

उनकी सबसे सुदीर्घ यात्रा 16 नवंबर 1959 को कलकत्ता से आरंभ हुई और 16 फरवरी 1960 को 1300 मील की पदयात्रा कर वे सरदार शहर (राजस्थान) पहुंचे। इसके बाद बम्बई यात्रा (3 महीनों में 600 मील) और कच्छ यात्रा का भी प्रभावी इतिहास रहा।

B. दक्षिण और कलकत्ता यात्रा के ऐतिहासिक प्रसंग :

दक्षिण यात्रा की शुरुआत बीदासर (राजस्थान) से हुई, जहाँ से गुजरात, महाराष्ट्र और आगे दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान हुआ। चेन्नई, बैंगलोर, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक की यात्रा के दौरान, जहाँ हिन्दी भाषा का प्रबल विरोध था, वहाँ सुब्रह्मण्यम् स्वामी अनुवादक के रूप में साथ रहे।

दिग्गज नेताओं के उद्गार:

–तमिलनाडु के मुख्यमंत्री (अन्नादुरै): 'तमिलनाडु आपका घर है, अपने ही घर में आपका स्वागत करते हुए हर्ष हो रहा है।'

–कर्नाटक के मुख्यमंत्री (वीरेंद्र पाटिल): 'आपके आने से जनता में नव जागृति का संचार हुआ है। नई धर्म की लहर दौड़ पड़ी है।'

कलकत्ता यात्रा के दौरान गांवों-सड़कों के परि-पार्श्व में हजारों व्यक्तियों ने पूछा—'बाबा कहां जा रहे हैं? कहां से आए हैं? क्या कहीं कोई मेला है या कोई तीर्थ करने जा रहे हो? बड़े बाबा का धाम कहां है?' आचार्यश्री ने उत्तर दिया—'हमारा कोई धाम नहीं है। हम राजस्थान-कानपुर से आ रहे हैं, कलकत्ता जा रहे हैं।' पहली बार तेरापंथ के किसी आचार्य का कलकत्ता पदार्पण हुआ, जिससे धर्मसंघ की अभूतपूर्व प्रभावना हुई। विदाई के समय कलकत्ता के महापौर ने गद्गद् होकर कहा—'आपने यहां जो कार्य किया उसके लिए कलकत्ता ही नहीं, संपूर्ण पश्चिम बंगाल चिर ऋणी रहेगा।'

C. अणुव्रत विकास और राष्ट्रीय हस्तियों से मिलन :

राजस्थान में बीकानेर के बाद जयपुर और जयपुर से दिल्ली तक की यात्रा अणुव्रत विकास की पहली ऐतिहासिक यात्रा थी।

प्रमुख मुलाकातें और संवाद :

–जयपुर में राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद से दो घंटे तक गहन वार्तालाप।

–दिल्ली में प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु आनंद कौशल्यायन से भेंट-वार्ता।

–रामकृष्ण, डालमिया, प्रमुख उद्योगपतियों और जैनेंद्रजी जैसे ढेरों विद्वानों व पत्रकारों से बातचीत।

–राजघाट पर गांधी जी की समाधि के समीप विनोबा भावे के साथ आचार्य श्री का अत्यंत मधुर एवं भव्य मिलन।

आचार्य श्री की गति और विराम में अद्भुत सामंजस्य था। जब साधु-संत या अनुयायी कहते—'गुरुदेव थोड़ा विश्राम करावें क्योंकि अति श्रम हो रहा है', तो आचार्य श्री सहजता से कहते—'खाली रहना मुझे अटपटा लगता है, मेरी समझ में कार्य परिवर्तन ही विश्राम है।'

प्रमुख यात्रा कालक्रम :

–1949 से 1953 (सं. 2005 से 2009): बीकानेर राज्य से दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान।

–1965 से 1966 (सं. 2022 से 2023): राजस्थान से दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान।

–1966 से 1972 (सं. 2023 से 2038): राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और राजस्थान।

–1972 से 1982 (सं. 2035 से 2038): राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान।

–1983 के बाद (सं. 2039 से 2053): राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान।

> 'गति में विराम और विराम में ही गति—यही आचार्य तुलसी के अस्सी हजार किलोमीटर के संकल्पमयी जीवन का महामंत्र था।'

D. यात्रा संस्मरण, कष्ट-सहिष्णुता और जन-परिवर्तन :

आचार्य श्री की लम्बी यात्राओं के अनेक अनुभव, स्मृतियां और घटना-प्रसंग इतिहास के पन्नों में अमर हैं। एलोरा जाते समय रास्ते में मिले अमेरिकन पर्यटकों से जैन धर्म विषयक वार्तालाप हुआ, जिससे संतुष्ट होकर वे दर्शक भाव से भर गए।

कठिन परिस्थितियों में प्रवास :

–कभी घने नीम के नीचे रात बिताई, तो कभी पंजाब की नहरों और नदियों के बीच सड़क पर रहे।

–जंगलों तथा राजस्थान के रेतीले टीबों की झोपड़ियों में रहते हुए वन्य जीव-जंतुओं के बीच भी दिन बिताए।

मेवाड़ के सघन पहाड़ों में आदिवासियों की झोपड़ियों में भी आचार्यश्री का प्रवास हुआ। जब वे दयाराम जाट की ढाणी में पधारे, तो उसने दूध लेने का आग्रह किया। आचार्यश्री ने दूध का व्रत निपजाकर पूछा—'अब तुम क्या करोगे?' जाट ने चिंतन कर कहा—'आचार्य जी, अब चोरी नहीं करूंगा। बहुत चोरियां की हैं, अब यदि सौ मण सोना भी मेरे सामने हो तो हराम है।' उसने दूध का बदला चोरी का त्याग करके चुकाया।

E. सामाजिक और पारिवारिक समझौते :

आचार्यश्री की यात्रा से जनता को एक नई दिशा मिलती थी।

1. बड़ी रावलिया की घटना (2 जून 1960) : जब 14 वर्षीय बालक ने एक प्रार्थना पत्र थमाकर अपने नाना गेहरी लाल जी व गांव वालों के बीच चल रहे विग्रह को निपटाने का आग्रह किया, तो आचार्यश्री ने पूछा—'तुम्हारी दृष्टि में दोष किसका है?' बालक ने निष्पक्ष होकर कहा—'दोष तो मेरे नाना का है।' आचार्यश्री ने उसी रात नाना को समझाया और रात दो बजे वह वर्षों पुराना कलह समाप्त हो गया।

2. देशी-विलायती कलह का अंत: बीकानेर राज्य में 'देशी-विलायती' का सामाजिक कलह जब चरम सीमा पर था, तब आचार्यश्री की प्रेरणा से दोनों पक्ष मैत्री के लिए तैयार हुए। आचार्यश्री ने एक प्रेरणादायी गीत रचकर सबको समझाया, जिससे सब पिछली गलतियां भूलकर आपस में गले मिले और चारों ओर खमत-खामणा के स्वर गूंज उठे।

3. व्यसनमुक्ति और नैतिक क्रांति:

पदयात्रा के दौरान लाखों लोग व्यसनमुक्त बने। नागौर के माल्यावास में संक्षिप्त प्रवचन सुनकर अनेकों लोगों ने शराब, मांस व धूम्रपान छोड़ा। वहां के ठाकुर ने जब व्यसनमुक्त होने का संकल्प लिया तो एक व्यक्ति ने संशय में पूछा—'ठाकुरसा, क्या आप सचमुच शराब छोड़ देंगे?' ठाकुरसा ने दृढ़ता से कहा—'मैंने मद्यपान छोड़ दिया है। यदि तुम मुझे कभी शराब पीते देख लो, तो मेरा गला काट देना।'

F. यायावर महामानव और योग-क्षेम का स्वर्णिम युग :

आचार्य श्री तुलसी की मुखाकृति अत्यंत आकर्षक और तेजस्वी थी। यात्रा काल में एक वकील ने कहा था—'मैं आचार्यश्री की आँखों पर मुग्ध हूँ। आज तक मैंने इतनी आकर्षक और तेजस्वी आँखें नहीं देखी हैं।'

जब एक व्यक्ति ने उनसे पूछा—'आप हिंदू हैं या मुसलमान?'

तो आचार्यश्री ने उत्तर दिया—'भाई, मैं इस्लाम की परंपरा में नहीं जन्मा हूँ। मैं जन्मा मानव हूँ। अपने आपको जगाने, जीतने का प्रयास करता हूँ, इसलिए जैन हूँ। मैं सर्वप्रथम मानव हूँ, फिर धार्मिक हूँ, फिर जैन, फिर तेरापंथी और तेरापंथ का आचार्य हूँ।'



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

'विरोधों की आँधी में महकता गुलाब : विषम परिस्थितियों को विनोद बनाने वाले महाशिल्पी!'

आचार्य श्री तुलसी : अप्रतिहत अनुशास्ता और अद्भुत व्यक्तित्व-शिल्पी

● मुनि दीप कुमार ●

प्रस्तावना : व्यक्तित्व-शिल्पी आचार्य श्री तुलसी :

कुछ व्यक्तित्व स्वयं इतिहास बनाते हैं और कुछ ऐसे होते हैं, जो इतिहास बनाने वाले व्यक्तित्वों का निर्माण करते हैं। आचार्य श्री तुलसी इसी दूसरी श्रेणी के विलक्षण महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व केवल एक महान आचार्य का व्यक्तित्व नहीं था, बल्कि एक ऐसे कुशल शिल्पी का व्यक्तित्व था।

आचार्यश्री ने प्रतिभाओं को पहचाना, उन्हें अवसर दिए और उनकी क्षमताओं को धर्मसंघ एवं समाज की सेवा से जोड़ा।

A.अनुशासन की आधारशिला: आत्मानुशासन और वात्सल्य :

आचार्य श्री तुलसी के लिए अनुशासन मात्र नियमों का पालन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के परिष्कार की प्रक्रिया था। वे जानते थे कि भय से कुछ समय तक व्यवस्था चलाई जा सकती है, किंतु स्थायी परिवर्तन आत्मबोध और आंतरिक प्रतिबद्धता से ही संभव होता है।

1. गुरु-अनुशासन की विशेषताएँ : दृढ़ता पर आधारितः उनके अनुशासन में दृढ़ता थी, पर कठोरता नहीं थी।

> **प्रतिभा तभी सार्थक होती है जब वह किसी बड़े उद्देश्य से जुड़े, और ज्ञान तभी प्रभावी होता है जब वह जीवन के आचरण में उतरे।**

2. मर्यादा और विश्वास: अनुशासन में मर्यादा के साथ-साथ उत्तरदायित्व और विश्वास का सुंदर समन्वय था।

3. सुप्त प्रतिभाओं को जगाना : उनकी गुरु-दृष्टि व्यक्ति की वर्तमान योग्यता तक सीमित न रहकर भविष्य की संभावनाओं को भी देखती थी।

B. उत्तराधिकारी निर्माण से आगे:

विविध प्रतिभाओं का विकास : एक महान गुरु की उपलब्धि केवल योग्य उत्तराधिकारी तैयार करना नहीं होती, बल्कि उनके सान्निध्य में अनेक प्रतिभाओं का अलग-अलग क्षेत्रों में विकसित होना है। आचार्य श्री तुलसी ने ज्ञान, साहित्य, साधना, सेवा, संगठन और नैतिक चेतना के विविध आयामों को विकसित करने वाली परंपरा को समृद्ध किया।

प्रमुख आचार्य परंपराः

1. आचार्य श्री महाप्रज्ञजी : दर्शन, प्रेक्षाध्यान और विद्वत्ता के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान।

2. आचार्य श्री महाश्रमणजी : अनुशासित नेतृत्व, मर्यादापूर्ण आचरण और व्यापक पदयात्राएँ।

3. साध्वी प्रमुखा कनक प्रभाजी : साहित्य, अध्ययन और संगठन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान।

एक ही गुरु-सान्निध्य में अलग-अलग रुचियों वाले व्यक्तित्व विकसित हुए, किंतु उनके जीवन का केंद्रीय सूत्र रहा—गुरु-निष्ठा, संयम, मर्यादा और संघ-समर्पण।

C. विद्वत्ता, साहित्य और ज्ञान-संरक्षण के प्रमुख साधक :

तेरापंथ धर्मसंघ में विभिन्न संतों ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा से ज्ञान-परंपरा को समृद्ध कियाः

1. मुनिश्री बुद्धमलजी स्वामी : संस्कृत के विद्वान, हिंदी साहित्यकार और इतिहासकार थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के बालसखा एवं अध्ययन-सहचर के रूप में उनका संबंध उल्लेखनीय रहा। तेरापंथ के इतिहास को सुरक्षित रखने में उनका योगदान अद्वितीय था। आचार्य श्री तुलसी द्वारा उन्हें 'शासन गौरव' अलंकरण प्रदान किया गया।

2. मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं': मंत्री मुनि के रूप में संघ की सेवा सँभालने वाले आगम, तत्त्वज्ञान और ज्योतिष के गंभीर अध्येता थे। वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी सहित चार संतों को दीक्षित करने का श्रेय उनसे जुड़ा है। उन्हें 'शासन स्तंभ' और 'तेरापंथ दर्शन मनीषी' से सम्मानित किया गया।

3. मुनिश्री राकेश कुमारजी स्वामी : संस्कृत-साधना, साहित्य-सृजन और अणुव्रत के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा के धनी थे। संस्कृत श्लोक-रचना, लोकप्रिय गीतों और साहित्यिक अभिव्यक्ति के साथ व्यापक जनसंपर्क में उनकी दक्षता उल्लेखनीय रही। उन्हें 'अणुव्रत प्राध्यापक', 'शासनश्री' व 'शासन गौरव' प्राप्त हुए।

4. मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी स्वामी : आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, बहुभाषिक विद्वत्ता और आगम-अध्ययन के समन्वित व्यक्तित्व थे। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के मानद प्रोफेसर और बहुश्रुत परिषद के संयोजक रहे। प्रेक्षाध्यान के साधक होने के कारण उन्हें 'प्रेक्षा प्राध्यापक' व 'आगम मनीषी' से नवाजा गया।

5. मुनिश्री मधुकरजी स्वामी: इनका जीवन गुरु-सेवा और संघ-समर्पण का प्रेरक उदाहरण था। आचार्यश्री की मुख्य सेवा में रहते हुए आहार, औषधि और शारीरिक देखभाल के कार्यों में विशेष तत्परता रखी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के पर्यवेक्षक के रूप में युवाओं को जाग्रत किया। उन्हें 'संघ परामर्शक' और 'शासन गौरव' से सम्मानित किया गया।

6. मुनिश्री सुखलालजी स्वामी : अणुव्रत आंदोलन के प्रति गहरे समर्पण और अदम्य उत्साह रखने वाले संत थे। अणुव्रत के प्रभारी के रूप में उन्होंने नैतिक चेतना के प्रसार के लिए अथक परिश्रम किया। वे तेरापंथ संत समाज के विशिष्ट साहित्यकारों में गिने जाते थे। उन्हें 'अणुव्रत प्राध्यापक' तथा 'शासनश्री' प्राप्त हुआ।

> **'महान गुरु वह नहीं जो केवल अनुयायी तैयार करे, बल्कि वह है जो अपने सान्निध्य से अनगिनत प्रखर व्यक्तित्वों और राष्ट्र-निर्माताओं का सृजन करे।'**

7. मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी: आगमों के गंभीर अध्येता, विद्वान, कवि और साहित्यकार थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के आगम-संबंधी कार्यों में उन्होंने प्रमुख सहयोग दिया। अंग्रेजी भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्हें 'आगम मनीषी' अलंकरण प्राप्त हुआ तथा आचार्य महाश्रमणजी ने बहुश्रुत परिषद का सदस्य चयनित किया।

D. साध्वी समाज की विदुषियाँ : ज्ञान, साधना और नेतृत्व :

1. शासनमाता महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी : विद्वत्ता, साहित्य-सृजन, साधना और संगठनात्मक नेतृत्व का विशिष्ट समन्वय। आचार्यश्री के सान्निध्य में विकसित उनकी प्रतिभा ने साध्वी समाज की शिक्षा, अनुशासन और संगठन को नई दिशा दी। महाश्रमणी, संघ महानिर्देशिका और शासनमाता जैसे पदों से विभूषित उनका जीवन नारी-प्रतिभा का प्रेरक उदाहरण है।

2. साध्वी श्री राजीमतीजी : अध्ययन, साहित्य, ध्यान और योग-साधना के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

3. साध्वी श्री कनकश्रीजी : आगमज्ञान और साहित्य-सृजन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के लिए जानी जाती हैं। अध्ययन और साहित्य के प्रति उनकी निष्ठा ज्ञान-परंपरा को समृद्ध करती है। वर्तमान में आप बहुश्रुत परिषद की सम्मानित सदस्या हैं।

4. साध्वी श्री यशोधराजी : संस्कृत की विदुषी, साहित्यकार और कुशल वक्ता हैं। आगम-संबंधी कार्यों में उनकी सहभागिता उनकी अध्ययनशीलता और अभिव्यक्ति-कौशल का परिचायक है।

5. साध्वी श्री कल्पलताजी : उन्होंने संघ में विविधमुखी सेवाएँ दी हैं। आचार्यश्री की गोचरी और प्रतिलेखन सेवा से जुड़ी रहीं। उन्होंने शासनमाता का जीवनचरित्र अनेक भागों में लिखा तथा सूक्ष्म लिपि कला की दक्षता प्राप्त की। उन्हें 'शासन गौरव' प्राप्त हुआ।

E. निष्कर्ष: व्यक्तित्वों में जीवंत गुरु-दृष्टि :

आचार्य श्री तुलसी की महानता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि उनकी प्रेरणा अनेक व्यक्तित्वों के कर्तृत्व में जीवंत दिखाई देती है। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की विद्वत्ता, आचार्य श्री महाश्रमणजी का अनुशासित नेतृत्व और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की संगठनात्मक प्रतिभा इस व्यापक गुरु-परंपरा के विविध आयाम हैं।

सारभूत संदेश :

'निज पर शासन,
फिर अनुशासन'

का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

पृष्ठ 4 का शेष

प्रसन्न चित्त और उच्च मनोबल...

2. प्रेक्षाध्यान और शरीर की स्थिरताः यदि मन में अशुभ संकल्प न हों तो संयम की उत्तम आराधना होती है और अशुभ संकल्पों से बचाव हो जाता है। मन की एकाग्रता को साधने के लिए हमारे यहाँ 'प्रेक्षाध्यान' का उपक्रम संचालित होता है। जप और ध्यान करते समय शरीर में अनावश्यक चंचलता नहीं रहनी चाहिए, क्योंकि शरीर की स्थिरता भी मन की एकाग्रता में सहायता पहुँचाती है।

ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक सम्मेलन और दीक्षांत समारोह का दूसरा दिन :

1. महासमा का भव्य आयोजन: आचार्यश्री की अनुज्ञा से उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने अपनी सुंदर भावाभिव्यक्ति दी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासमा के अंतर्गत संचालित ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन एवं दीक्षांत समारोह का दूसरा दिन आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में मंचीय उपक्रम के रूप में संपन्न हुआ।

2. अभिव्यक्ति और पावन पाथेय : इस अवसर पर महासमा के संगठन मंत्री निर्मल सोखरू तथा ज्ञानशाला के संयोजक सोहनराज चौपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। थली अंचल की ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञानशाला में प्रशिक्षण देना एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। छोटे बच्चों को अच्छा ज्ञान, संस्कार देना और सिखाना बहुत ही सराहनीय कार्य है। व्यवस्था पक्ष का भी अपना महत्व है, और यह उपक्रम निरंतर श्रेष्ठ ढंग से आगे बढ़े तथा विकास का क्रम बना रहे, ऐसी पावन मंगलकामना की गई।



गुरुदेव के सान्निध्य में तीन दिवसीय कॉनक्लेव ने दी सीपीएस एकेडमी को नई दिशा

अभातेयुप के ट्रेनर्स कॉनक्लेव 'क्षितिज 3.0' में आध्यात्मिकता व्यक्तित्व विकास और प्रशिक्षण का संगम

लाडनूं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की CPS Academy द्वारा जैन विश्व भारती, लाडनूं में 23 से 25 अक्टूबर तक तीन दिवसीय CPS Trainers' Conclave 'क्षितिज 3.0 – Explore the Unexplored' का आयोजन किया गया।

परम पूज्य आचार्य महाश्रमण के मंगलपाठ से कॉन्क्लेव का शुभारंभ हुआ। गुरुदेव के सान्निध्य में परिचय एवं जिज्ञासा सत्र विशेष आकर्षण का केंद्र रहा जहाँ सभी प्रतिभागियों का परिचय पूज्य प्रवर से सम्मुख हुआ और आचार्यवर ने सभी जिज्ञासाओं और प्रश्नों का समाधान भी सभी को प्रदान किया।प्रशिक्षकों को नवमनोनीत युवाचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी, साध्वीवर्याश्रीजी, अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी सहित अनेक चरित्रात्माओ के सान्निध्य, दर्शन-वंदन और आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला ।



आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने मंगल पाथेय में व्यक्तित्व विकास में प्रस्तुति कला के महत्व को रेखांकित करते हुए ज्ञान के साथ व्यक्तिगत अनुभवों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी।

युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी ने आत्मविश्वास, ज्ञान, प्रज्ञा, विवेक और उच्च चरित्र निर्माण की प्रेरणा देते हुए प्रामाणिक, मित एवं सारगर्भित वक्तृत्व का महत्व बताया। उन्होंने प्रशिक्षण में धार्मिकता और जीवनोपयोगी संस्कारों को समाहित करने तथा CPS प्रशिक्षकों एवं उपासकों को अपनी कला के माध्यम से संघ और समाज की आध्यात्मिक सेवा करने का संदेश दिया। **साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी** ने जैन दर्शन, तेरापंथ के सिद्धांतों एवं अन्य दर्शनों के गहन अध्ययन की आवश्यकता बताते हुए कहा कि वक्तृत्व का उद्देश्य जनकल्याण होना चाहिए। विषय की स्पष्ट समझ, उपयुक्त दृष्टांत और सरल प्रस्तुति भाषण को प्रभावशाली बनाते हैं। **साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी** ने CPS Academy के माध्यम से देशभर में हो रहे प्रशिक्षण एवं जनसेवा के कार्यों की सराहना की और महिला प्रशिक्षकों की सक्रिय भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया।

मंचीय कार्यक्रम में CPS की गतिविधियों एवं कार्यशालाओं की जानकारी :

CPS Academy की यात्रा, प्रशिक्षण गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने प्रस्तुत की, राष्ट्रीय प्रभारी ने वर्ष भर में हुई कार्यशालाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी जबकि अध्यात्मिक गतिविधियों की और आगे की रूपरेखा एवं जानकारी मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने दी। कॉन्क्लेव के मंचीय कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ केंद्रीय कार्यालय का भ्रमण कर प्रशिक्षकों ने संगठन की कार्यप्रणाली को निकट से समझा। पैनल चर्चा में CPS Academy के विस्तार, भविष्य की योजनाओं, प्रशिक्षण की गुणवत्ता और संगठनात्मक सशक्तीकरण पर विचार-विमर्श हुआ। कॉन्क्लेव में CPS Academy के प्रशिक्षक परिवार का विस्तार करते हुए 10 नए राष्ट्रीय प्रशिक्षकों, 17 ज़ोनल प्रशिक्षकों एवं 4 मास्टर ऑफ सेरेमनी (MOC) प्रशिक्षकों को प्रमाणित किया गया। वर्षभर विभिन्न प्रशिक्षण प्रकल्पों में सेवाएँ देने वाले प्रशिक्षकों का सम्मान भी किया गया। CPS Academy के मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने विभिन्न प्रशिक्षण सत्रों का नेतृत्व किया।



कॉन्क्लेव में 'ऑटो पायलट – वर्क-लाइफ बैलेंस' कार्यशाला के मोड्यूल की जानकारी सभी को दी गई, जिसका उद्देश्य जीवन और कार्य के बीच बेहतर संतुलन तथा प्रभावी कार्यशैली को प्रोत्साहित करना है।

पदाधिकारियों एवं सहयोगियों का योगदान :

आयोजन में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने गुरुदेव, युवाचार्य एवं साध्वीप्रमुखा के सेवा समय की व्यवस्था में सहयोग दिया। कोषाध्यक्ष विकास बोथरा ने बस एवं आवास व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रमाणन सत्र में उपाध्यक्ष संदीप हिंगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी, कार्यक्रम में सह संगठन मंत्री विनय लिंगा, CPS सलाहकार सतीश पोरवाड़, नेत्रदान प्रभारी कैलाश तातेड ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। जैन विश्व भारती, लाडनूं में व्यवस्थाओं के लिए कार्यालय प्रबंधक राजेंद्र खांटेड, इरफान गौरी, विक्रम एवं उनकी टीम का सहयोग सराहनीय रहा। सोनू डागा, अमित गन्ना, निकुंज पारीख तथा बबीता रायसोनी, संदीप पोखरणा, श्रेयांस कोठारी, आर्यन गोलेच्छा, भव्य बोथरा, मिनी कोठारी, रजत संचेती और कृतिका घोड़ावत सहित अनेक प्रशिक्षकों एवं सहयोगियों ने आयोजन को सफल बनाने में योगदान दिया। कार्यक्रम के अंत में दिनेश मरोठी ने आभार ज्ञापन किया।

महिला मंडल द्वारा आयोजित तत्त्वज्ञान / तेरापंथ प्रचेता पाठ्यक्रम प्रशिक्षण परीक्षा कार्यशाला :

लाडनूं।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान मेंआचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्व प्रचेता/ तेरापंथ प्रचेता /कार्यशाला (विशेष परीक्षा)का आयोजन दिनांक 27/28 अक्टूबर 2026को लाडनूं में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सानिध्य से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा ने गुरुदेव को परीक्षा संबंधी जानकारी दी। राष्ट्रीय संयोजिका कुसुम बेंगाणी ने आँकड़ों सहित विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया तथा योजना निदेशिका पुष्पा बैंगाणी ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।



परम पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि शिक्षा और परीक्षा का संबंध ज्ञान से है। परीक्षा का वास्तविक उद्देश्य यह जानना है कि ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई है तथा परीक्षा की प्रक्रिया शुद्ध एवं व्यवस्थित होनी चाहिए। युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने परीक्षा संबंधित पूरी जानकारी ली। इसमें पुरुष वर्ग व महिला वर्ग की व चारित्रा त्माएं सभी जुड़े। आपश्री ने कहा की परीक्षा के माध्यम से ज्ञान का अंकन भी हो जाता है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतभा जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में सभी परीक्षार्थियों का स्वागत किया गया। प्रमुखाश्री जी ने परीक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। पुष्पाजी बेगाणी ने भी विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी दी। कुछ बहनों ने अपने अनुभव साझा किए। साध्वीवर्या जी ने तत्वज्ञान के द्वारा आत्मज्ञान जगाने की प्रेरणा दी। शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी ने बताया कि तत्त्वज्ञान का अध्ययन आत्मज्ञान को बढ़ाता है। इससे सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् आचार की प्रेरणा मिलती है। जड़ एवं चेतन तत्त्वों के ज्ञान से व्यक्ति में संवेदनशीलता जागृत होती है और जीवन में आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। कार्यक्रम में बहनों को तत्त्वज्ञान के अध्ययन हेतु प्रेरित किया गया।

अंत में राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली बहनों को सम्मानित किया गया।द्वितीय दिवस गुरुदेव के मंगल पाठ से परीक्षा का शुभारंभ हुआ जिसमें ६४ परीक्षार्थियों ने बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी से संयोजिका कुसुम बैंगानी, मंजू भुतोडिया, चाँद छाजेड़,प्रीति घोसल,मनीषा बोथरा, उर्मिला सुराणा, पुष्पा बरड़िया, पूनम वेद, लड़नीं महिला मंडल मंत्री लीना दुग्गड़, तत्वज्ञान व्यवस्थापिका किरण बरमेचा व सह व्यवस्थापिका नीता जी नाहर एवं कार्यकर्ताओं की विशेष सहभागिता रही।



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
सघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026



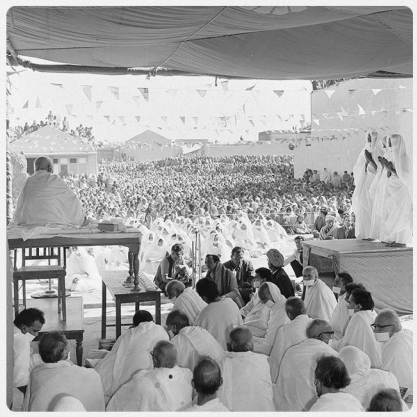

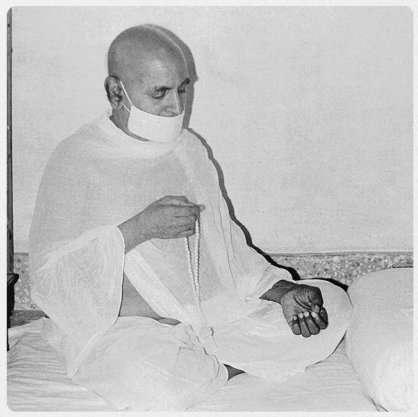



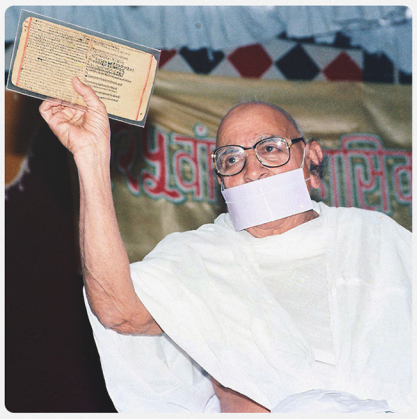

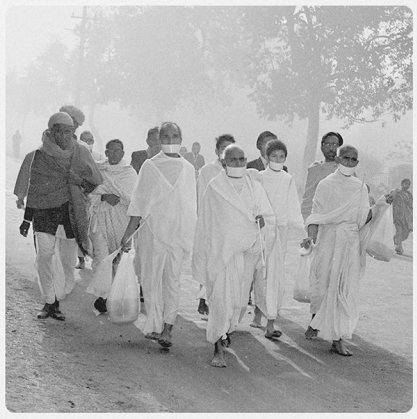

















'कंचन-सी काया, अमृत-सी आँखें और वात्सल्य की मूरत: तस्वीरों के दर्पण में दमकता गुरु तुलसी का अलौकिक साधना-पथ!'





अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026

कालजयी विचार, अमर विरासत : गुरु तुलसी के सपनों का स्वर्णिम तेरापंथ!

नैतिक क्रांति के पुरोधा पुरुष : आचार्य तुलसी और अणुव्रत की अमर ज्योति

● साध्वी अणिमाश्री एवं डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

'वासना से इंसान हैवान बनता है, साधना से इंसान भगवान बनता है। इन दोनों के बीच की राह है—अणुव्रत, जिससे इंसान केवल इंसान बनता है।'

युगप्रधान आचार्य तुलसी किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि उनका जीवन अपने आप में क्रांति का एक पूरा अध्याय है। उनका जीवन किसी एक संप्रदाय का नहीं, बल्कि समूची मानवता का गौरव-ग्रंथ है। आचार्य तुलसी केवल एक संप्रदाय के गुरु नहीं थे, वे मानवता के सजग प्रहरी और आत्म-साधना के शिखर पुरुष थे। वे मानव को सही राह दिखाने वाले दिव्य प्रकाश-पुंज थे।

1. अणुव्रत आंदोलन का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रादुर्भाव : जब द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरी दुनिया परमाणु बम की भयावह त्रासदी से डरी हुई थी, जब इंसान विज्ञान के क्षेत्र में तो बड़ा होता जा रहा था लेकिन भीतर से बौना होता जा रहा था। जब 20वीं शताब्दी में दुनिया भौतिकता की अंधी दौड़ में दौड़ रही थी। जब इंसान विज्ञान के रथ पर सवार होकर संवेदनाओं को कुचल रहा था। जब भारत की आजादी के बाद देश के भौतिक विकास के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाई जा रही थीं, किंतु देश के चारित्रिक विकास की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा था।

उस समय देश के चारित्रिक उत्थान के लिए आचार्य तुलसी ने एक नैतिक क्रांति की, जिसे आज हम 'अणुव्रत आंदोलन' के रूप में जानते हैं।

अणुव्रत का स्वरूप और प्रभाव :

1. महा-अनुष्ठान : अणुव्रत आंदोलन कोई राजनीतिक या सामाजिक क्रांति मात्र नहीं था, वह तो मनुष्य की आत्मा को जगाने का एक महा-अनुष्ठान था।

2. नैतिक-चेतना की गंगा : अणुव्रत आंदोलन की लोकप्रियता को देखकर ऐसा लगा था मानो कोई भगीरथ नैतिक-चेतना की गंगा धरती पर उतार लाया है।

3. मशाल और दीपशिखा : अणुव्रत एक ऐसी मशाल है, जो संपूर्ण जीवन-पथ को ज्योतिर्मय बना सकती है। अणुव्रत एक ऐसी दीपशिखा है, जिससे सारा जीवन प्रभास्वर बनकर दूसरों की राह को भी ज्योतित कर सकता है।

4. कांटों के बीच गुलाब : अणुव्रत एक ऐसा गुलाब का फूल है, जो कांटों के बीच भी नैतिक सुरभि का संचार करता है।

अणुव्रत नैतिक ज्योति है, नैतिक प्रेरणा है, नैतिक अभियान है। इस अभियान से जुड़कर व्यक्ति स्व-पर का कल्याण कर सकता है।

2. आन्तरिक व्यक्तित्व को संवारने वाला दर्पण है: अणुव्रत :

महान दार्शनिक सुकरात एक बार दर्पण में अपना चेहरा देख रहे थे। उनके शिष्यों ने सोचा, 'गुरुदेव का बाह्य रूप सुन्दर नहीं है, फिर दर्पण क्यों देख रहे हैं? क्या गुरुदेव के मन में खिन्नता के भाव नहीं आएंगे?'

एक शिष्य से रहा नहीं गया। उसने विनम्रता से पूछा— 'गुरुदेव! आप दर्पण क्यों देख रहे हैं?'

सुकरात एक बार तो मुस्कुराए, फिर गंभीर वाणी में शिष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा— 'पुत्रों! तुम सोच रहे होगे कि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए दर्पण देखने की क्या आवश्यकता है? पर ध्यान से सुनो, दर्पण कुरूप या सुरूप हर व्यक्ति को देखना चाहिए। कुरूप व्यक्ति दर्पण देखकर यह सोचे कि 'मेरा चेहरा तो सुंदर नहीं है किंतु मुझे अपने सत्कार्यों के द्वारा अपने व्यक्तित्व को सुंदर बनाना है।' सुंदर व्यक्ति दर्पण देखकर यह सोचे कि 'मेरे द्वारा ऐसा कोई कार्य न हो जाए, जिससे मेरी सुंदरता समाप्त हो जाये।'

आन्तरिक सौन्दर्य की आवश्यकता :

–जिस प्रकार बाह्य सुंदरता को देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आन्तरिक सौन्दर्य को देखने के लिए अणुव्रत रूपी दर्पण की आवश्यकता है।

–जो व्यक्ति ईमानदार है, कर्तव्यनिष्ठ है, प्रामाणिक है, वह अणुव्रती इसलिए बने ताकि उसके ये नैतिक गुण वर्धमान होते रहें।

–जो व्यक्ति इन नैतिक गुणों से संपन्न नहीं है, वह अणुव्रत के नियमों को इसलिए स्वीकार करे ताकि वह अच्छा इंसान बन सके।

इसलिए आंतरिक सौंदर्य को सजाने व संवारने के लिए अणुव्रत रूपी दर्पण की महनीय अपेक्षा है।

3.इंसान को इंसान बनाने की विद्या का नाम है : अणुव्रत :

किसी ने बहुत सुंदर कहा है—

'वासना से इंसान हैवान बनता है।
साधना से इंसान भगवान बनता है।

इन दोनों के बीच की राह है - अणुव्रत,

अणुव्रत से इंसान-इंसान बनता है।'

अणुव्रत के प्रभाव के दो जीवंत दृष्टांत :

1. पत्रकार नंदकिशोर नौटियाल का संस्मरण :

प्रसिद्ध पत्रकार नंदकिशोर नौटियाल अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी के संपर्क में आए। उन्होंने अणुव्रत को समझा एवं अणुव्रती बन गए। एक बार वे मुंबई में गुरुदेव तुलसी के दर्शन करने आए और उन्होंने गुरुदेव तुलसी से निवेदन किया—

'आचार्य जी, मुम्बई में मुझे कुछ व्यक्तियों ने कहा कि तुम आचार्य तुलसी के बारे में इतना लिखते हो तो अन्य लोगों के बारे में क्यों नहीं लिखते? मैंने उत्तर दिया— मैं आचार्य तुलसी के बारे में इसलिए लिखता हूँ कि वे आदमी को आदमी बनाते हैं। अन्य कोई आदमी को आदमी बनाने वाला हो तो बताओ, मैं उनके बारे में भी लिखूँगा।'

मेरे कथन पर अविश्वास प्रकट करते हुए एक सज्जन ने कहा— 'आचार्य जी ने किस आदमी को आदमी बनाया है?' मैं बोला— 'इसका जीता-जागता उदाहरण मैं हूँ, एक समय था जब मैं शराब पीता था, जर्दा-तंबाकू आदि खाता था, अब मैं इनसे मुक्त हूँ।'

2. डॉ. जाकिर हुसैन के विचार :

आचार्य तुलसी एक बार पटना यूनिवर्सिटी पधारे। वहां के तत्कालीन वाइस चांसलर डॉ. जाकिर हुसैन ने अपने विश्वविद्यालय में आचार्य तुलसी का स्वागत करते हुए कहा था कि— 'आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा मनुष्यों को मनुष्य बनाने का कारखाना खोल रखा है, इसलिए मैं आपका स्वागत करता हूँ।'

सचमुच अणुव्रत ही एक ऐसी विद्या है, जो इंसान को इंसान बनाने की कला सिखाती है।

4. चारित्रिक उत्थान का सशक्त सोपान है : अणुव्रत :

एक बार सुकरात को रात्रि में एक दिव्य संकेत प्राप्त हुआ— 'सुकरात शिलाखंड पर छेनी मत चलाओ। मूर्ति का निर्माण नहीं, मनुष्यों का निर्माण करो।' इस दिव्य संकेत ने सुकरात की जीवन शैली को बदल दिया। बाद में उन्होंने अपनी शक्ति व श्रम का नियोजन मनुष्यों का निर्माण करने में किया।

आचार्य तुलसी ने भी चरित्र-संपन्नता एवं नीति-निष्ठा की बुनियाद पर अणुव्रत की पृष्ठभूमि तैयार की।

अणुव्रत की महत्ता और उपादेयता:

1. चरित्र का खिताब : आचार्य तुलसी के शब्दों में समाज-भूषण, पद्मभूषण, पद्मश्री, विद्यारत्न आदि उपाधियाँ कोई भी दे सकता है पर मनुष्यों को चरित्रसंपन्न बनाकर अच्छे इंसान की उपाधि देने में कोई समर्थ नहीं है। व्यक्ति को चरित्रसंपन्नता का खिताब सिर्फ और सिर्फ अणुव्रत ही प्रदान कर सकता है।

2. अतुलनीय मूल्य : जैसे रत्नों की प्राप्ति के लिए रोहण पहाड़ मूल्यवान है, तारों के लिए आकाश मूल्यवान है, कल्पवृक्ष की प्राप्ति स्वर्ग में ही संभव है, वैसे चारित्रिक उत्थान के लिए अणुव्रत की अपनी उपयोगिता एवं महत्ता है।

आचार्य तुलसी का एक ही आह्वान था— 'कोई जैन बने या न बने, किन्तु हर व्यक्ति गुडमैन (Good Man) अवश्य बने।'

निष्कर्ष :

गुडमैन बनाने की प्रक्रिया ही अणुव्रत है। अणुव्रत का शंखनाद जन-जन का नाद बने। हमारी यही भावना हो—

'चलो, एक दीप ऐसा भी जलाएं
इस अंधेरी रात में,
जहाँ नफरत की दीवारें पिघल कर
मोम हो जाएं।
कदम छोटे ही सही पर राह
नैतिकता की हो अपनी,
कि चलते-चलते खुद-ब-खुद
हमारे हौसले इतिहास बन जाएं।'

युगनायक युगपुरुष तुम्हें श्रद्धा से शीश झुकाएं।

● साध्वी संयमलता ●

युगनायक युगपुरुष तुम्हें श्रद्धा से शीश झुकाएं।
नभ धरती पर गूंजे, अवदानों की सुयश ऋचाएं॥

(1) चंदेरी के चांद तुलसी जब धरती पर आये,
नया उजाला नई रोशनी पा परिजन हरसाये,
मुखमण्डल की देख प्रभा, जन्नत के सुर शरमाये॥

(2) था व्यक्तित्व विलक्षण तेरा, जन-जन के मन भाया,
शंखनाद अणुव्रत का तुमने घर-घर में पहुंचाया,
सदी बीसीवीं के गौरव, क्या गुण गरिमा बतलाएं॥

(3) स्नेहदान पाकर तुमसे कितने बुझते दीप जले,
मानवता के महाप्राण अगणित प्राणों को त्राण मिले,
मंजिल मिली उसी को जो तेरे चरणों में आये॥

(4) कर्मशील कर्तृत्व ने दी गण को ऊंचाई,
कदम-कदम पर साथ चली संघर्षों की परछाई,
पीकर विष अमृत बांटा तुम अमृतपुरुष कहाएं॥

(5) कुशल शिल्पी के हाथों कितनी कृतियों ने आकार लिया,
महाप्रज्ञ और महाश्रमण सा सक्षम जो नेतृत्व दिया,
युगानुरूप मिली महाश्रमणी, अपना भाग्य सराएं॥

(तर्ज: - जन्म-जन्म का साथ है...)



अध्यात्म, शिक्षा और शोध का वैश्विक केंद्र : जैन विश्व भारती, लाडनूं के रूप में आचार्य तुलसी का महा-अवदान!

आचार्य तुलसी : विरोधों में खिलता गुलाब, महकता चमन :

● मर्यादा कोठारी, जयपुर ●

हज़ारों साल नर्गिस
अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है
चमन में दीदावर पैदा।

महान व्यक्तित्व किसी एक गुण, उपलब्धि अथवा पद से महान नहीं बनते। उनका असाधारण व्यक्तित्व संघर्षों के बीच निखरता है, विरोधों के बीच अपनी राह बनाता है और विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी सुगंध बिखेरता रहता है। आचार्यश्री तुलसी ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व थे, जिन्होंने विरोध को अवरोध नहीं, बल्कि अपने पुरुषार्थ की परीक्षा माना। उनके जीवन की संघर्षगाथा वस्तुतः प्रतिकूलताओं के बीच खिलते उस गुलाब की कहानी है, जिसकी सुगंध विरोध की हवाओं के बावजूद दूर-दूर तक फैलती रही।

A.पुरुषार्थ और स्थिरता : दो युगदृष्टाओं की विशेषताएँ

जोधपुर में प्रेक्षाध्यान के एक शिविर के दौरान रोहतक से आए प्रशिक्षक डॉ. एस. के. जैन ने बोर्ड पर लिखा—

आचार्यश्री तुलसी की विशेषता—
'पुरुषार्थ, पुरुषार्थ, पुरुषार्थ।'
आचार्यश्री महाप्रज्ञ की विशेषता—
'स्थिर, स्थिर, स्थिर।'

उन्होंने स्पष्ट किया कि आचार्यश्री तुलसी अपने पुरुषार्थ से पत्थर में भी पानी निकाल सकते थे, जबकि आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्थिरता समस्याओं के समाधान का सशक्त आधार थी। यह प्रसंग मेरे मन में गहराई से अंकित हो गया। जब मैं आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर लिखने बैठा, तो यही शब्द अनायास उभर आए। वास्तव में, आचार्यश्री तुलसी का जीवन पुरुषार्थ, संघर्ष, दूरदर्शिता और प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदल देने की अद्भुत क्षमता का जीवन था।

B. संघर्षों की आँच में तपकर निखरा व्यक्तित्व :

आचार्यश्री तुलसी का जीवन आरंभ से ही संघर्षों से जुड़ा रहा। जन्म के कुछ समय बाद ही पिताश्री का देहावसान हो गया। दादाजी और माताजी ने संस्कारों से समृद्ध किया। दीक्षा से पूर्व बड़े भाई मोहनलालजी ने भी उनकी कड़ी परीक्षा ली। दीक्षा के पश्चात् वे आचार्यश्री कालूगणी के प्रिय शिष्य बने। आचार्यश्री कालूगणी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और देवलोकगमन कर गए। अल्पायु में आचार्यपद का दायित्व संभालना स्वयं में एक बड़ी चुनौती थी, किंतु उन्होंने इसे धर्मसंघ के भविष्य को नई दिशा देने के अवसर के रूप में स्वीकार किया।

गंगापुर चातुर्मास के बाद ब्यावर में आयोजित पहला मर्यादा महोत्सव उनके लिए विरोधों के बीच अपनी नेतृत्व क्षमता सिद्ध करने की पहली बड़ी कसौटी बना। वहाँ उठे विरोध के स्वर उनके संघर्षपूर्ण आचार्यकाल की शुरुआती चुनौतियों में से थे, लेकिन उनके भीतर का पुरुषार्थ निरंतर सक्रिय रहा।

C. गुलाब और कमल : पिताश्री की दृष्टि में दो आचार्य :

यहाँ मुझे अपने पिताश्री स्वर्गीय सोहनराजजी कोठारी—शासनसेवी एवं तेरापंथ प्रवक्ता—की एक बात याद आती है। वे कहा करते थे—

'आचार्यश्री तुलसी गुलाब के फूल हैं। गुलाब के साथ काँटे भी होते हैं, लेकिन उसकी तीव्र सुगंध सबको प्रभावित कर देती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ कमल के फूल हैं, जो अपनी भीनी-भीनी महक से पूरे वातावरण को विशिष्ट बना देते हैं।'

गुलाब की तरह आचार्यश्री तुलसी का व्यक्तित्व तेजस्विता, ओज, सक्रियता और निर्भीकता से परिपूर्ण था। वे विरोधों के काँटों के बीच भी अपने संकल्पों की सुगंध बिखेरते रहे। वहीं कमल की तरह आचार्यश्री महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व गहन चिंतन, गंभीरता और आध्यात्मिक शीतलता का प्रतीक था।

D. बीकानेर और जयपुर चातुर्मास : निर्णय की दृढ़ता :

ब्यावर के मर्यादा महोत्सव के बाद बीकानेर चातुर्मास में रांगड़ी चौक से जुड़ा विरोध और उस समय आचार्यश्री द्वारा लिया गया निर्णय उनके नेतृत्व की दूरदर्शिता का उल्लेखनीय उदाहरण बना। बीकानेर के महाराजा गंगासिंहजी भी उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए।

जयपुर चातुर्मास में बालदीक्षा के प्रकरण ने देशभर में व्यापक चर्चा को जन्म दिया। आचार्यश्री को एक बार फिर विरोध का सामना करना पड़ा, उनके जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग आए, जब परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं, फिर भी उन्होंने विरोध से घबराकर कभी अपने कदम पीछे नहीं खींचे।

'जो हमारा करे विरोध, समझें हम उसे विनोद'

जोधपुर चातुर्मास के दौरान उनके विरोध में सड़कों पर पर्चे चिपकाए गए थे। ऐसी स्थिति में सामान्यतः कोई भी व्यक्ति क्रोधित हो सकता था, लेकिन आचार्यश्री तुलसी ने उस घटना को सहज विनोद में बदल दिया। उन्होंने कहा कि डामर की सड़क पर नंगे पाँव चलने से पाँव जलते हैं; विरोधियों ने पर्चे चिपकाकर हमारे लिए यह सुविधाजनक काम कर दिया है।

कितनी अनूठी दृष्टि थी! जहाँ दूसरे को अपमान दिखाई देता, वहाँ आचार्यश्री को विनोद का अवसर दिखाई दिया। उनका प्रसिद्ध नारा था—

'जो हमारा करे विरोध, समझें हम उसे विनोद।'

यह जीवन जीने की एक विशिष्ट कला थी।

> **आचार्यश्री तुलसी जैसे दीदावर सदियों में जन्म लेते हैं—जो स्वयं गुलाब बनकर खिलते हैं और अपने पुरुषार्थ से पूरे चमन को महका देते हैं।**

E. सत्य के प्रति निष्ठा और साम्प्रदायिक सौहार्द :

जोधपुर की ही एक घटना का उल्लेख आचार्यश्री तुलसी ने अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' में किया है। यह प्रसंग विरोध के बीच उनकी सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता और साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना को उजागर करता है। संवत्सरी के दिन तेरापंथ समाज के लोग अन्य सम्प्रदायों के आचार्यों के पास खमतखामणा करने गए थे। दूसरी ओर, स्थानकवासी समाज के प्रमुख व्यक्तियों सहित सैकड़ों लोग आचार्यश्री तुलसी के पास खमतखामणा करने आए।

आगंतुकों ने वहाँ बैठकर उनसे कहा कि संवत्सरी जैसे महान पर्व पर भी उन्होंने स्थानकवासी सम्प्रदाय की कटु आलोचना की और उस पर आरोप लगाए। यह सुनकर आचार्यश्री को किसी सुनियोजित षड्यंत्र की आशंका हुई। उन्होंने संयत भाषा में स्पष्ट किया कि किसी सम्प्रदाय की कटु आलोचना करना और उस पर आक्षेप लगाना वे पाप मानते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उनके विरोध में सैकड़ों पर्चे छपे, पर उन्होंने कभी उत्तर नहीं दिया।

तभी सभा में उपस्थित एक स्थानकवासी भाई थानचंदजी मेहता ने अपने इकलौते पुत्र की सौगंध खाकर निर्भीकता से कहा कि उन्होंने पूरा व्याख्यान सुना है और आचार्यश्री ने किसी की आलोचना में एक शब्द भी नहीं कहा। यह सुनकर आचार्यश्री के मुख से अनायास निकला— 'आज भी संसार में सत्य जीवित है।'

स्थिति को संभालते हुए आचार्यश्री ने अत्यंत सहज भाव से कहा कि वे लोग खमतखामणा करने आए हैं; मानसिक निर्मलता के बिना खमतखामणा कैसे संभव है? इसके बाद उन्होंने आगंतुकों से पुनः खमतखामणा किया और वातावरण को शांत कर दिया। विरोध के बीच मन की निर्मलता बनाए रखना उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

F. अणुव्रत से अग्निपरीक्षा तक : सिद्धांतों की दृढ़ता :

आचार्यश्री तुलसी के जीवन में विरोध केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं था। जब-जब उन्होंने धर्मसंघ और समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया, तब-तब अनेक चुनौतियाँ सामने आईं। अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन हो, परमार्थिक शिक्षण संस्था की स्थापना हो अथवा आदर्श साहित्य संघ की स्थापना—इन सभी के प्रारंभिक चरणों में उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा। कोलकाता और चेन्नई में भी हिंदी भाषा को लेकर विरोध के स्वर उठे, लेकिन आचार्यश्री ने इन परिस्थितियों को संवाद का अवसर बनाया।

उनकी कृति 'अग्नि परीक्षा' को लेकर भी व्यापक विरोध हुआ। यह विवाद राजस्थान और मध्यप्रदेश में श्रमण संस्कृति तथा वैष्णव संस्कृति के बीच तनाव का रूप लेने लगा। परिस्थितियाँ इतनी गंभीर हुईं कि प्रवचन पंडाल तक जला दिया गया। ऐसी विषम परिस्थिति में भी अहिंसा के महाव्रती आचार्यश्री तुलसी ने शांति का मार्ग नहीं छोड़ा। लोकनायक जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में अंततः पुस्तक वापस लेकर उन्होंने विरोधियों के हाथ से विरोध का एक बड़ा आधार ही छीन लिया।

G. सामाजिक परिवर्तन और नई प्रवृत्तियाँ :

तेरापंथ समाज में 'नया मोड़' के नाम से सामाजिक परिवर्तन का अभियान हो अथवा अस्पृश्यता निवारण का कार्यक्रम—स्वाभाविक रूप से इन प्रयासों के विरोध में भी स्वर उठे। लेकिन वे जानते थे कि सामाजिक परिवर्तन का मार्ग सहज नहीं होता। रूढ़ियाँ अपनी जगह छोड़ने में समय लेती हैं और नई सोच को स्वीकार करने में समाज को परीक्षा से गुजरना पड़ता है। आचार्यश्री इन संघर्षों में सोने की तरह तपकर निखरते गए।

H. उनके काल में अनेक संस्थाओं और कार्यकारी उपक्रमों का विकास हुआ :

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान, अणुव्रत विश्व भारती, अणुव्रत न्यास, नियोजन मंडल और प्रेक्षा विश्व भारती।

इन संस्थाओं और प्रवृत्तियों ने धर्म, शिक्षा, साधना, साहित्य और सामाजिक चेतना के क्षेत्रों में नए आयाम खोले। इन सबके विकास के दौरान भी चुनौतियाँ कम नहीं थीं, लेकिन आचार्यश्री की प्रेरणा और दूरदृष्टि ने तेरापंथ के चमन को अनेक रंगों और सुगंधों से समृद्ध किया।

उनके अवतरण दिवस पर उस विलक्षण युगपुरुष के श्रीचरणों में श्रद्धासिक्त एवं भक्तिभावपूर्ण सादर नमन!



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

सत्य की राह पर निर्भीक पथिक : सिद्धांतों से कभी न समझौता करने वाला महापुरुष!

निज पर शासन : फिर अनुशासन–आचार्य तुलसी का महान नेतृत्व

● साध्वी रौनक प्रभा ●

प्रस्तावना : युगपुरुष और अनुशास्ता आचार्य तुलसी :

प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक या राजनैतिक संगठन का विकास उसके अनुशासन पर निर्भर करता है। आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ की धरती पर भोर की किरण बनकर उतरे, धूप की भाँति खिले और प्रचंड सूर्य की भांति तपते हुए विश्व के अंधकार को उजालों से भर दिया।

A. आचार्य तुलसी का कठोर एवं स्वस्थ अनुशासन :

आचार्य तुलसी जन्मजात सिद्ध अनुशास्ता थे। वे जानते थे कि कठोर अनुशासन का प्रयोग जीवन में स्वयं अनुशासित रहकर ही किया जा सकता है। अपने साठ वर्षों के आचार्य काल में उन्होंने अनेक बार कठोर १. अनुशासनात्मक निर्णय लिए:

संघ विच्छेद की ऐतिहासिक घटना (विक्रम संवत २००१):

वि.सं. २००१ में मुनि शक्तमल जी का चातुर्मास राजगढ़ में था। राजगढ़ चातुर्मास के दौरान उनसे कुछ गलतियाँ हुईं। जब आचार्य तुलसी को इसकी जानकारी मिली, तो वे छापर पधारे और शक्तमल जी को समझाया। परंतु शक्तमल जी ने अपनी गलती स्वीकार नहीं की। मार्गशीर्ष के महीने में सूर्यास्त साढ़े पाँच बजे हो गया था। प्रतिक्रमण के लिए सब शाम सात बजे बैठे। श्रावकों एवं सहवर्ती संतों ने सारी बात रखी, फिर भी शक्तमल जी ने अपना प्रमाद स्वीकार नहीं किया। बड़े संतों के समझाने पर भी जब वे नहीं माने, तो अंततः रात डेढ़ बजे 'संघ विच्छेद' का कठोर निर्णय लिया गया।

२. प्रशिक्षण एवं अर्हत् वंदना :

जैन विश्व भारती के भिक्षु विहार (प्रज्ञालोक) में आचार्य तुलसी ने 'अर्हत् वंदना' के संदर्भ में निर्देश दिया कि अर्हत् वंदना में संघ की अनिवार्य उपस्थिति होनी चाहिए। इसमें पूरी जागरूकता, भावक्रिया, वंदनासन, एक लय, एक स्वर और एकाग्रता होनी चाहिए।

जब कुछ साधुओं ने कहा कि लोग अर्हत् वंदना में आते नहीं हैं, तो आचार्य तुलसी ने फरमाया— 'लोग क्यों आएँगे? क्या कभी उनमें इसके प्रति आकर्षण पैदा किया? क्या कभी उन्हें अच्छे ढंग से प्रेरणा दी? अर्हत् वंदना से शांति मिलती है और आनंद का अनुभव होता है। जब दस-दस हजार की रैली कर सकते हैं, तो अर्हत् वंदना में भी लोगों का आकर्षण पैदा करें।' यहाँ आचार्य तुलसी प्रशिक्षक से प्रशासक बन गए। सभी साधुओं ने संभलकर उनकी प्रेरणा को आत्मसात् किया।

3. श्रावक समाज पर अनुशासन:

आचार्य तुलसी ने साधु-साध्वियों के साथ-साथ श्रावक समाज को भी अनुशासित किया। मेवाड़ यात्रा के दौरान अनेक क्षेत्रों में चल रहे मतभेदों व झंझटों को समाप्त करने के लिए उन्होंने कठोर रुख अपनाया। उस अनुशासन से पारस्परिक वैमनस्य मिट गया।

B. वात्सल्यपूर्ण व्यवहार और अनुशासन का समन्वय :

आचार्य तुलसी की एक आँख में अनुशासन था, तो दूसरी आँख में वात्सल्य का अजस्र स्रोत बहता था।

1. पाली प्रवास का प्रसंग :

पाली प्रवास के दौरान एक रात्रि आचार्य तुलसी ने मुनि नथमल जी (आचार्य महाप्रज्ञ जी) से फरमाया— 'इस बार मेरा चित्त बहुत प्रसन्न है। साधु-साध्वियों को सायंकाल उष्ण (गर्म) आहार और वस्त्र प्रक्षालन की छूट मिलने से सभी को प्रसन्नता हुई होगी। आचार्य होने के नाते मैं स्वयं उष्ण आहार करता था, पर साधु-साध्वियों को ठंडा भोजन मिलता था—इस बात से मेरा मन बेचैन रहता था।' आचार्य तुलसी संघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति अपार वात्सल्य का भाव रखते थे।

2. उत्साहवर्धन एवं प्रमोद भावना :

आचार्य तुलसी के प्रत्येक पट्टोत्सव, दीक्षा दिवस एवं जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित होते थे। साधु-साध्वियों की नई विद्या युक्त प्रस्तुतियों पर वे वात्सल्य का अमृत उंडेलते हुए कल्याणक बख्शते थे और भरी परिषद में उनका उत्साहवर्धन करते थे।

राजनगर मर्यादा महोत्सव के बाद विदाई गोष्ठी में आचार्य तुलसी ने फरमाया—

'सब साधु-साध्वियाँ मेरे अवयव (अंग) हैं। उनके लिए मेरा पूरा जीवन भी खप जाए, तो मुझे कोई चिंता नहीं। मेरे मन में सबके प्रति प्रमोद भावना है।'

C. शिष्य निर्माण: एक कुशल शिल्पी का श्रम :

आचार्य तुलसी की पाठशाला के प्रथम छात्र थे मुनि नथमल जी। पाठशाला के छात्र बनते समय आचार्यश्री को कल्पना नहीं थी कि उनमें कोई विलक्षणता है, परंतु एक बात प्रभावक थी—वह था 'सहज समर्पण'। आचार्य महाप्रज्ञ के निर्माण में उनका समर्पण ही सर्वोपरि रहा।

1. अध्ययन और साहित्य सृजन:

बीकानेर चातुर्मास में संस्कृत काव्य साहित्य का अध्ययन शुरू हुआ। वि.सं. २००१ में मुनि श्री को कविता, लेख आदि लिखने के लिए प्रेरित किया गया। उन्हें संस्कृत, हिंदी, प्राकृत में बोलने, लिखने और श्लोक बनाने का अभ्यास कराया गया। वि.सं. २००२ के राजगढ़ चातुर्मास में धर्म, लोक-व्यवहार, अहिंसा आदि पर साहित्य सृजन का कार्य शुरू हुआ। वि.सं. २००३ में वक्तृत्व कला के विकास व संस्कृत में धाराप्रवाह बोलने का अभ्यास कराया गया।

2. पाठ्यक्रम का निर्माण :

साधु-साध्वियों के अध्ययन हेतु तेरापंथ धर्मसंघ में कोई निश्चित पाठ्यक्रम नहीं था। आचार्य तुलसी के निर्देश पर मुनि नथमल जी ने व्यवस्थित पाठ्यक्रम तैयार किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैसे सर्वश्रेष्ठ शिष्य बने जो आचार्य तुलसी के चिंतन के सफल भाष्यकार थे।

D. आस्था से नेतृत्व तक: महाश्रमण यात्रा :

'दृष्टिवान गुरु की पारखी नज़रें शिष्य के वर्तमान में ही उसके देदीप्यमान भविष्य का दर्शन कर लेती हैं।'

मुनि मोहन से मुनि मुदित और महाश्रमण की यह यात्रा आचार्य तुलसी की ही असीम कृपा और प्रेरणा की देन है। आचार्य तुलसी मुनि मुदित के बारे में फरमाते थे— 'मुनि मुदित अनाकांक्ष, अनासक्त, सहज और अपनी धुन में मस्त रहनेवाला साधु है। यह संघ के लिए भावी आशा का केंद्र बनेगा।'

ऐसे महान गुरु की अमृत वाणी शिष्य के भीतर ऊर्जा का संप्रेषण करती है और उसके स्वर्णिम व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

उपसंहार : आचार्य तुलसी का जीवन 'निज पर शासन : फिर अनुशासन' के महान सूत्र की जीवंत अनुकृति था। वे कठोर अनुशासक होने के साथ-साथ वात्सल्य के अगाध सागर थे।

आचार्य श्री तुलसी के दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

● साध्वी योगक्षेम प्रभा ●

प्रस्तावना : एक सहज और जादुई परिचय :

अमल-धवल परिधान, आकर्षक मुखमुद्रा और तेजस्वी आभामंडल के साथ जब आचार्य श्री तुलसी का पदार्पण होता, तो जनता की भीड़ उमड़ पड़ती। उनका परिचय जानने की सहज जिज्ञासा मुखर हो जाती। उनका स्वयं का परिचय देने का भी अपना अंदाज था।

A. मैं मानव हूँ : शाश्वत युगबोध का परिचय :

आचार्य श्री तुलसी की दक्षिण यात्रा के दौरान कन्याकुमारी के आसपास ग्रामीण लोग कुतूहल से उन्हें निहारते और पूछते—'आप कौन हैं?'

परिचय चतुष्टयी : गुरुदेव ने जिस रूप में परिचय दिया, वह उनके व्यापक चिंतन का परिचायक था। उन्होंने कहा—'मैं सर्वप्रथम मानव हूँ, फिर धार्मिक हूँ, फिर जैन हूँ, फिर तेरापंथ का आचार्य हूँ।'

इस परिचय चतुष्टयी को जनता ने आश्चर्य से सुना और भावविभोर हो गई। उन्होंने मानव को केंद्र में रखा, शेष पहचान परिधि बन गई। करीब 60 वर्ष पूर्व दी गई उनकी परिचय की शब्दावली एक शाश्वत युगबोध है।

B. सबसे बड़ा तीर्थ: मनुष्य और उसकी आंतरिक शक्ति :

आचार्य श्री तुलसी बिहार प्रांत में यात्रायित थे। प्रवचन के उपरांत स्थानीय व्यक्ति ने प्रश्न किया—'आप हिंदू हैं या मुसलमान?'

जन्मना मानव और आत्म-साधनाः आचार्य श्री ने उत्तर दिया—'भाई! मैं हिंदू भी नहीं हूँ, क्योंकि मेरे सिर पर चोटी नहीं है। मैं मुसलमान भी नहीं हूँ, क्योंकि मैं इस्लाम की परंपरा में जन्मा नहीं हूँ। मैं जन्मना मानव हूँ। अपने आपको जीतने का प्रयास करता हूँ, इसलिए जैन हूँ।'

मानव का गिरता आसनः उनके अनुसार सबसे बड़ा तीर्थ मनुष्य है। सब तीर्थों का निर्माण उसकी आंतरिक शक्ति से होता है। वर्तमान में यह सबसे बड़ी विडंबना है कि मनुष्य का आसन सबसे नीचे हो गया है। मानव और मानवता के मूल्यांकन के स्थान पर पद, प्रतिष्ठा, प्रभावकता और आर्थिक प्रगति हावी है। यही वजह है कि समस्याओं का ग्राफ निरंतर ऊँचा हो रहा है।

आचार्य श्री तुलसी ने करीब एक शताब्दी पूर्व ही आगाह करते हुए कहा था—

मानव-मानव की मानवता आज बनी असहाय है,
भोगवाद के क्रूर थपेड़ों से वह मूर्च्छित प्रायः है,

C. शीर्षस्थ है नैतिकताः धर्म की पृष्ठभूमि और निष्पत्ति :

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से नैतिक क्रांति की। उन्होंने नैतिकता को सर्वाधिक महत्त्व दिया। उन्हें इस तथ्य पर बड़ा आश्चर्य होता था कि आदमी धार्मिक तो है, पर ईमानदार नहीं है।

धार्मिकता और नैतिकता का अंतः सम्बन्ध :

–यदि कोई धार्मिक व्यक्ति नैतिक न हो, तो वह धार्मिक कैसे हो सकता है?

–आचार्यश्री का स्पष्ट मत था कि नैतिकता धर्म की पृष्ठभूमि भी है और निष्पत्ति भी। उन्होंने नैतिकता को धर्म की पहली कक्षा में प्रतिष्ठित किया।

–हिंसा, आतंकवाद, नशा, अपराध, भ्रष्टाचार, मिलावट, आर्थिक वैषम्य और जातिवाद जैसे ज्वलंत प्रश्न राष्ट्रीय चरित्र को खोखला कर रहे हैं।

–जब धर्म के साथ नैतिकता का अंतःसंबंध होगा, तभी समाज, राष्ट्र और विश्व का नव-निर्माण संभव होगा।

D. समाधान है नैतिकता: अंतःपीड़ा और गीत का स्वर :

आचार्य श्री तुलसी के मन और मस्तिष्क में नैतिकता की गूँज थी। उन्होंने नैतिकता को व्यापक रूप में अनुभव किया। प्रत्येक धर्म और संप्रदाय की उपासना-पद्धति, रहन-सहन और खान-पान भिन्न हो सकता है, पर चरित्र-धर्म नित्य धर्म है और नैतिकता उसकी फलश्रुति है।

अन्तर पीड़ा की अभिव्यक्तिः यही वजह है कि उन्होंने जैन, बौद्ध, हिंदू, मुस्लिम, सिख या ईसाई बनने से पूर्व नैतिक बनने की प्रेरणा दी। अपनी अंतरपीड़ा व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा—

धार्मिक है पर नहीं कि नैतिक बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का यह कैसा अभिनय है,
इस उलझन का धर्मक्रांति ही है कमनीय किनारा॥

E. कालातीत है दिशाबोध और वर्तमान परिप्रेक्ष्य :

आचार्यश्री तुलसी का यह दिशाबोध कालातीत है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है।

वर्तमान धार्मिक परिदृश्य का यथार्थः

आज धार्मिक आयोजनों, मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों और ध्यान केंद्रों में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। प्रत्येक धर्म के पर्वों में उमड़ती भीड़ धार्मिक अभिरुचि की प्रतीक प्रतीत होती है, तथापि विश्व में नैतिकता का घोर संकट है।

आज धर्म व्यवसाय बन रहा है। शिक्षक पेशेवर बनते जा रहे हैं, डॉक्टरों का धर्म मजबूरी का लाभ लेना प्रतीत हो रहा है, धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी रील्स और फोटोज अपलोड करने की होड़ में हैं, और धर्मगुरु धर्म की मार्केटिंग कर रहे हैं। प्रदर्शन अधिक है, दर्शन और सिद्धांत कम हैं। ऐसे में आचार्यश्री तुलसी के विचार घोर अंधकार में रोशनी भरने वाले हैं।

इस प्रकार, आचार्यश्री तुलसी समन्वय के सूत्रधार, मानव धर्म के व्याख्याता और सार्वभौम धर्म के महान प्रवक्ता एवं प्रयोक्ता थे। ऐसे महान युगपुरुष को अंतहीन नमन!



संस्कारों की अमर पाठशाला : ज्ञानशाला के रूप में आचार्य तुलसी का युगांतकारी अवदान!

आचार्य तुलसी : एक युगद्रष्टा की 'क्राइसिस मैनेजमेंट' शैली और सामाजिक एकता का पाठ

● डॉ. मुनि मदन कुमार ●

A. विराट व्यक्तित्व और युग-प्रभाव :

आचार्य श्री तुलसी विराट व्यक्तित्व के धनी थे। उनका कर्तृत्व जादुई था। प्रबल पुरुषार्थ उनका सहचर था। समस्या का समाधान करने में वे सिद्धहस्त थे। वे स्नेह दान करने में निपुण थे तो अवसर आने पर आँख दिखाने में भी नहीं चूकते थे। व्यक्ति परीक्षण की उनकी शैली एवं सोच अद्भुत थी। वे भक्तों के भगवान थे और उनके हृदय में प्रतिष्ठित होने में बहुत दक्ष थे। चुम्बकीय व्यक्तित्व के कारण वे लाखों लोगों के हृदय देवता बन गए।

देश और समाज ने उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व का मूल्यांकन भी किया। जैन-अजैन और निर्धन-धनिक सबके वे पूजनीय और परमादरणीय थे। 'Work is worship' उनके जीवन का अमिट सिद्धान्त था। इसलिये वे श्रम की परवाह नहीं करते थे। वे भूख और नींद को भी गौण कर सकते थे। उनके लिये संघ हित और राष्ट्र हित प्रमुख था। राजनीतिज्ञों और बुद्धिजीवियों में उनकी गहरी छाप थी।

परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने सन् 1987 का चातुर्मास दिल्ली में किया। सौभाग्य से मुझे (मुनि मदन कुमार को) भी साथ में रहने का अवसर मिला। उस प्रवास काल में आकाशवाणी के महानिदेशक अमृत राव शिन्दे के एक महत्त्वपूर्ण विभाग ने आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ की एक ऐतिहासिक वार्ता रिकॉर्ड की थी, जिसका उद्देश्य था कि ऐसे राष्ट्रीय पुरुषों की वाणी और संदेश को चिर भविष्य के लिये सुरक्षित रखा जा सके।

B. कलह-निवारण और सरदार शहर का ऐतिहासिक समझौता :

आचार्य श्री तुलसी समाज को निर्विवाद देखने के पक्षधर थे। बीसवीं सदी के प्रारंभ में थली प्रदेश के तेरापंथ धर्मसंघ में एक विचित्र कलह पैदा हुआ था। वि. सं. 1982 में पूज्य कालूगणी के युग में जो झगड़ा (विलायती विवाद) प्रारंभ हुआ था, उसने पूरे ओसवाल समाज को दो-फाड़ कर दिया था, जिससे रोटी-बेटी के व्यवहार तक बंद हो गए थे।

आचार्य श्री तुलसी ने समय-समय पर अनेक स्थानों के ऐसे झगड़ों को मिटाया। पूज्यप्रवर ने वि. सं. 1999 में चूरू में चातुर्मास किया, तब प्रयास पूर्वक दोनों पक्षों के मध्य खमत-खामणा करवाए।

1. सरदार शहर का ऐतिहासिक प्रसंग : वि.सं. 2018 में आचार्यश्री सरदार शहर पधारे। पुराने मतभेदों को सुलझाने का प्रयास किया गया, किंतु जब पारस्परिक समझौते की संभावना कम रही, तो आचार्य श्री ने दबाव बढ़ाने के लिये सप्ताह से पूर्व ही विहार कर देने का भाव व्यक्त किया। उस निश्चय ने इंजेक्शन जैसा कार्य किया।

2. पंचों का निर्णय : दोनों ही पक्षों ने चार-चार पंच नियुक्त किये। उन्होंने जो प्रारूप बनाया, उसकी भाषा इस प्रकार थी—'आचार्य श्री तुलसी के उपदेश से दोनों पार्टियों ने खमत-खामणा किया। अब वि.सं. 1982 के झगड़े से संबंधित सब लिखत रद्द समझे जाएंगे।'

3. सुखद परिणाम : सेठ सुमेरमलजी दुगड़ के घर सर्वसम्मति से पुराने लिखतों को भेंट कर देने का निर्णय हुआ, जिससे झगड़े के बीज ही समाप्त हो गये। दूसरे दिन (24 दिसंबर, 1961) प्रातःकालीन प्रवचन में हजारों लोगों की उपस्थिति में गोठीजी ने फैसला पढ़कर सुनाया और दोनों पक्षों ने प्रसन्न वातावरण में खमत-खामणा किया। उपस्थित पंजाब के मंत्री करतार सिंहजी ने भाव-विभोर होकर कहा—'मैं आज इस संगत का आभारी हूँ। क्षमा का यह पावन दृश्य मेरे लिये अविस्मरणीय है। देश के लोग इससे अमन-चैन को आगे बढ़ाने की शिक्षा ले सकते हैं।'

Conclusion and Inspiration :

कलह-निवारण और समस्या-समाधान के ऐसे प्रसंग एकत्रित किये जाए तो एक महत्त्वपूर्ण महाग्रंथ बन सकता है। व्यक्ति सुधार और समाज सुधार के लिये आचार्यश्री ने बहुत पुरुषार्थ किया है। उनका पवित्र संदेश आज भी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैः

लक्ष्य है ऊँचा हमारा, हम विजय के गीत गाएं। चीरकर कठिनाइयों को, दीप बन हम जगमगाएं॥
तेज सूरज-सा लिए हम, शुचिता शशि-सी लिए हम, पवन-सा गतिवेग लेकर चरण ये आगे बढ़ाएं॥

माटी का दीप जले न जले मन का दीप जले

● साध्वी सुरेखा ●

श्रमण भगवान महावीर का दर्शन अनेकान्त दृष्टि का आधार स्तम्भ है जिसमें अध्यात्म आचार और व्यवहार का त्रिवेणी संगम सतत प्रवाहित है। उस दर्शन का निरूपण स्यादवाद शैली से करते हुए उन्होंने जीवन के विविध पहलुओं को छुआ। क्योंकि हर व्यक्ति का जीवन विविध पड़ावों से गुजरता है। जीवन के यात्रा पथ में अनेक अवरोधक तत्व बीच में खड़े हो जाते है। हालांकि साधना की संकरी पगडंडियों से समाधि के राजमार्ग पर चलते हुए परम लक्ष्य तक पहुंचने का उद्देश्य एक साधक का होता है। लेकिन आधि, व्याधि और उपाधियों से कई घुमाव, अटकाव, भटकाव व्यक्ति को गुमराह कर देते है, और वही से जीवन शैली विषैली हो जाती है। आग्रह का विपर्यास सिद्धांत और आचरण में बहुत बड़ी दूरी और व्यवहार की विसंगतियां पूरे व्यक्तित्व के दर्पण को ही घूंघला बना देती है। ऐसे समय में श्रमण भगवान महावीर का दर्शन संसार के समस्त प्राणियों के लिए चिन्तन के नये क्षितिज और मूर्च्छित मन को जागरण की दिशा देता हैं।

भगवान महावीर का दर्शनः समता का दिग्दर्शन : भगवान महावीर ने इस संदर्भ में कहा कि मन की अनंत पर्याये है उसमें प्रतिक्षण बदलाव होता रहता है। अध्यात्म और स्व दर्शन के लिए मन की समता जरूरी है और साथ-साथ में शरीर को साथ लेना यानि सहिष्णुता की चेतना को भी जागृत करना साधक का लक्ष्य बने। इसके लिए भगवान महावीर ने पहला प्रयोग अपने ऊपर ही किया। चंडकोशिक नाग ने कांटा तो क्षमा की मूर्ति बन गए उनका चित्त उस समय समता के साम्य भाव से ओतःप्रोत था। दूसरा उदाहरण जब संगम ने बीस मारणान्तिक कष्ट दिये तो प्रभु महावीर ने यही सोचा कि कही यह मेरे निमित से संसार में डूब न जाय। इस संगम का भी उद्धार हो, सद्भाव जगे और विषमता की खाई पार करें। पूर्वाचार्यों ने भगवान महावीर की स्तुति करते हुए यही बात कही :

'देह प्रसादो रसना जयेन,
मनः प्रसादः समता श्रयेण।
दृष्टि प्रसादो ग्रह मोचनने
पुण्यत्रयीयं मम देव भूयात।'

प्रभो! रसना विजय के द्वारा मेरा शरीर प्रसन्न रहे। समता के द्वारा मेरा मन प्रसन्न रहे, आग्रह मोचन के द्वारा मेरी दृष्टि प्रसन्न रहे। प्रभो! यह पुण्यत्रयी सदा मेरे साथ रहे।

अतः समता धर्म विषमता के युग से व्यक्ति से लेकर समष्टि एवं प्राणीमात्र के साथ मैत्री और समत्व भाव जगाने की बात कहता है। भगवान महावीर ने अपने साधना काल के पूरे साढ़े बारह वर्ष तक प्रिय अप्रिय, लाभ-अलाभ, मान-अपमान आदि के क्षणों में प्रतिक्षण अपने को साधते रहे और अन्त में दीर्घ साधना का नवनीत समता धर्म सम्पूर्ण विश्व को दिया।

व्यवहार और स्व पहचान का बोध : श्रमण महावीर ने निश्चय और व्यवहार दोनों को एक साथ जोड़कर आगे बढ़ने का निर्देशन दिया। दीक्षा से पूर्व व्यवहार को कभी उन्होंने गौण नहीं किया। भाई नन्दीवर्धन के आग्रह पर दो वर्ष साधना करते हुए घर पर और रहे। महलों में रहकर भी उन्होंने संन्यासी जैसा जीवन जीया। सर्वज्ञ बनने के पश्चात तीर्थ की स्थापना की और उस समय साधना के दो मार्ग बताये पहला अनगार धर्म दूसरा आगार धर्म। उस समय तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रभु के साधु (पचंवर्ण) पांच रंगों के वस्त्र धारण करते थे, पर महावीर ने तीर्थ प्रवर्तन के साथ सचेल और अचेल दोनों धाराओं का समर्थन किया। सचलेक साधु श्वेत वस्त्र धारण करे वहां अचेलक निर्वस्त्र रहकर साधना करने में स्वतन्त्र है। उनकी अवधारणा के अनुसार बस्त्र व्यवहार के पोषक और स्व पहचान के निमित्त है। श्वेत वस्त्र में परिवेष्टित साधक का मन 'समणोऽहं, समणोऽहं' की सतत स्मृति से भावित रहता है। ऊपर की वेशभूषा उसे श्रामण्य की और बढ़ने में सहायक बनती है।

इसी संदर्भ में भगवान महावीर के दर्शन में आगार धर्म पर चलने वाले श्रावकों के लिए भी बारह व्रत के अन्तर्गत भोगोपभोग का सीमाकरण संयम और सादगीकरण का दिशा दर्शन है। साधुत्व अथवा श्रावकत्व की पहचान के लिए बाह्य धर्मोपकरणों की उपयोगिता साबित करते हुए महावीर ने उनकी संख्या प्रमाण पर भी कल्पाकल्प का बोध दिया। जीवन की हर आवश्यकताओं पर व्यवहार और निश्चय दोनों दृष्टियां साथ जुडी हुई है। अहिंसा की दृष्टि से यत्ना पूर्वक बोलने, चलने, खाने-पीने सोने-उठने की बात कहीं तो अन्तिम सोपान चौदहवें गुणस्थान में पूर्ण योग निरोध अवस्था का प्रतिपादन किया। भगवान महावीर ने उपदेश भी व्यवहार दृष्टि को सामने रखते हुए दिया। जब श्रमणोपासिका जयन्ति ने पूछा प्रभो! जीवों का सोना अच्छा या जागरण अच्छा? प्रभु ने बताया उन जीवों का सोना अच्छा जो प्रमाद हिंसा में आकंठ डूबे हुए है और उन जीवों का जागना अच्छा जो धर्म ध्यान में रत है।

उपशम का आदर्श :

भगवान महावीर के उपदेशों में सर्वत्र उपशम भावों की प्रधानता रही है। जीवन का सार और सत्य प्रगट करते हुए उन्होंने कहा 'उवसम सारं खु सामण्णं' साधना का सार उपशम भाव है। एक साधक ने अपनी मानसिक कमजोरी के निवारण हेतु पूछा प्रभो! मेरे कषाय का उदय प्रबल है न चाहते हुए भी क्रोध आ जाता है। इसका निवारण कैसे करूं? भगवान महावीर ने कषाय मुक्ति का उपाय बताते हुए कहा 'उवसमेण हणे कोहं' अर्थात् उपशम के द्वारा क्रोध को जीतो। महावीर के कानों में कीलें लगाई गई पैरों में ग्वालों ने खीर पकाई इसके अतिरिक्त शूलपाणी यक्ष ने एक रात्रि में 20 (बीस) मारणान्तिक कष्ट दिये। ऐसे महान् कष्ट देने वालों पर तनिक भी आवेश न आए यह उनके उपशम भावों का बेजोड़ उदाहरण है।

श्रमण पृथ्वी के समान सहनशील, क्षमाशील बने। उनका जीया हुआ सत्य आज ढाई हजार वर्षों के पश्चात भी मानवीय चेतना को झकझोर रहा है। उनका दिखाया अध्यात्म का आलोक सघन अन्धकार में ज्योति किरण बनकर अन्तर चेतना को जगाए । निर्वाणोत्सव पर माटी के दीप भले जले या न जले किन्तु मन का दीप जरूर जले। अज्ञान का अन्धकार तभी दूर होगा, जब हमारा मन का दीप जलेगा। समता का स्नेह और विवेक की बाती जलाकर अखण्ड ज्योत से निर्वाणोत्सव मनायें यही काम्य है।



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

पृष्ठ 26 का शेष

पुरुषार्थ और समता से ही निखरता है...

2. नियतिवाद और पारिणामिक भाव :

भाग्य ज्ञातव्य हो सकता है और नियति थोड़ा और आगे का विषय है। नियति एक प्रकार से पारिणामिक भाव है, जो जैन दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसके बिना दुनिया में कुछ भी नहीं है। नियति पुरुषार्थ का क्षेत्र भी नहीं है, क्योंकि नियतिवाद में सार्वभौमिक नियम निहित होते हैं।

3. असाता में समता और साधना का मार्ग :

यदि आदमी के जीवन में कोई तकलीफ या प्रतिकूलता आ जाए, तो उस समय उसे शांति और समता रखनी चाहिए। यह सोचना चाहिए कि मैंने पूर्व में कोई ऐसे ही कर्म किए होंगे, जिनके विपाक (फल) के कारण आज मेरे असाता का उदय हो रहा है। इस प्रकार भाग्यवाद अच्छे चिंतन में निमित्त बन सकता है कि हमें दूसरों पर आक्रोश नहीं करना चाहिए। कठिनाई के समय में राग-द्वेष से परे हटकर समता से सहन करना चाहिए और ज्यादा धर्म की साधना करने का प्रयास करना चाहिए।

अवधिज्ञान का होना भी अमूर्त भाग्य ही है।

4. मूर्त और अमूर्त भाग्य : आचार्यश्री ने भाग्य के दो रूपों को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि कर्मों के उदय की स्थिति 'मूर्त भाग्य' है, जबकि औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशम भाव 'अमूर्त भाग्य' होते हैं। अवधिज्ञान का होना भी अमूर्त भाग्य ही है। प्रत्येक संसारी प्राणी के पास ये दोनों प्रकार के भाग्य विद्यमान रहते हैं।

'आत्मिक इंटरनेट' का लोकार्पण एवं बीदासर समाज की प्रस्तुतियाँ :

1. चारित्रात्माओं की जिज्ञासा-समाधान :

मुख्य मंगल देशना के उपरांत पूज्य आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों एवं चारित्रात्माओं की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का आगम सम्मत समाधान प्रदान किया।

2. 'आत्मिक इंटरनेट' का भव्य लोकार्पण :

मुनि जागृतकुमार जी द्वारा लिखित नव-चिंतन पर आधारित प्रेरणादायी पुस्तक 'आत्मिक इंटरनेट' का जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री के श्रीचरणों में भावपूर्ण लोकार्पण किया गया। पूज्य गुरुदेव ने इस संदर्भ में अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

३. बीदासर समाज की उपस्थितिः आचार्यश्री की पावन सन्निधि में आज बीदासर समाज की विशाल उपस्थिति रही। बीदासर समाज की ओर से बजरंग बोथरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बीदासर समाज तथा बीदासर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुमधुर गीतों की सुंदर प्रस्तुतियाँ देकर गुरुचरणों में अपनी भाव-वंदना अर्पित की।

पृष्ठ 3 का शेष

कठिनाइयां चाहे जितनी आए...

1. योग सत्य से योग की विशुद्धि: आगम में यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया कि 'योग सत्य से अर्थात् मन, वचन और काय की सच्चाई से जीव क्या प्राप्त करता है?' शास्त्र सम्मत समाधान देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि योग सत्य केराण जीव अपने योगों को पूरी तरह विशुद्ध और निर्मल बना लेता है।

2. सत्य की त्रिविध साधना : सत्य शब्द अत्यंत महिमामशाली है। सच्चाई केवल बाह्य शरीर या वाणी तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि मन के स्तर पर भी सच्चाई का वास होना चाहिए। मनुष्य को मन से भी अयथार्थ या कुटिल विचारों में नहीं उलझना चाहिए, वाणी से असत्य या अनर्गल नहीं बोलना चाहिए और शरीर से भी कोई अयथार्थ या छलावायुक्त चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

3. छलना और धोखाधड़ी से मुक्ति : आचार्यश्री ने विशेष बल देते हुए फरमाया कि आदमी को जीवन में धोखाधड़ी और छल-कपट से बचने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। यहाँ तक कि सत्य के आचरण के साथ भी किसी प्रकार की छलना नहीं होनी चाहिए।

४. शरीर और वाणी का श्रेष्ठ उपयोगः वाणी की सार्थकता इसमें है कि वह हमेशा अच्छी बात कहे, उत्तम व्याख्यान दे और दूसरों को उचित ज्ञान प्रदान करे। इसी प्रकार, मनुष्य को अपने शरीर का उपयोग दूसरों पर उपकार करने में करना चाहिए। जो लोग सेवा के अपेक्षणीय (ज़रूरतमंद) हैं, उनकी सेवा-सुश्रुषा में शरीर को लगाना चाहिए। शरीर की वास्तविक शोभा और सार्थकता उसके उत्तम व परोपकारी उपयोग में ही निहित है।

सत्य के मार्ग की निष्ठा और शाश्वत विजय :

सत्य के प्रति अटूट आस्थाः हमारे मन, वचन और शरीर की प्रत्येक चेष्टा में सच्चाई के प्रति गहरी निष्ठा होनी चाहिए। आचार्यश्री ने जीवन का अकाट्य सत्य उजागर करते हुए फरमाया कि सत्य और सच्चाई के मार्ग पर चलने में सांसारिक कठिनाइयां, बाधाएं और संकट अवश्य आ सकते हैं, परंतु अंततः विजय केवल और केवल सत्य की ही होती है। इसलिए जीवन में सच्चाई के प्रति हमारी अडिग आस्था होनी चाहिए।

प्रेक्षाध्यान शिविर उपसंपदा एवं अभातेयुप CPS ट्रेनर कॉन्क्लेव :

> शरीर की वास्तविक शोभा और सार्थकता केवल भोग में नहीं, बल्कि उसे सेवा और परोपकार के कार्यों में लगाने में है।
>
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

प्रेक्षाध्यान के शिविरार्थियों को शिविर की पावन उपसंपदा प्रदान की गई।

1. अभातेयुप सी.पी.एस. ट्रेनर कॉन्क्लेव का मंचीय उपक्रम :

आज के कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (अभातेयुप) के तत्वावधान में आयोजित 'CPS ट्रेनर कॉन्क्लेव' का भव्य और गरिमामयी मंचीय उपक्रम संपन्न हुआ। इस विशेष अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन माण्डोत एवं CPS अकादमी के चीफ ट्रेनर अरविंद माण्डोत ने अपनी प्रेरक और ऊर्जावान अभिव्यक्तियां दीं।

2. पाथेय और संचालन :

पूज्य आचार्यश्री ने कॉन्क्लेव के समस्त संभागियों को अपने ओजस्वी वचनों से पावन पाथेय प्रदान किया। इस सुंदर मंचीय कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी संचालन CPS अकादमी के कॉन्वीनर दिनेश मरोठी ने किया।

कार्यक्रम के दौरान नेहल सुकलेचा ने आचार्यश्री के श्रीचरणों में संस्था में 'बोधार्थी' के रूप में प्रवेश करने की विनम्र प्रार्थना अर्पित की, जिसे आचार्यश्री ने आशीर्वाद प्रदान किया।

पृष्ठ 2 का शेष

कहे कबीरा वही बड़ा...

3. अनुद्धत भाव और ८ मदस्थानों से मुक्ति : आगमिक प्रश्न 'मार्दव से जीव क्या प्राप्त करता है?' का समाधान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि मार्दव से जीव अनुद्धत भाव (अहंकार-रहित अवस्था) को प्राप्त करता है।

जो अनुद्धत भाव से संपन्न होता है, वह मृदु साधक आठ मदस्थानों (जाति, कुल, बल, रूप, तप, श्रुत, लाभ और ऐश्वर्य के मद) से सर्वथा दूर रहता है। साधु-साध्वियों एवं गृहस्थों को अपने जीवन में विनयशीलता और मृदुता का निरंतर विकास करना चाहिए।

साहित्य लोकार्पण एवं मंचीय उपक्रम :

1. दो महती कृतियों का लोकार्पण: मुख्य मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की कालजयी कृति 'भीतर की ओर' के अंग्रेजी अनुवाद तथा साध्वी राजीमती जी द्वारा लिखित प्रेरणादायी पुस्तक 'भावना-पथ' का जैन विश्व भारती के प्रमुख पदाधिकारियों द्वारा पूज्य गुरुदेव के चरणों में भावपूर्ण लोकार्पण किया गया।

2. पावन पाथेय व मंगल आशीर्वाद : पूज्य आचार्यश्री ने साहित्य लोकार्पण के संदर्भ में पावन पाथेय प्रदान फरमाया तथा जैन विश्व भारती परिवार व लेखिका को ज्ञान-प्रसार के इस पावन उपक्रम हेतु अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

आत्मविश्वास की नई उड़ान: CPS (Confidence Public Speaking Course) की अद्भुत सफलता :

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत द्वारा CPS के विस्तार और प्रभावों पर संबोधन दिया :

A. CPS की अद्भुत यात्रा और राष्ट्रव्यापी विस्तार :

1. सफर की शुरुआत : 6 मार्च 2017 को विजयनगर से शुरू हुई यह कार्यशाला आज एक विशाल और अनुशासित आंदोलन का रूप ले चुकी है।

2. आंकड़ों में सफलता : अब तक संपूर्ण भारत और नेपाल में कुल 235 कार्यशालाओं का सफल आयोजन किया जा चुका है।

3. सशक्त नेटवर्क : इसके माध्यम से 6,000 से अधिक ग्रेजुएट्स तैयार हुए हैं, और वर्तमान में 115 नेशनल/जोनल ट्रेनर्स अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

B. हर वर्ग तक विस्तार : 'CPS जूनियर्स' से लेकर आदिवासी अंचलों तक :

1. विभिन्न आयु वर्ग : सीपीएस का कार्य केवल वयस्कों तक सीमित नहीं है, बल्कि 'CPS जूनियर्स', 'Who Am I' और 'मधुरम' जैसे विशेष कार्यक्रमों के जरिए यह बच्चों, युवाओं और पूरे परिवार तक पहुँच रहा है।

2. दूर-दराज के क्षेत्रों में प्रभाव : अध्यक्ष महोदय ने बिहार के एक आदिवासी क्षेत्र का विशेष उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे इस कार्यक्रम ने वहाँ के युवाओं का आत्मविश्वास जगाकर उन्हें जीवन की एक नई और सकारात्मक दिशा दी है।

C. जीवन में सकारात्मक परिवर्तन और जन-जन का जुड़ाव :

1. मंच से लेकर मन तक का विकास: यह कार्यक्रम केवल मंच पर बोलने की कला (Public Speaking) तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपे अदम्य आत्मविश्वास को बाहर लाता है।

2. नेपाल का प्रेरणादायी संस्मरण: नेपाल का उदाहरण देते हुए उन्होंने साझा किया कि कैसे एक बुजुर्ग दंपत्ति ने भी इस कार्यक्रम से जुड़कर अपने जीवन में अद्भुत सार्थकता और ऊर्जा का अनुभव किया।

D. भविष्य की दिशा और आध्यात्मिक संस्पर्श :

1.;संतों और मुमुक्षुओं के लिए विशेष सत्र: इस योगक्षम वर्ष के दौरान साधु-संतों और मुमुक्षु बहनों के लिए भी सीपीएस के विशेष सत्र आयोजित किए गए, जो इस कार्यक्रम की व्यापक स्वीकार्यता को दर्शाता है।

2. समर्पण का भाव: उपासक श्रेणी के साथ मिलकर सेवा कार्य करने का अवसर मिलना उनके लिए एक बड़ा और सौभाग्यपूर्ण प्रसाद है।



33 वर्षों बाद फिर वही पावन स्पंदन : साधना की माटी लाडनूं में जीवंत तुलसी-परंपरा!

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आचार्य तुलसी के विचारों की प्रासंगिकता

● मुनि तत्व रुचि 'तरुण' ●

प्रस्तावना :

21वीं सदी में मानव सभ्यता ने तकनीकी और आर्थिक क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। डिजिटल क्रांति ने दुनिया को एक छोटे से गाँव में बदल दिया है और सूचनाओं का आदान-प्रदान सुलभ हो गया है। परंतु, इस भौतिक उन्नति और भागदौड़ भरी जिंदगी के पीछे एक गहरा मानवीय संकट भी छिपा है। आज का मनुष्य आपाधापी, तनाव, अंधी प्रतिस्पर्धा और गिरते नैतिक मूल्यों के दौर से गुज़र रहा है और ऐसे संक्रमण काल में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ के नौवें अनुशास्ता, आचार्य श्री तुलसी (1914-1997) के विचार और दर्शन एक मार्गदर्शक और प्रकाशपुंज की तरह सामने आते हैं। उनके द्वारा प्रवर्तित 'अणुव्रत आंदोलन' और संयम का सिद्धांत आज के डिजिटल एवं भौतिकवादी युग में अत्यंत प्रासंगिक और आवश्यक हो गया है।

A. आज की आपाधापी और डिजिटल युग की चुनौतियाँ :

वर्तमान समय 'डिजिटल युग' के रूप में जाना जाता है। सोशल मीडिया, स्मार्टफोन और इंटरनेट ने जहाँ हमारे जीवन को सुगम बनाया है, वहीं दूसरी ओर इसने कई मानसिक व सामाजिक विकृतियों को भी जन्म दिया है:

1. डिजिटल युग में उपयोगिता : आज सोशल मीडिया हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। इसके माध्यम से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं और दूसरों से जुड़े रहते हैं। लेकिन इसका गलत उपयोग अफवाहें फैलाने, अपमानजनक टिप्पणियाँ करने और दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिए भी किया जाता है। आचार्य तुलसी के सत्य, संयम और जिम्मेदारी के सिद्धांत हमें डिजिटल माध्यमों का सही उपयोग करना सिखाते हैं।

2. मानसिक तनाव और आपाधापी: निरंतर आगे निकलने की होड़ में व्यक्ति शांति और संतोष खो चुका है।

3. नैतिक मूल्यों का ह्रास : स्वार्थपरता, असत्य, भ्रष्टाचार और उपभोक्तावाद के कारण चरित्र और नैतिक मूल्यों का तेज़ी से पतन हुआ है।

4. डिजिटल व्यसन और संवेदनहीनता : डिजिटल स्क्रीन की दुनिया ने इंसान को आपसी वास्तविक संबंधों और संवेदनाओं से दूर कर दिया है।

B. संयम ही जीवन है (डिजिटल एवं भौतिक संयम) :

आज के युग में जहाँ उपभोक्तावाद और अत्यधिक उपभोग (Overconsumption) मुख्य समस्या है, वहीं आचार्य तुलसी का संयम का सिद्धांत यह सिखाता है कि इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती, ऐसे में असीम इच्छाओं की पूर्ति कैसे संभव है?

आत्मानुशासन का महत्त्वः आचार्य तुलसी ने जीवन में संयम को विशेष महत्त्व दिया। आज मनुष्य अधिक धन, अधिक सुविधाएँ और अधिक सफलता प्राप्त करने की इच्छा में कई बार गलत रास्ते अपना लेता है। विद्यार्थी भी मोबाइल और सोशल मीडिया में अधिक समय बिताकर अपनी पढ़ाई से ध्यान हटा लेते हैं।

लक्ष्य की प्राप्तिः ऐसे समय में संयम का सिद्धांत हमें अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना, समय का सदुपयोग करना और अपने कर्तव्यों के प्रति जिम्मेदार बनना सिखाता है। आत्मानुशासन से व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है तथा जीवन में संतुलन बनाए रख सकता है।

> 'आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है, इच्छाओं की पूर्ति संभव नहीं। डिजिटल युग में 'डिजिटल डिटॉक्स' और अपनी ज़रूरतों पर नियंत्रण रखना ही अणुव्रत की मूल भावना है।'

C. चरित्र निर्माण और नैतिक पुनरुत्थान :

आचार्य तुलसी मानते थे कि बिना धर्म और नैतिकता के, शिक्षा एवं धन केवल विनाश की ओर ले जाते हैं। अणुव्रत के नियम व्यक्ति को ईमानदारी, प्रामाणिकता और सत्यवादी बनने की प्रेरणा देते हैं, जिससे समाज में गिरते नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलनः आचार्य तुलसी द्वारा प्रारंभ किया गया अणुव्रत आंदोलन उनके प्रमुख योगदानों में से एक है। अणुव्रत का अर्थ है छोटे-छोटे व्रतों और संकल्पों के माध्यम से अपने जीवन को नैतिक बनाना।

सार्वभौम उद्देश्य : इसका उद्देश्य किसी विशेष धर्म या जाति तक सीमित न रहकर प्रत्येक व्यक्ति में सदाचार, ईमानदारी और आत्मानुशासन की भावना विकसित करना है।

D. सामाजिक सद्भाव, मानवता और पर्यावरण संरक्षण :

वर्तमान समाज में जाति, धर्म, भाषा और विचारों के आधार पर अनेक मतभेद देखने को मिलते हैं। आचार्य तुलसी के विचार हमें सभी मनुष्यों के प्रति समानता, प्रेम और सम्मान का भाव रखने की प्रेरणा देते हैं।

1. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व : यदि हम दूसरों के विचारों का सम्मान करें, विवादों को शांति से सुलझाएँ और संवेदनशील बनें, तो समाज में एकता और भाईचारा बढ़ सकता है। आज वैश्विक स्तर पर जो तनाव, हिंसा और युद्ध का माहौल है, उसमें आचार्य तुलसी का 'अहिंसा और शांति' का संदेश ही एकमात्र समाधान प्रस्तुत करता है।

2. पर्यावरण चेतना : आज जब हमारी पृथ्वी पर्यावरण संकट का सामना कर रही है, तब सीमित संसाधनों के उपयोग के संयम का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें पानी और बिजली का संयम भी करना चाहिए तथा जीवन में भोग-उपभोग का संयम अपनाना चाहिए।

निष्कर्षतः आचार्य तुलसी केवल एक धार्मिक गुरु नहीं, बल्कि एक युगदृष्टा और समाज सुधारक थे। आज की आपाधापी, डिजिटल होड़ और गिरते नैतिक मूल्यों के दौर में उनके विचार किसी रामबाण औषधि से कम नहीं हैं।

मुख्य संदेश (संक्षेप में) :

आत्म-सुधार : व्यक्तिगत स्तर पर छोटे संकल्पों द्वारा समाज में बड़े परिवर्तन की नींव।

आत्मानुशासन : व्यक्तिगत व्यवहार और डिजिटल माध्यमों के उपयोग में संयम आवश्यक है।

सार्वभौमिक दृष्टि : धर्म-संप्रदाय की सीमाओं से परे सर्वजन हिताय के विचार।

सामाजिक समरसता : संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानवता और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देना।

डिजिटल एवं भौतिक संयम : इच्छाओं का नियमन और विवेकपूर्ण उपभोग।

पर्यावरण चेतना : संयमित जीवनशैली अपनाकर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना।

आचार्य श्री तुलसी के दूरदर्शी अवदान : पारमार्थिक शिक्षण संस्था एवं समण दीक्षा

● शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा ●

प्रस्तावना : आचार्य श्री तुलसी का दूरदर्शी विजन :

आचार्य पद पर अपनी-अपनी शिष्य परंपरा में अनेक अभिधान हैं, पर जो महान ज्ञान और चारित्र संपन्न हैं, वे इतिहास में सुदुर्लभ होकर अतिशीघ्र निर्वाण पद तक सुप्रतिष्ठित हो जाते हैं। इस महनीय प्रसंग पर तेरापंथ धर्म संघ के नवमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी को श्रद्धाप्रणत भाव से वंदना करती हूँ, जिन्होंने दो क्रांतिकारी कार्यविधियों—'पारमार्थिक शिक्षण संस्था' और 'समण दीक्षा' को अपनी स्वीकृति एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

जब इनका प्रादुर्भाव हुआ, तब यह श्रावक समाज के नयनों में खटकने वाला दृश्य या कभी न सुना जाने वाला प्रसंग बन गया था। किंतु आज आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आशीर्वाद से वातावरण में आकाश-पाताल का अंतर आ गया है।

A. पारमार्थिक शिक्षण संस्थाः संस्मरण और ऐतिहासिक तथ्य :

मैं ऋजुमना बनकर यह कह सकती हूँ कि मैं स्वयं उस पारमार्थिक शिक्षण संस्था की छात्रा रही हूँ। मुझे यह कहते हुए अतिशय गौरव की अनुभूति होती है कि संवत् 2014 (यानी 69 वर्ष पहले) मैं इस संस्था में गई और लगभग पाँच वर्ष वहाँ रही।

1. शासनमाता कनकप्रभा जी का सान्निध्य : यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी भी उस वक्त पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययनरत थीं (उस समय उनका नाम कलावती बाई था)। मुझे उनके साथ संस्था में रहने का सुअवसर मिला और उनके निर्देशन में बहुत कुछ सीखने को मिला। इस संस्था ने मुझे संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं में निष्णात बनाया।

2. गुरुदेव का आशीर्वाद और परीक्षा परिणाम : दीक्षा लेने के कुछ समय बाद आचार्य श्री तुलसी ने मुझ पर महती कृपा करते हुए अचित हरे गेहूँ के दानों का ग्रास बख्शाया तथा कहा—'देखता हूँ, कैसे उगाओगी?' वे दाने लगभग 20-21 थे। मैंने मन ही मन चिंतन कर अर्थ निकाला कि समय का मैनेजमेंट कर मुझे संस्कृत-प्राकृत भाषा में निष्णात बनना है। कुछ महीने बाद परीक्षा का योग बना, जिसमें प्राकृत व्याकरण में मुझे 100 में से 98 अंक मिले। यह पूज्य प्रवर का ही आशीर्वाद था।

३. आत्मकथा में उल्लेखः यह मेरे जीवन का सौभाग्य था कि परम पूज्य आचार्य प्रवर ने अपनी आत्मकथा में मेरे नाम का उल्लेख किया तथा मुझे दो रजोहरण बक्शीस में दिए। यह जसोल मर्यादा महोत्सव की घटना है, जिसे देखकर वहाँ उपस्थित साधु-साध्वियों को अति आश्चर्य हुआ था। यह सब मात्र 7 क्लास उत्तीर्ण होकर संस्था में आने वाली मुझ पर पारमार्थिक शिक्षण संस्था की ही गरिमा का प्रसाद था।

B. समणी दीक्षा का गौरवशाली विस्तार :

इसी प्रकार समणी दीक्षा का मूल्य भी प्रारंभ में श्रावक समाज की समझ में नहीं आया था। मुमुक्षु बहनों के माता-पिता ने प्रश्न किया था—'क्या होती है समणी दीक्षा? हम अपनी बेटियों को यह दीक्षा नहीं देंगे।'

> आचार्य अर्हतों के प्रतिनिधि होते हैं— यह कोई सामान्य बात नहीं है, अपितु अतिशय गुणानुवाद पूर्ण शब्दावली है।

1. विदेशों में धर्म प्रभावना : पर आज समणी दीक्षा का महत्त्व सभी को समझ आ गया है। समणी वृंद विदेश की धरती पर प्रवासित श्रावक समाज को पुनः संघ समर्पित करने का अति उत्तम कार्य कर रहा है।

2. प्रथम श्रेणी की विभूतियाँ : उल्लेखनीय है कि वर्तमान साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने समणी दीक्षा लेकर विदेश की धरती पर बहुत उपकार किया है। आप समणी दीक्षा लेने वाली बहनों में प्रथम श्रेणी में हैं तथा साध्वीप्रमुखा भी प्रथम हैं।

उपसंहार : इस प्रकार, परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के अनेक प्रमुख अवदानों में 'पारमार्थिक शिक्षण संस्था' तथा 'समण दीक्षा' तेरापंथ धर्म संघ के अत्यंत सुचिन्तित और गरिमामय ऐतिहासिक अवदान हैं, जिन्होंने धर्मसंघ को वैश्विक ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं।



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026

आडंबरों पर प्रहार, संस्कारों का परिष्कार : जैन संस्कार विधि से आचार्य तुलसी की क्रांतिकारी देन!

हृदय परिवर्तन का महाअभियानः अणुव्रत से व्यक्ति और राष्ट्र का निर्माणः

● शासनश्री साध्वी मंजूरेखा ●

A. प्रस्तावना : दीदेरो की तलाश और आचार्य तुलसी का प्रादुर्भाव

बात बहुत पुरानी है। उस समय नेपोलियन असफलता के साथ काम कर रहा था। फ्रांस के सुप्रसिद्ध दार्शनिक दीदेरो भरी दुपहरी में, हाथ में लालटेन लेकर सड़क पर घूम रहे थे। लोगों को आश्चर्य हुआ और कुतूहल भी। एक गंभीर दार्शनिक और विचारक के रूप में दीदेरो की ख्याति थी। उनको दोपहर की खुली धूप में, लालटेन लेकर चलते देख, उनकी दिमागी हालत पर संदेह होने लगा। आगे-आगे जलती हुई लालटेन हाथ में लेकर दीदेरो और उनके पीछे लोगों की भीड़ चल रही थी। किसी में उनसे पूछने का साहस नहीं था। लोगों की उस अपार भीड़ में एक छोटी सी बच्ची ने साहस किया और पूछा— 'बाबा, दोपहर की इस धूप में आप लालटेन लेकर क्यों चल रहे हो?'

दीदेरो ने कहा— 'मैं आदमी को खोज रहा हूँ।' साथ चल रही भीड़ की उत्सुकता और अधिक बढ़ गई। भीड़ की ओर से एक साथ सामूहिक स्वर उभरा— 'आप आदमी खोज रहे हैं तो हमलोग कौन हैं?' दीदेरो ने कहा— 'आप बहुत कुछ हैं, किंतु आदमी नहीं हैं। आदमी में आदमियत होती है, वह मुझे किसी में दिखाई नहीं देती। मुझे उस आदमी की तलाश है जिसमें आदमियत होती है, इंसानियत हो।'

दीदेरो की इस तलाश में आचार्य तुलसी युगप्रेरक बनकर आए, जिन्होंने आजादी के साथ-साथ यह चिंतन किया कि लोग आजादी का जश्न तो मना रहे हैं, पर कहीं यह आजादी संयम और अनुशासन के अभाव में बेड़ी न बन जाए। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 'अणुव्रत आंदोलन' का सूत्रपात किया। उन्होंने केवल सूत्रपात ही नहीं किया, अपितु सब वर्गों के लोगों का आह्वान भी किया।

B. अणुव्रत का आह्वान और ऐतिहासिक स्वीकृति :

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र बाबू से जब आचार्य तुलसी ने कहा— 'राजेंद्र बाबू! आजादी का जश्न तो मना रहे हो, मगर याद रखना, अणुव्रत के बिना इस देश की आजादी को भ्रष्टाचार मुक्त नहीं रख पाओगे।' तब सब ने अणुव्रत को स्वीकार कर देश का गौरव बढ़ाया था। वे जानते थे कि नैतिक मूल्यों के द्वारा ही देश की जनता संतुलित जीवन व्यतीत कर सकती है। जहाँ-जहाँ चारित्रिक और नैतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है, वहाँ-वहाँ अनेक प्रकार की समस्याओं ने जन्म लिया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घृणा, नफरत, वैमनस्य, तनाव, अपसंस्कृति और बलात्कार जैसी घिनौनी स्थितियाँ हमारे सामने आ रही हैं। ऐसे में साम्प्रदायिक उन्माद व्यक्ति को हिंसा की ओर धकेल रहा है। तोड़-फोड़ और लूट-खसोट जैसी छोटी-छोटी घिनौनी बातों ने व्यक्ति के व्यक्तित्व पर अनेक प्रश्न-चिह्न खड़े कर दिए हैं।

आज हमारा देश नाजुक दौर से गुजर रहा है। अनेक समस्याएँ कदम-कदम पर इंसान को भयभीत कर रही हैं, ऐसे में भंवर ही भंवर हो तो दुनिया किसका सहारा ले? बारूद के ढेर पर खड़ी दुनिया को कौन बचाए और मार्गदर्शन दे? इन हालातों में अणुव्रत ही नई चेतना जगा सकता है। अणुव्रत एक ऐसा सेतु है जिससे पूरा प्राणिजगत् सुरक्षित रहे। अणुव्रत एक दीप है जिससे गहन अंधकार में प्रकाश का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है।

–इसके लिए सामयिक शिविर लगाए गए, जिससे जनचेतना का जागरण हुआ। आचार्यश्री का कहना था कि हाथ, पैर, पीठ, पेट सब मिलकर काम करते हैं तो शरीर ठीक काम करता है, और एक अवयव के भी शिथिल होने से पूरा शरीर अव्यवस्थित हो जाता है।

–इसीलिए एक बार पंजाब में भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा था कि 'आचार्य तुलसी समाज कल्याण में सरकार से भी सौ साल आगे चल रहे हैं।'

> बाहरी चकाचौंध के बीच यदि इंसान में 'आदमियत' और 'इंसानियत' ही गायब है, तो सारे विकास का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

C. परिवर्तन की प्रक्रिया और अणुव्रत का दर्शन :

'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।' इन पंक्तियों से हम समझ रहे हैं कि अणुव्रत के द्वारा पूरे देश का नक्शा बदला जा सकता है। अणुव्रत नवनिर्माण की चेतना का संवहन और संवर्धन करने वाला आंदोलन है। भारतवर्ष में कश्मीर से कन्याकुमारी तक इसके स्वर अनुगुंजित हो रहे हैं। यह आंदोलन पर-सुधार के साथ स्व-सुधार की बात करता हुआ इंसानियत का पाठ पढ़ाता है।

–इसमें व्यवस्था परिवर्तन की बात गौण है और हृदय परिवर्तन की बात अधिक है।

–अणुव्रत के द्वारा हज़ारों छात्र-छात्राएं दिशा-बोध प्राप्त कर व्यसन-मुक्त जीवन जी रहे हैं। स्कूल-कॉलेज से लेकर बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों तक इसकी आचार-संहिता पहुँची हुई है और इससे काफी बदलाव भी आया है तथा व्यक्तित्व निर्माण की भूमिका भी सही दिशा ले रही है।

मानव समाज में शताब्दियों से जमे हुए रूढ़ संस्कारों, अर्थहीन मापदंडों और भौतिक जगत में पनपते परिवेश को तोड़ने के लिए अणुव्रत परमाणु विस्फोट से भी अधिक प्रभावी हो सकता है। जाति, वर्ण, लिंग और रंग आदि सीमाओं को तोड़कर अणुव्रत ने धर्मक्रांति के लिए प्रखर भूमिका का निर्माण करने में सफलता प्राप्त की है।

D. उपसंहार : व्यक्तित्व निर्माण का प्रथम सोपान :

अणुव्रत व्यक्तित्व निर्माण का प्रथम सोपान है। अणुव्रत के द्वारा वर्तमान जीवनशैली को परिष्कृत कर हजारों लोगों को संयममय जीवन प्रदान किया है तथा अपने ही जीवन से शांति का संदेश दिया है। यह हर घर, हर व्यक्ति तथा हर स्कूल तक पहुंचकर व्यक्ति के जीवन को परिष्कृत कर नया नक्शा तैयार कर सकता है।

एक युवा बुरी संगत के कारण आतंक की चपेट में आ गया था, मगर जब उसने अपने जीवन की ओर झाँका तथा अणुव्रत का जो वरदान आचार्यश्री तुलसी से पाया था, उसे याद कर वह तत्काल संभल गया और इंसानियत का पाठ पढ़ते-पढ़ते खुद आदमी बन गया।

आचार्य तुलसी का 'अणुव्रत': अनैतिकता के अंधकार में एक नई नैतिक क्रांति :

● साध्वी निर्वाण श्री ●

1. प्रस्तावना: युगपुरुष आचार्य तुलसी और अणुव्रत :

२०वीं सदी के महान संत आचार्य श्री तुलसी जैन परंपरा के ही नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के एक क्रांतिकारी संत थे। युगपुरुष आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से एक अभूतपूर्व क्रांति का सूत्रपात किया। उन्होंने मानवजाति को जो आचार संहिता दी, वह सार्वदेशिक, सार्वकालिक और सर्वोदय के भावों से अनुप्राणित है, जो व्यक्ति से लेकर विश्व सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है।

2. त्रिपदी से पाएं समाधान: अनैतिकता के अंधकार का अंत :

भारतीय संस्कृति के आदर्श के विपरीत आज चारों ओर अनैतिकता और शाश्वत मूल्यों का दुर्भिक्ष सा लग रहा है। पर आचार्यश्री ने हिम्मत नहीं हारी। उनके अन्तःकरण में आशा के दीप जगमगा रहे थे। उन्होंने आह्वान किया :

अवतार की प्रतीक्षा नहीं: 'अनैतिकता के अंधकार को मिटाने के लिए कोई अवतार आने वाला नहीं है। आपमें से ही कुछ व्यक्तियों को आगे आना होगा।'

सफलता की त्रिपदीः व्यक्ति के पास आत्मनिरीक्षण, आत्मआलोचना और संकल्प की ऐसी त्रिपदी है जिसके सहारे असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

3. चरित्र : जीवन की बुनियाद और विचार की शक्ति :

आचार्य श्री तुलसी ने चारित्रिक उन्नयन को सर्वोच्च महत्व दिया।

दुर्बलता का खंडन : यदि कोई यह कहे कि वर्तमान माहौल में नैतिकता के साथ जीना दुष्कर है, तो यह व्यक्तिगत दुर्बलता है, अव्यावहारिक नहीं; क्योंकि चरित्र ही हमारे जीवन की सच्ची बुनियाद है।

विचारों का संक्रमण : एक अच्छे विचार से सर्वत्र अच्छाई और बुरे विचार से बुराई फैलती है। जैसे- तालाब को दूध से भरने के आह्वान पर हर व्यक्ति ने सोचा कि 'एक लोटा पानी डालने से क्या फर्क पड़ेगा?', और तालाब अंततः पानी से ही भर गया।

4. प्रतिष्ठा मानव धर्म की : नैतिकता और अध्यात्म :

> अणुव्रत सत्य, अहिंसा और जीवन मूल्यों का ही युगीन संस्करण है; यह व्यक्ति सुधार से लेकर राष्ट्र और विश्व सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने वाला सार्वदेशिक दर्शन है।

गाँव-गाँव और नगर-नगर यात्रा करते हुए उन्होंने पाया कि करोड़ों लोग धार्मिक होने के बावजूद नैतिक रूप से पिछड़े हैं।

धर्म की पहली शर्तः आचार्यश्री की दृष्टि में धार्मिकता की पहली शर्त नैतिकता थी, उपासना बाद में।

असाम्प्रदायिक मानव धर्म : उनके इस विश्लेषण से नास्तिक लोग भी अध्यात्म से जुड़ गए। चिंतन और आचरण के साथ यह आंदोलन स्वतः एक असाप्रदायिक मानव धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

5. सामाजिक क्रांति और सच्ची श्रद्धांजलि :

अणुव्रत के माध्यम से दूसरा बड़ा कार्य सामाजिक क्रांति का हुआ।

कुरीतियों पर प्रहार : उन्होंने छुआछूत, भाषाई विवाद, दहेज, पर्दाप्रथा और मृत्युभोज जैसी जीर्ण-शीर्ण परंपराओं को जड़ से उखाड़ने के लिए कठोर परिश्रम किया।

सादगी और संयमः झूठी प्रतिष्ठा के नाम पर आधुनिक मानव भीतर से खोखला हो रहा है। खान-पान और आचार-विचार में संयम, सात्विकता एवं सादगी ही जीवन समस्याओं का वास्तविक समाधान है।

निष्कर्ष :

अपेक्षा है कि वर्तमान युवा एवं किशोर पीढ़ी इन क्रांति सूत्रों से स्वयं को अनुप्राणित कर मानवता के मंगल के लिए नया अध्याय लिखे। आचार्य तुलसी के प्रति यही उनकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।



युवा ऊर्जा को मिला पावन संकल्प : अभातेयुप के रूप में आचार्य तुलसी का ऐतिहासिक अवदान!

आचार्यश्री तुलसी के सपनों की कामधेनु : जैन विश्व भारती

● राजेंद्र खटेड़, लाडनूं ●

A. जैन विश्व भारती :

भारतीय संत परम्परा के शिखर पुरुष, अध्यात्म जगत के उज्ज्वलतम नक्षत्र एवं देदीप्यमान महापुरुष का नाम है- आचार्यश्री तुलसी। बीसवीं सदी के क्रांतिकारी व्यक्तित्वों की श्रृंखला में उनका नाम अग्रिम पंक्ति में अंकित है।

आचार्यश्री तुलसी एक महान स्वप्नद्रष्टा थे। उन्होंने न केवल अनेक स्वप्न देखे, बल्कि अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से उन स्वप्नों को साकार भी किया। संस्था निर्माण यद्यपि उनका लक्ष्य नहीं था, किन्तु मानवीय मूल्यों एवं नैतिक सूत्रों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था उनके विश्व-परिवर्तन के लक्ष्य का एक सशक्त साधन थी। इसी लक्ष्य और मिशन का साकार स्वरूप बना- 'जैन विश्व भारती', जो उनकी स्वप्न-श्रृंखला की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

एक संकल्प का बीजारोपण

सन् 1959 में आचार्यश्री तुलसी के कलकत्ता प्रवास के समय न्यायाधीश राधाविनोद पाल ने उनके समक्ष जैन विश्वविद्यालय की स्थापना का चिंतन प्रस्तुत किया। इससे पूर्व प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कालिदास नाग भी यह सुझाव रख चुके थे। गुरुदेव के मन में जैन विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु संकल्प जागृत हुआ।

सन् 1960 में तेरापंथ द्विशताब्दी के पावन अवसर पर राजसमंद (मेवाड़) चतुर्मास में सरदारशहर के प्रसिद्ध सेठ श्री सुमेरमलजी दूगड़ का परिवार उपासना में था। शैक्षणिक एवं संस्कृति गतिविधियों की चर्चा के दौरान गुरुदेव ने उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री भंवरलालजी दूगड़ से कहा-'भंवरजी ! तुमने अनेक दिशाओं में अनूठे कार्य किए हैं। समाज में अनेक नई प्रवृत्तियों का प्रारम्भ किया है, पर यह दिशा बंद रह गई है। धर्मसंघ की दृष्टि से तुमने कभी कुछ सोचा है क्या?' श्री दूगड़ गुरुदेव के इन वाक्यों से एक क्षण के लिए सहम गए और तुरन्त उनके अव्यक्त संकेत को पकड़ते हुए बोले- 'गुरुदेव! यह तो मेरी भूल रही है। मैंने इस विषय में कभी कुछ सोचा ही नहीं। अब मैं जल्दी ही कोई योजना बनाकर निवेदन करूंगा।'

गुरु-इंगित को शिरोधार्य कर श्री दूगड़ ने एक ऐसे संस्थान की योजना बनाई, जहाँ प्राच्य विद्याओं के अध्ययन एवं शोध का महत्त्वपूर्ण कार्य हो सके तथा अनेक प्रवृत्तियों का संचालन हो, जिससे जैन समाज और पूरे देश में विशिष्ट पहचान बने। श्री जयचंदलाल दफ्तरी और डॉ. नथमलजी टाटिया भी इस चिंतन के साथ जुड़ गए। इस प्रकार श्री भंवरलालजी दूगड़ जैन विश्व भारती के प्रथम कल्पनाकार बने। अपनी योजना गुरुचरणों में निवेदित करने से पूर्व वे राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया से मिलकर स्थान का निर्णय करने हेतु जयपुर जा रहे थे। नियति के दुर्योग से मार्ग में सड़क दुर्घटना में उनका देहावसान हो गया, और स्थापना के चिंतन को कुछ समय के लिए विराम लग गया।

आचार्यश्री तुलसी की दक्षिण यात्रा के समय सन् 1969 में पुनः इस विषय में चिंतन एवं गोष्ठियों का दौर प्रारम्भ हुआ, जिनमें श्री हनुमानमल बैंगानी, श्री श्रीचंद रामपुरिया, श्री गोपीचंद चोपड़ा, श्री प्रभुदयाल डाबड़ीवाल, श्री सूरजमल गोठी, श्री खेमचंद सेठिया आदि समाज के विशिष्ट महानुभाव सहभागी बने। अंततः दिनांक 31 मार्च 1970 को हैदराबाद में आचार्यश्री तुलसी के पावन सान्निध्य में समाज के प्रमुख व्यक्तियों की उपस्थिति में 'जैन विश्व भारती' की स्थापना का सैद्धान्तिक निर्णय लिया गया और राजस्थान सरकार के संस्था रजिस्ट्री अधिनियम के अन्तर्गत इसका विधिवत पंजीकरण कराया गया।

B. कामधेनु की परिकल्पना :

आचार्यश्री तुलसी का स्वप्न था कि जैन विश्व भारती के माध्यम से एक ऐसा मंच तैयार हो, जहां जैन दर्शन और तेरापंथ धर्मसंघ के मौलिक सिद्धांतों पर नए सिरे से चिंतन हो। लोग जैन तत्त्वदर्शन एवं जैन वाङ्मय के विविध अंगोपांगों पर सूक्ष्म पर्यालोचन, विचार-मंथन, विवेचन व विश्लेषण करें। इस हेतु समय-समय पर सेमिनार, संगोष्ठियां आयोजित हों, जिनमें देश-विदेश के विद्वान, विचारक, दार्शनिक तथा साहित्यकार गहन चिंतन-मंथन कर सकें। उन्होंने एक ऐसी बहुआयामी संस्था का स्वप्न देखा, जो समाज की विभिन्न अपेक्षाओं की पूर्ति करने वाली 'कामधेनु' बन सके। जैन विश्व भारती का उद्भव उस महान युगचेता, दूरद्रष्टा, राष्ट्रसंत के मानव-कल्याणकारी चिंतन की परिणति है।

शांति, सद्भाव, सौहार्द और समन्वय जैसे महनीय मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु आचार्यश्री तुलसी की पावन आध्यात्मिक प्रेरणा से सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में जैन विश्व भारती की स्थापना हुई। लाडनूं आचार्यश्री तुलसी की जन्मभूमि भी है और कर्मभूमि भी। शिक्षा, शोध, साहित्य एवं साधना के मूल लक्ष्यों पर आगे बढ़ते हुए संस्था ने क्रमशः विकास की दिशा में आरोहण किया। जैन विश्व भारती विश्व मानवता के लिए एक वरदान स्वरूप है।

C. मानवीय मूल्यों को समर्पित जैन विश्व भारती :

एक ऐसा आध्यात्मिक संस्थान है, जो आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ की ऊर्जा-रश्मियों का पुंज है, जो वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण में विकास की ओर निरन्तर गतिशील है।

–एक ऐसा बहुमुखी संस्थान, जहां शिक्षा, सेवा, साधना, साहित्य, शोध, संस्कृति और समन्वय का संगम है।

–एक ऐसा सुरम्य संस्थान, जो प्राकृतिक सौंदर्य से आपूरित है।

–एक ऐसा पवित्र संस्थान, जो सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक गतिविधियों की त्रिवेणी है।

–एक ऐसा शोध संस्थान, जो जैन दर्शन एवं प्राच्य विद्याओं के उच्च स्तरीय अध्ययन व शोध का केन्द्र है।

–एक ऐसा शिक्षण संस्थान, जहाँ प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा की समुचित व्यवस्था है।

–एक ऐसा अभिनव संस्थान, जहां आत्मिक शांति के लिए योग एवं ध्यान का अनूठा केन्द्र है।

D. सप्त सकार : कामधेनु के सात स्त्रोत :

जैन विश्व भारती की विविधमुखी गतिविधियों को आचार्यश्री तुलसी ने शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय- इन 'सप्त सकार' की संज्ञा दी।

सकारध्येय / भाव
शिक्षाज्ञान / साथ संस्कार
शोधपरम्परा/ नवीनता
साहित्यविचार / प्रसार
साधनाआत्मानुशासन/ चेतना
सेवासंवेदना /उत्तरदायित्व
समन्वयसंवाद सहयोग
संस्कृति/ विरासत के साथ वर्तमान की प्रासंगिकता

1. प्रथम सकार- शिक्षा:

बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्यों से युक्त शिक्षा के माध्यम से संस्कार-निर्माण और सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण जैन विश्व भारती का लक्ष्य रहा है। प्राच्य विद्या, जैन धर्म व दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों की शिक्षा प्रदान कर उन्हें व्यापक स्वरूप में प्रतिपादित करना भी इसका ध्येय है। इसी हेतु यहां प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा की व्यवस्था है।

जैन विश्व भारती के संरक्षण में पल्लवित पुष्पित जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) जैन विद्या एवं प्राच्य विद्या के विकास का समुन्नत केन्द्र है तथा विश्व का प्रथम जैन विश्वविद्यालय है। यह प्राचीन भारत के एक ऐसे तपोवन के समान है, जहां साधु-साध्वियां, समणियां, शोधार्थी तथा विद्वान आर्ष परम्परा का संवहन करते हुए अध्ययन, नित नव अनुसंधान और सृजन में सक्रिय हैं।

लाडनूं में संचालित महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल तथा जयपुर व टमकोर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल से उत्तीर्ण होकर प्रतिवर्ष सैकड़ों बालक-बालिकाएँ नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। महाप्रज्ञ ग्लोबल स्कूल शिक्षा के नव सृजन के रूप में प्रस्तुत हो रहा है।

भावी पीढ़ी में जैनत्व के संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से 'समण संस्कृति संकाय' के अंतर्गत देशभर में जैन विद्या की शिक्षा दी जाती है, जिससे बालक-बालिकाओं के संस्कार-निर्माण एवं तत्त्वज्ञान-अभिवृद्धि का अमूल्य कार्य हो रहा है।

जय तुलसी एज्युकेशन बोर्ड के अंतर्गत तेरापंथ और तेरापंथ के आचार्यों और गतिविधियों के नामकरण से देशभर में संचालित विद्यालयों को जैन विश्व भारती के अंतर्गत संबद्धता प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है।

2. द्वितीय सकार- सेवा :

जैन विश्व भारती परिसर में अवस्थित 'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' प्रामाणिक एवं विश्वसनीय औषधियों का निर्माण कर जन-सामान्य की आरोग्य सेवा में योगदान दे रही है। योगक्षेम वर्ष में 'निरामयम्' चिकित्सालय का नवनिर्माण कर चारित्रात्माओं, समण श्रेणी, मुमुक्षु बहिनों, श्रावक-श्राविकाओं को अध्ययनरत विद्यार्थियों, आगंतुक अतिथियों आदि को त्वरित रूप से सामान्य चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही है। बीदासर में संचालित 'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र' भी चिकित्सा सेवा का एक उपक्रम है। समण श्रेणी का मुख्य प्रवास केन्द्र भी जैन विश्व भारती है।

3. तृतीय सकार - साधना :

आचार्यश्री तुलसी ने साधना पर विशेष बल दिया। उन्होंने अपने अनेक शिष्य-शिष्याओं को विभिन्न प्रकार से साधना में नियोजित किया।

व्यक्ति के भीतर की ऊर्जा से ही उसकी समस्याओं का समाधान हो, इस दृष्टि से आचार्यश्री तुलसी के पावन सान्निध्य एवं आध्यात्मिक निर्देशन में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने सघन साधना व शोध के आधार पर ध्यान की प्राचीन विधा को 'प्रेक्षाध्यान' के रूप में नवीन परिवेश में प्रस्तुत किया। 'प्रेक्षाध्यान' की समस्त गतिविधियां जैन विश्व भारती के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान फाउंडेशन द्वारा संचालित है। परिसर में स्थित 'आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर' के विशाल व भव्य भवन में लगभग प्रतिमाह आवासीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित होते हैं।

4. चतुर्थ सकार - साहित्य :

साहित्य प्रकाशन, प्रचार-प्रसार एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन धर्म एवं दर्शन, जैन विद्या, तेरापंथ दर्शन, तेरापंथ के आचार्यों एवं साधु-साध्वियों, समण-समणियों व शोधार्थियों द्वारा लिखित अथवा संपादित विपुल साहित्य का प्रकाशन जैन वाङ्मय के इतिहास में अभिवृद्धि का स्मारक-चिह्न बना हुआ है। यहां प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी सहित अनेक क्षेत्रीय व विदेशी भाषाओं में अनुवादित साहित्य भी प्रकाशित हुआ है, जिससे जैन दर्शन और साहित्य को व्यापकता मिली है।

शेष अगले पृष्ठ पर...



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026

लगातार...

यहां का विशाल पुस्तकालय विभिन्न धर्म, भाषा एवं संस्कृति के ग्रंथों का अद्भुत संग्रहालय है। इसमें विविध भाषाओं, विषयों और दर्शनों से संबंधित महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के साथ दुर्लभ प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का समृद्ध संग्रह है।

5. पंचम सकार - शोध :

जैन विश्व भारती के मूलभूत उद्देश्यों में 'शोध' का स्थान सर्वोपरि रहा है। गुरुदेव ने इसे प्राच्य विद्या एवं जैन दर्शन के उच्च स्तरीय शोध संस्थान के रूप में परिकल्पित किया था। प्रारम्भ में एक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत विद्वानों द्वारा शोध कार्य चलते थे। कालान्तर में जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) की स्थापना इसी कल्पना का साकार रूप बनी।

भगवान महावीर की वाणी से संबंधित सम्पूर्ण मूल जैन आगमों का अन्वेषण कर उनमें छिपे सत्य एवं रहस्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने के लक्ष्य के अन्तर्गत आगम अनुसंधान, अनुशीलन, अनुवाद, टिप्पण, पाठ संशोधन, संस्कृत छाया, समीक्षात्मक अध्ययन, शब्दकोश निर्माण, हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का पठन एवं समीक्षण आदि कार्य सम्मिलित हैं।

6. षष्टम सकार- संस्कृति :

आचार्यश्री तुलसी का चिंतन था कि धर्म एवं दर्शन हमारी मूल्य-चेतना के आधार हैं और संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। इस दृष्टि से जैन विश्व भारती संस्कृति के संवर्द्धन व संरक्षण हेतु सतत क्रियाशील है।

जैन विश्व भारती परिसर में जैन धर्म को दर्शाने वाले प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों और हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री से सज्जित 'तुलसी कला दीर्घा' आगन्तुक अतिथियों के आकर्षण का केन्द्र है, जहां स्थापत्य कला, चित्रकला, लिपिकला, हस्तकला एवं मूर्तिकला के माध्यम से संस्कृति की गौरवशाली विरासत अभिव्यक्त होती है। यहां दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों एवं पाण्डुलिपियों को संग्रहित कर जैन संस्कृति की अनमोल धरोहर को सुरक्षित एवं संरक्षित रखा जा रहा है।

7. सप्तम सकार- समन्वयः

विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के समन्वय की दृष्टि से भी जैन विश्व भारती एक पवित्र संगम है। आचार्यश्री तुलसी की प्रारम्भ से ही यह कल्पना थी कि जैन विश्व भारती एक अद्वितीय संस्थान बने, जहां विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन हो और उनमें परस्पर समन्वय स्थापित हो। इसी भावना से विश्वविद्यालय के अन्तर्गत अहिंसा एवं तुलनात्मक ह्यूस्टन, ओरलैण्डो, न्यूजर्सी एवं लंदन में इसके नाम से केन्द्र संचालित हैं, जहां समण-समणीवृंद के सान्निध्य में जैन धर्म-दर्शन तथा तेरापंथ से संबंधित गतिविधियाँ निरन्तर चलती हैं।

समन्वय के अंतर्गत ही जैन विश्व भारती विशिष्ट क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रतिवर्ष विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित कर उनकी सेवाओं का मूल्यांकन करती है।

7. सप्त सकार से आगे :

सप्त सकाररूपी गतिविधियों के अतिरिक्त भी अनेक ऐसे तथ्य हैं, जो जैन विश्व भारती को वास्तव में समाज की कामधेनु के रूप में स्थापित करते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं के भवन एवं पंजीकृत कार्यालय इसे तेरापंथ की राजधानी का स्वरूप प्रदान करते हैं। सुविधायुक्त अतिथिगृह, नयनाभिराम उपवन एवं विभिन्न आध्यात्मिक स्थल इस परिसर की महत्ता को द्विगुणित करते हैं।

मरुधरा में मुस्काती तपोभूमि

सुरम्य हरीतिमा से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कहता है। रमणीय प्राकृतिक छटा, शुद्ध वातावरण और शान्त परमाणु इसे एक तपोभूमि या आश्रम का स्वरूप प्रदान करते हैं। यह सरस्वती की विरल क्रीड़ाभूमि है, जिस पर अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने अपने ज्ञान की गंगा बहाई है।

यह तपोभूमि आश्रम की एक ऐसी झलक है, जो शुष्क मरुभूमि में मुस्काती हरियाली को अपने आंचल में समेटे हुए है। इसकी गोद में नाचते राष्ट्रीय पक्षी मयूर हर पल निर्भय आनंद का अनुभव करते हैं। यहां का निराला सौंदर्य आगन्तुक अतिथि को सम्मोहित कर लेता है।

E. आचार्यश्री तुलसी की आध्यात्मिक प्रेरणा से : अभिसिंचित जैन विश्व भारती रूपी वह बीज वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आध्यात्मिक संरक्षण में विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है,

जैन विश्व भारती को परम पूज्य आचार्यों का आर्शीवचन

आचार्यश्री तुलसी :

'यदि ज्ञान की भूख हो, साधना की ललक हो, अपनी संस्कृति के प्रति असीम अनुकम्पा हो, अनुसंधान की प्रवृत्ति हो तथा अनन्त की जिज्ञासा हो, तो इन सबके लिए एक ही संस्थान का नाम घूम-फिर कर सामने आता है और वह है 'जैन विश्व भारती'। यहां कोरा बौद्धिक ज्ञान नहीं दिया जाता, प्रत्युत सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की त्रिपथगा को प्रवाहित करने वाला बोध दिया जाता है। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के सिद्धांत को जन-जन के हृदय में प्रस्फुटित करने और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान-विज्ञान तथा शोध के पथ को पूर्णता प्रदान करने की दृष्टि से यह संस्थान अनुपमेय है।'

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी :

'जैन विश्व भारती आचार्य तुलसी का एक स्वप्न, एक कल्पना और एक यथार्थ। इसने अनेक उंगलियों का स्पर्श पा आकार लिया और इसमें प्राण-संचार हुआ। जैन विद्या के विकास का जो दायित्व लिया, उसका निर्वाह किया। आज यह प्रस्तर-खण्डों में नहीं, लोकमानस में प्रतिष्ठित है।'

आचार्यश्री महाश्रमणजी :

'प्राचीन साहित्य में जयकुंजर का वर्णन उपलब्ध होता है। इस जयकुंजर नामक विशाल हाथी के सदृश जैन विश्वभारती भी विशाल है, इसका परिसर रमणीय है। इसमें साधना, शिक्षा, सेवा, साहित्य, शोध आदि विविध प्रवृत्तियां संचालित हैं। वस्तुतः यह जयकुंजर के समान एक विशाल संस्था है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के आशीर्वाद व छत्रछाया में यह संस्था पल्लवित पुष्पित हुई है और विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है।'

चंदेरी के चांद की महिमा अपरंपार है

● साध्वी पावन प्रभा (श्रीडूंगरगढ़) ●

तुलसी अवदानों की अमिट निशानी
युग-युग रहेगी तेरी अमर कहानी।
विश्वास रखो नैतिकता में, यह सफल बने जिंदगानी।

1. चंदेरी के चांद की महिमा अपरंपार है,
श्रम-बिंदुओं का सिंचन पाकर भैक्षव गण गुलज़ार है,
पौरुष-गाथा से रच दी अजब ज़ुबानी॥

2. अणुव्रत-प्रेक्षा की ज्योति से मानव का उद्धार किया,
जैन जीवन-शैली से सत्संस्कार भर दिया,
जन-जन में धार्मिकता की अलख जगानी॥

3. नए मोड़ से रूढ़िवाद की जंज़ीरों को तोड़ दिया,
नारी को जागृत करने अनुपम शंखनाद किया,
शिक्षण-प्रशिक्षण शैली गज़ब लुभानी॥

4. तुलसी युग के 'योगक्षेम वर्ष' की स्मृतियाँ याद हैं,
गुरु महाश्रमण के योगक्षेम ने नया गढ़ा इतिहास है,
युवाचार्य नियुक्ति लगती पावन को मनभानी॥

(लयः झिलमिल सितारों...)

तुलसी एक दीप से तुमने लाखों दीप जलाये थे

● साध्वी प्रियंवदा ●

अमर रहेगा वसुंधरा पर युगों युगों तक तुलसी नाम
विश्व विभूति राष्ट्रसंत को कृतज्ञ राष्ट्र का कोटी प्रणाम।।

बीज बनकर आये भू पर वटवृक्ष का सा रूप बनाया
अपने शौर्य पराक्रम से ही भारत ज्योति का पद पाया
पारिजात हे वंदना नंदन बने विश्व के संत ललाम।।1।।

तुलसी एक दीप से तुमने लाखों दीप जलाये थे
संस्कारों के एक बीज से लाखों पौध उगाये थे
तुलसी तेरी सौरभ पहुंची देश विदेशों ग्रामो ग्राम।।2।।

अणुव्रत के पर्याय बने तुम अणुव्रत तेरी थी धड़कन
अणुव्रत संजीवनी विश्व की अणुव्रत में है चैन अमन
माटी के कण कण में गूंजे तुलसी तेरे शुभ पैगाम।।3।।

जन्म जयंति पर करते हैं गुण रत्नाकर तुम्हें सलाम
जग उजियारो ओ ध्रुव तारे अमर रहेंगे तेरे काम
योगक्षेम वर्ष में मनाते अणुव्रत दिवस हम अभिराम।।4।।

झूमर कुल के भाल

● शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा ●

मां वदनां के लाल, श्री झूमर कुल के भाल।
ले कर में शांति मशाल, तुमने ज्योति जलाई है।
गुरुवर राह दिखाई है।

1. गरिमामय तेरा जीवन, है जिसकी अकथ कहानी।
अभियान तुम्हारे नूतन, कण कण में अमिट निशानी।
करे भक्ति, मिले शक्ति, हो जाए मालोमाल॥

2. विश्वास तुम्हारा श्रम में, ज्योतिर्मय जीया जीवन।
तुम मानवता के प्रहरी, है खिलता तेरा गुलशन।
चले बढ़ते, कभी न रुकते, तूफां में रहे खुशहाल॥

3. नयनों में तेरे जादू, वाणी में अमृत धारा।
सन्देश अणुव्रत पावन, बदली है युग की धारा।
जहां दृष्टि, वहां सृष्टि, संयम का उड़े गुलाल॥

4. तुम हो करूणा के सागर, समता का है क्या कहना।
सीखा है संघर्षों को, हंसते हंसते ही सहना।
तेरे कदमों पर बढ़ेंगे, ये शिष्य विनीत मराल॥

(तर्ज : ना कजरे की धार)



सुधर्मा सभा में 'करण सत्य से क्या मिलेगा?' विषय पर आचार्यश्री की अमृत देशना

समय काटना नहीं, मन और ईमानदारी से काम करना ही है करण सत्य —आचार्यश्री महाश्रमण



लाडनूं।
23 नवम्बर, 2026

जन-जन के मानस को अपनी आध्यात्मिक देशना से मोक्ष मार्ग की ओर गतिमान करने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में आगम चेतना का महाप्रवाह अनवरत प्रवाहित हो रहा है।

पूज्य प्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित विषय 'करण सत्य से क्या मिलेगा?' पर आगम के गूढ़ संदर्भों के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

> जो भी ज़िम्मेदारी मिले, उसे बोझ मानकर टालने के बजाय मन से और प्रसन्नतापूर्वक निभाना ही कार्य के प्रति सच्ची निष्ठा है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

त्रिधा सत्य और साधु-श्रावक के त्याग की गरिमा :

2. सत्य की तीन अभिव्यक्तियाँ: आगमिक प्रश्न 'भंते! करण सत्य से जीव क्या प्राप्त करता है?' का समाधान करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि सत्य तीन रूपों में अभिव्यक्त होता है—भाव सत्य, योग सत्य और करण सत्य। धार्मिक व्यवस्था में करण योग का अत्यंत उच्च स्थान है।

2. साधु जीवन के महाव्रत और संथारा : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि साधु जीवन में प्राणातिपात, मृषावाद आदि पाँचों आश्रवों का तीन करण और तीन योग से सर्वथा त्याग होता है। साधु का यह त्याग अत्यंत गरिमापूर्ण है क्योंकि यह जीवन भर के लिए पूर्ण त्याग होता है। साधु और गृहस्थ द्वारा ग्रहण किया जाने वाला संथारा (अनशन) भी जीवन भर के लिए होने से विशेष महत्त्व रखता है।

३. सामायिक की विभिन्न कोटियाँ: आचार्यश्री ने श्रावक जीवन की साधना को रेखांकित करते हुए फरमाया कि श्रावक की सामायिक में दो करण तीन योग से छह कोटि की सामायिक होती है। तेरापंथ धर्मसंघ में छह कोटि, आठ कोटि और नौ कोटि—ये तीनों ही प्रकार की सामायिक मान्य हैं।

करण सत्यः कार्य निष्ठा, ईमानदारी और प्रामाणिकताः

1. केवल समय काटना करण सत्य नहीं : 'करण सत्य' की व्यावहारिक व्याख्या करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि करण सत्य का अर्थ है—'कार्य करने की सच्चाई'। जो भी दायित्व या कार्य मिला हो, उसे निष्ठापूर्वक और तन्मयता से करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति केवल समय काट रहा है और मन से काम नहीं कर रहा, तो वह कार्य के प्रति सच्चाई नहीं है।

2. गृहस्थों के लिए प्रामाणिकता का संदेश : गृहस्थों की दृष्टि से विवेक देते हुए पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि हर कार्य में ईमानदारी होनी चाहिए, बेईमानी का भाव सर्वथा त्याज्य है। जो व्यक्ति निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करता है, उसकी कार्य-शक्ति और क्षमता का निरंतर विकास होता है।

3. साधु-साध्वियों हेतु दायित्व बोध : साधु-साध्वियों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि गोचरी, व्याख्यान या संघ का जो भी कार्य मिले, उसे अंतर्मन से, प्रसन्नतापूर्वक और सम्यक् विधि से करना चाहिए। अपनी ज़िम्मेदारी को कुशलता से निभाना ही करण सत्य है, जिससे भीतर की सामर्थ्य और कार्य कुशलता का विकास होता है।

साध्वीवृंद द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुति :

1. प्रवचन का अंग्रेजी सारांश: मुख्य मंगल देशना के उपरांत पूज्य आचार्यश्री की पावन अनुज्ञा से साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने आज के आगमिक प्रवचन का सारगर्भित सारांश अंग्रेजी भाषा (English) में प्रस्तुत किया।

2. वैश्विक अभिव्यक्ति : एक अन्य साध्वी जी ने भी अंग्रेजी भाषा में अपनी सुमधुर आध्यात्मिक प्रस्तुति देकर ज्ञान गंगा को प्रवाह प्रदान किया, जिसे सुधर्मा सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं ने भावपूर्ण ढंग से सराहा।

सोने की मुहरें रातभर में कोयला कैसे बनीं? जानिए ईमानदारी, लालच और देव-परीक्षण का रहस्य!

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'करण सत्य' के अंतर्गत कार्य की प्रामाणिकता और ईमानदारी को समझाने के लिए गृहस्थ जीवन के व्यावहारिक उदाहरण से कथा का सूत्रपात किया।

A. कार्य में ईमानदारी और परियोजना का आरंभ :

1. भवन निर्माण का संकल्प : एक सेठ ने एक बड़ी जमीन खरीदी और उस पर एक विशाल भवन बनवाने का निर्णय लिया।

2. समय और गुणवत्ता का निर्देश : सेठ ने निर्माण कार्य के लिए एक ठेकेदार और उसकी मजदूरों की टीम को काम सौंपा। सेठ ने स्पष्ट निर्देश दिया कि निर्माण कार्य उच्च गुणवत्ता के साथ बारह महीनों में, या अधिकतम दो वर्षों के भीतर पूरा हो जाना चाहिए।

3. पूरी निष्ठा से शुरुआत : ठेकेदार ने सेठ के विश्वास का मान रखते हुए समय पर काम पूरा करने का वादा किया और निर्माण कार्य हेतु नींव खोदने की प्रक्रिया प्रारम्भ की।

B. नींव में निकला खजाना और ईमानदारी का अनूठा परिचय :

नींव की खुदाई के दौरान अचानक कीमती रत्न और स्वर्ण मुद्राएं (खजाना) निकलीं। इस क्षण सभी चरित्रों ने अपनी नैतिकता का परिचय दिया :

ठेकेदार और मजदूरों की ईमानदारी : जैसे ही खजाना मिला, ठेकेदार और मजदूरों ने अपनी ईमानदारी दिखाते हुए सबसे पहले सेठ को सूचित किया। उन्होंने उस धन को स्वयं हड़पने या आपस में बाँटने के बजाय मालिक को सौंपने का निर्णय लिया।

C. अनासक्ति की मिसाल : सेठ, पूर्व मालिक और राजा का दृष्टिकोण :

1. वर्तमान सेठ की उच्च नैतिकता : सेठ ने भी अत्यंत उच्च कोटि की नैतिकता दिखाई। उसने तर्क दिया कि चूँकि उसने दूसरे सेठ से जमीन खरीदी है, तो उसने केवल जमीन का मूल्य दिया है, उस अंदर छिपे धन का नहीं। उसने यह कहकर जिम्मेदारी लेने से मना कर दिया कि यह संपत्ति उसकी नहीं है।

2. पूर्व मालिक का धर्मनिष्ठ जवाब: जब जमीन बेचने वाले पुराने सेठ को बुलाया गया, तो उसने भी स्पष्ट कहा कि उसने जमीन बेच दी है, इसलिए जमीन के अंदर जो कुछ भी है, अब उस पर उसका कोई अधिकार नहीं बनता।

3. राजा के पास प्रस्थान : जब दोनों सेठों ने धन लेने से इंकार कर दिया, तो वे निर्णय के लिए राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजा से कहा कि चूँकि जमीन के असली मालिक राजा होते हैं, इसलिए यह राजकोष का धन है। राजा ने स्वयं वहाँ आकर स्थिति का जायजा लिया।

D. राजा का अनुपम निर्णय और रात्रि में लालच का उदय :

1. राजा का त्याग : राजा ने जब खुदाई वाली जगह पर स्वयं आकर देखा, तो उन्होंने भी धन लेने से मना कर दिया। उन्होंने बड़ा ही सुंदर तर्क दिया कि 'पृथ्वी हमारी माता है और यह धन धरती माँ का गहना है। माँ का गहना लेना राजा के लिए उचित नहीं है।' उन्होंने निर्देश दिया कि इस धन को वापस उसी जगह दफना दिया जाए।

2. निशांत काल में बदला मन : रात ढलने के बाद, जब सब अपने-अपने घर गए, तो वातावरण और विचार बदल गए। उन सभी के मन में लालच का भाव आ गया:

मजदूरों ने सोचा : हम मूर्ख हैं, हमें वह सारा धन आपस में बाँट लेना चाहिए था।

मुखिया ने सोचा: मैंने सेठ को सूचना देकर बड़ी गलती की, मैं वह सारा धन खुद रख सकता था।

दोनों सेठों ने सोचा : हमने बेकार में ही राजा को बुलाया, हमें तो वह धन आपस में ही ले लेना चाहिए था।

राजा ने सोचा : मैं तो पृथ्वी का स्वामी हूँ, मुझे वह धन ले लेना चाहिए था, जो मेरे और राज्य की जनता के काम आता।

E. देव-परीक्षण, परिणाम और आचार्य प्रवर की शिक्षा :

1. सुबह की खुदाई : अगली सुबह, वे सभी—राजा, दोनों सेठ, मुखिया और मजदूर—एक साथ उसी स्थान पर धन हड़पने की नीयत से पहुँचे।

2. कोयला और कंकड़ : लेकिन जब उन्होंने दोबारा खुदाई की, तो वहाँ स्वर्ण मुद्राएं या रत्न गायब हो चुके थे। उसके स्थान पर उन्हें केवल कोयले और कंकड़ मिले।

3. अंतिम निष्कर्ष व पावन बोध : आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि यह एक देव-परीक्षण था। जब तक सबकी नीयत साफ, निस्वार्थ और अनासक्त थी, तब तक धन वहाँ सुरक्षित मौजूद था; लेकिन जैसे ही स्वार्थ और लालच ने जगह बनाई, लक्ष्मी वहाँ से लुप्त हो गई। 'करण सत्य' (कार्य की सच्चाई) तभी फलीभूत होती है जब मन में पूर्ण ईमानदारी, पवित्रता और निस्वार्थ भाव हो।

सामायिक तो करे पण मन में दुकान-मकान? जाणो पूज्य प्रवर सूं साचो त्याग!

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा उद्घाटित— श्रावक की सामायिक और साधना की सापेक्ष सीमाएँ

सामायिक में बैठकर भी यदि मन में घर-व्यापार का ममत्व बना रहे, तो त्याग की स्थिति कैसी होती है? पढ़िए पूज्य प्रवर का पावन बोध!

A .सामायिक की तीन श्रेणियाँ: छह, आठ और नौ कोटि :

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने श्रावक (गृहस्थ) द्वारा की जाने वाली सामायिक के स्वरूप को तीन मुख्य श्रेणियों में स्पष्ट फरमाया है :

1. छह कोटि (सामान्य सामायिक) : इसमें श्रावक 'दो करण और तीन योग' (मन, वचन और काया से पापमय कार्य न स्वयं करना और न ही दूसरों से करवाना) का पालन करता है।

2. आठ कोटि सामायिक : जब छह कोटि के नियमों के साथ-साथ श्रावक वचन और काया से किसी भी पापमय (सावद्य) कार्य के 'अनुमोदन' (समर्थन) का भी त्याग कर देता है।

3. नौ कोटि सामायिक : यदि श्रावक मन से भी किसी गलत कार्य का अनुमोदन न करने का दृढ़ संकल्प ले ले, तो वह साधना की उच्चतम 'नौ कोटि' की सामायिक बन जाती है।

B. साधु और गृहस्थ के त्याग में मूल अंतर :

आचार्य श्री ने एक अत्यंत सूक्ष्म और चिंतनणीय सत्य उजागर किया कि गृहस्थ की नौ कोटि की सामायिक भी साधु के 'तीन करण-तीन योग' वाले यावज्जीवन महाव्रत के सामने सापेक्ष (ढीली-ढाली) होती है:

1. समय की सीमा : गृहस्थ का त्याग केवल अल्पकालीन (जैसे एक मुहूर्त या निश्चित समय) के लिए होता है, जबकि साधु का त्याग जीवनभर (यावज्जीवन) के लिए होता है।

2. आरंभ-समारंभ और ममत्व : सामायिक के दौरान भी गृहस्थ सांसारिक व्यापार, परिवार और घर-गृहस्थी के 'ममत्व' (आंतरिक लगाव) से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता। उसके मन के किसी कोने में दुकान या परिवार की चिंता बनी रह सकती है, जबकि साधु इन सभी बंधनों से सर्वथा विरक्त होते हैं।

C. धर्म संघ का संदेश और साधक का विवेक :

1. संघ की मान्यता : आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि हमारा धर्म संघ तीनों प्रकार की सामायिकों (छह, आठ और नौ कोटि) को सहर्ष मान्यता देता है।

2. विवेकपूर्ण दृष्टिकोण : साधक को अपनी वर्तमान स्थिति और गृहस्थ जीवन की सीमाओं का सही भान होना चाहिए, ताकि मन में अहंकार न आए और वह निरंतर आगे बढ़ने का पुरुषार्थ कर सके।



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026

पूज्य प्रवर ने आगम से उद्घाटित किया 'भाव सत्य से क्या मिलेगा?' का मर्म

'पुरुषार्थ और समता से ही निखरता है मनुष्य का भाग्य' : आचार्यश्री महाश्रमण

(जैन विश्व भारती द्वारा मुनि जागृतकुमार जी की पुस्तक 'आत्मिक इंटरनेट' का हुआ लोकार्पण)



लाडनूं।

22 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में आगमिक ज्ञान और चेतना का महाप्रवाह निरंतर प्रवाहित हो रहा है। पूज्य प्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित विषय 'भाव सत्य से क्या मिलेगा?' पर उत्तरज्झयणाणि आगम के पावन संदर्भों के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया।

> कठिनाई या कष्ट आने पर दूसरों पर आक्रोश न करें। इसे पूर्व कर्मों का फल मानकर समता और साधना में लीन रहना ही सच्चा विवेक है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

भाव सत्य साधन और भाव विशुद्धि उसकी पावन सिद्धि :

1. त्रिधा सत्य और कारण-कार्य संबंध : आगमिक प्रश्न 'भंते! भाव सत्य से जीव क्या प्राप्त करता है?' का उत्तर देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि सत्य के तीन रूप हैं—भाव सत्य, करण सत्य और योग सत्य। इनमें से भाव सत्य कारण है और भाव विशुद्धि (भावों की निर्मलता व शुद्धता) उसका प्रत्यक्ष कार्य है।

2. तपस्या और निर्जरा का दृष्टांत : पूज्य प्रवर ने दृष्टांत देते हुए समझाया कि जिस प्रकार तपस्या साधना का प्रयास (कारण) है और कर्मों की निर्जरा उसकी निष्पत्ति (कार्य) है, ठीक उसी प्रकार भाव सत्य आत्मा का शुद्ध प्रयास है और भाव विशोधि उसकी निष्पत्ति-पूर्ण उपलब्धि है।

3. भाव शुद्धि के पावन साधनः आचार्यश्री ने फरमाया कि नवकार मंत्र का जप, लोगस्स का पाठ तथा नमोत्थुणं का अनुष्ठान भाव शुद्धि के श्रेष्ठ साधन हैं। यदि इनका आलंबन भाव सत्य के रूप में लिया जाए, तो उसकी निष्पत्ति आत्मा की परम भाव विशुद्धि के रूप में प्राप्त होती है।

भाग्यवाद, नियतिवाद और पुरुषार्थ का दार्शनिक समन्वय :

1. त्रि-सिद्धान्तों का स्वरूपः आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन में पुरुषार्थ का बहुत बड़ा महत्त्व है। जैन दर्शन में भाग्यवाद और नियतिवाद दोनों को स्वीकार किया जा सकता है, ये दोनों सिद्धान्त ज्ञातव्य हैं, परंतु पुरुषार्थवाद भी एक सीमा तक करणीय होता है। कर्मवाद और भाग्यवाद लगभग एक ही बात हैं।

शेष पृष्ठ 20 पर...

संत ने इत्तो कष्ट क्यों? जाणो 91 भवां रो अणसुण्यो साच!

A. प्रेरणादायी दृष्टांत :

1. शिष्यों की जिज्ञासा : एक महात्मा के पैर में अत्यधिक शारीरिक कष्ट (तकलीफ) था। उन्हें पीड़ा में देखकर शिष्यों ने सहज जिज्ञासा व्यक्त की— 'आप जैसे महान धर्मात्मा और उच्च कोटि के संत पुरुष को इतना कष्ट क्यों भोगना पड़ रहा है?'

2. संत का शांत उत्तर : महात्मा ने बिना किसी व्याकुलता के अत्यंत शांत भाव से उत्तर दिया— 'यह किसी अन्य का दोष नहीं है। यह मेरे 91 जन्म पूर्व किए गए किसी कर्म का फल (विपाक) है, जो आज उदय में आया है और मैं उसे सहज भाव से भोग रहा हूँ।'

B. महत्वपूर्ण शिक्षा : Blame Game नहीं, 'Equanimity' अपनाएँ:

इस दृष्टांत के माध्यम से पूज्य आचार्य प्रवर ने जीवन का महान जीवन-दर्शन समझाया :

1. दोषारोपण से मुक्ति : जीवन में जब भी कोई शारीरिक या मानसिक कष्ट आए, तो दूसरों पर गुस्सा करने या उन्हें दोषी ठहराने के बजाय स्थिति को सहज स्वीकार करना चाहिए।

2. आंतरिक शांति : प्रतिकूल परिस्थितियों में आक्रोश करने से नया कर्म-बंधन होता है, जबकि समता (Equanimity) बनाए रखने से मन शांत रहता है।

C. निर्जरा का मार्ग : कष्टों में ही छिपा है मुक्ति का द्वार :

1. कर्मों की निर्जरा : आचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि यदि हम कष्ट के समय धैर्य, सहनशीलता और समता धारण करते हैं, तो उसी क्षण हमारे आत्मा पर जमे संचित पुराने कर्मों की निर्जरा (क्षय) होती है।

2. सच्चा उपाय : दुःखों को रो-धोकर भोगने के बजाय समता भाव से सहना ही वास्तव में उन पुरातन कर्मों के जाल से हमेशा के लिए मुक्त होने का सबसे प्रामाणिक उपाय है।

तुलसी में राम या राम में तुलसी? जाणो पूज्य प्रवर सूं!

विपरीत परिस्थितियों में महापुरुषों का धैर्य और आराध्य के प्रति अनन्य समर्पण ही साधक को अचल बनाता है... पढ़िए पूज्य प्रवर का पावन बोध!

A. महापुरुषों के जीवन की कसौटी : कठिनाइयाँ और धैर्य :

पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ केवल आम इंसान के जीवन में ही नहीं, बल्कि महापुरुषों के जीवन में भी आती हैं-

1. महान उदाहरण : भगवान श्रीराम और गुरुदेव आचार्य श्री तुलसीराम जी के जीवन का संदर्भ देते हुए आचार्य श्री ने बताया कि कैसे महापुरुषों ने भीषण विपरीत परिस्थितियों में भी अपने धैर्य और संतुलन को कभी डगमगाने नहीं दिया।

2. सच्ची शिक्षा : परिस्थितियाँ कितनी भी विकट क्यों न हों, साधक को अपने आध्यात्मिक धैर्य और आराध्य के प्रति निष्ठा को सदैव अक्षुण्ण रखना चाहिए।

B. काव्यात्मक सौंदर्य: 'नस-नस में बस रहे हो...'

आचार्य श्री तुलसी द्वारा भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में रचित एक अत्यंत सुंदर और भक्तिमय पद्य का उल्लेख करते हुए आचार्य प्रवर ने उसकी भाव-धारा को उद्घाटित किया:

'नस-नस में बस रहे हो,
रस ज्यों कवित्व में...
भगवान! भक्त 'तुलसी',
के तुम ही राम हो।
मेरे मानस के स्वामी!,
तुम एक धाम हो...
प्रभु पार्श्व देव चरणों में,
शत्-शत् प्रणाम हो।
मेरे मानस के स्वामी,
तुम एक धाम हो...'

अद्भुत उपमा : जैसे काव्य या कविता में 'रस' रसात्मक रूप से समाया रहता है, ठीक उसी तरह हे प्रभु पार्श्व! आप मेरी नस-नस में समाए हुए हैं। यह पद्य गुरुदेव आचार्य तुलसी के उच्च वैदुष्य और अनन्य समर्पण को प्रकट करता है।

C. 'तुलसी' और 'राम' का अलौकिक संगम : शब्द-शिल्प का अद्भुत प्रयोग :

आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पद्य की पंक्ति 'भगवान भक्त तुलसी, के तुम ही राम हो' की तीन आध्यात्मिक एवं भाषिक परतों (अन्वय) की सुंदर व्याख्या की :

1. प्रथम अर्थ (भक्त और भगवान) : जैसे गोस्वामी तुलसीदास जी के लिए भगवान श्रीराम ही सब कुछ थे, वैसे ही इस 'भक्त तुलसी' (आचार्य तुलसी) के लिए उनके राम—भगवान पार्श्वनाथ हैं।

2. द्वितीय अर्थ (एक ही नाम में दोनों) : इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास अलग थे और उनके आराध्य राम अलग थे। परंतु यहाँ हमारे गुरुदेव के नाम 'तुलसीराम' में 'तुलसी' भी समाहित हैं और 'राम' भी! एक ही नाम में भक्त और भगवान दोनों एकाकार हो गए हैं।

3. तृतीय अर्थ (गुरु-परंपरा का योग) : आचार्य तुलसी के नाम में तो 'राम' सहज था ही, साथ ही उनके गुरुदेव आचार्य श्री कालूगणी (कालूराम जी) के नाम में भी 'राम' विद्यमान था। इस प्रकार यह पद्य गुरु-परंपरा और आराध्य-भक्ति दोनों के पावन योग को दर्शाती है।

युवा पीढ़ी और आचार्य तुलसी : दिशाहीनता से चरित्र-निर्माण की ओर

● श्रेयांस कोठारी, जयपुर ●

प्रस्तावना : 1989 से 2026 की निरंतरता :

लाडनूं की धरती पर समय जैसे एक वृत्त पूरा कर रहा है। सन् 1989 में यहाँ आयोजित योगक्षेम वर्ष और आज, वर्ष 2026-27 में पुनः आयोजित योगक्षेम वर्ष—दो अलग समय, दो पीढ़ियाँ, लेकिन एक मूल भावना। उस समय युगद्रष्टा आचार्य श्री तुलसी की दृष्टि थी; आज उसी परंपरा को युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण आगे बढ़ा रहे हैं।

समय बदला है। युवाओं की चुनौतियाँ बदली हैं। साधन बदले हैं। लेकिन एक प्रश्न आज भी उतना ही प्रासंगिक है—युवा को केवल योग्य कैसे बनाया जाए, यह पर्याप्त नहीं; उसे चरित्रवान कैसे बनाया जाए? यहीं से आचार्य तुलसी के युवा-दर्शन की यात्रा आरंभ होती है।

A. युवा ऊर्जा और आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण :

युवा को रोकना नहीं, उसकी ऊर्जा को दिशा देना आवश्यक है। आज का युवा अवसरों से घिरा है, फिर भी कई बार स्वयं से दूर होता जा रहा है। प्रतिस्पर्धा है, लेकिन धैर्य कम होता जा रहा है। संपर्क बढ़ रहे हैं, लेकिन आत्मीयता घट रही है। सफलता की आकांक्षा है, लेकिन उसके लिए आवश्यक अनुशासन से समझौता भी दिखाई देता है। आचार्य तुलसी ने इस चुनौती को बहुत पहले पहचान लिया था। उनकी दृष्टि केवल यह बताने तक सीमित नहीं थी कि मनुष्य को क्या नहीं करना चाहिए, बल्कि वे व्यक्ति के भीतर ऐसी चेतना जगाना चाहते थे जिससे वह स्वयं सही और गलत का निर्णय कर सके।

1. अणुव्रत आंदोलन (1949): छोटे-छोटे नैतिक संकल्पों के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में सत्य, संयम, ईमानदारी और सदाचार को उतारने का प्रयास किया गया। इसका संदेश किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं था, बल्कि समूची मानवता के लिए था।

2. व्यसनमुक्ति अभियान : आचार्य तुलसी की व्यसनमुक्ति की शैली में उपदेश से अधिक आत्मीयता थी। एक संस्मरण में वे सिगरेट पीने वाले कुछ सज्जनों से उनकी सिगरेट और लाइटर ही दक्षिणा में माँग लेते हैं। यह संवाद व्यसन के विरुद्ध उनके दृष्टिकोण को उजागर करता है—व्यक्ति को अपमानित किए बिना, उसकी आदत को छोड़ने की प्रेरणा देना।

3. अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् (17 सितंबर 1964): 17 सितंबर 1964 को बीकानेर में स्थापित इस संगठन ने युवा शक्ति को सेवा, संस्कार और संगठन के माध्यम से रचनात्मक दिशा देने का मंच प्रदान किया। इसके पीछे यह सोच थी कि युवा को अच्छा बनने की प्रेरणा मिलने के साथ उसे अच्छा काम करने का अवसर भी मिलना चाहिए।

> युवाओं को केवल आदर्श मत बताइए, उन्हें आदर्श जीने की शक्ति भी दीजिए।
>
> –आचार्यश्री महाश्रमण

B. व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण और संवाद :

13 दिसंबर 1956 को प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नई दिल्ली में अणुव्रत सप्ताह का उद्घाटन किया था। नेहरू अभिलेखागार में उपलब्ध उनके भाषण में युवा पीढ़ी के चरित्र-निर्माण और सामाजिक जीवन में नैतिक अनुशासन के महत्त्व पर बल मिलता है।

इस प्रसंग का बड़ा संदेश यह है कि चरित्र-निर्माण किसी एक धर्म, वर्ग अथवा संगठन की आवश्यकता नहीं है। यह राष्ट्र और मानवता के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है। आचार्य तुलसी युवा को केवल धार्मिक पहचान से नहीं, उसके मानवीय गुणों से देखना चाहते थे—एक विद्यार्थी ईमानदार हो, एक व्यापारी विश्वसनीय हो, एक प्रशासक निष्पक्ष हो और एक नेता उत्तरदायी हो, इन सबके मूल में चरित्र ही है।

C. योगक्षेम वर्ष 2026-27 और भविष्य की दृष्टि :

सन् 1989 का योगक्षेम वर्ष आचार्य तुलसी के जीवन और संघ की यात्रा का महत्त्वपूर्ण अध्याय था। आज 2026-27 में योगक्षेम वर्ष के पुनः आयोजन के साथ वही धरती एक बार फिर साधना, विकास और आत्मक्षमता के जागरण का संदेश दे रही है। आचार्य बदलते हैं, पीढ़ियाँ बदलती हैं, समय की चुनौतियाँ बदलती हैं; लेकिन व्यक्ति को भीतर से समर्थ बनाने की आवश्यकता नहीं बदलती।

आज डिजिटल आकर्षण, त्वरित सफलता की चाह, व्यसन के बदलते रूप और सामाजिक तुलना से पैदा होने वाला दबाव युवा जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। लेकिन विवेक, संयम, ईमानदारी, आत्मविश्वास और करुणा की आवश्यकता हमेशा बनी रहेगी।

उपसंहार :

आज लाडनूं में योगक्षेम वर्ष के अवसर पर आचार्य तुलसी का स्मरण करना तभी सार्थक होगा, जब उनके चिंतन को युवा जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ा जाए।

1. अणुव्रत ने नैतिक संकल्प का मार्ग दिखाया।

2. युवक परिषद् ने सेवा और संगठन का मंच दिया।

3. व्यसनमुक्ति के प्रयासों ने परिवर्तन की संभावना जगाई।

आचार्य तुलसी की सबसे बड़ी विरासत उनके द्वारा कही गई बातें भर नहीं होतीं; वह उन लोगों के जीवन में दिखाई देती है, जिन्होंने उन बातों को अपने आचरण में उतारा। यही दृष्टि 1989 के लाडनूं से आज के लाडनूं तक एक विचार-सेतु बनाती है, और यही इसे आने वाली शताब्दियों तक प्रासंगिक बनाए रखने की संभावना भी है।

:: कार्यकारी संपादक की कलम से ::

थाने लोग कतरा दिन याद राखसी?

कभी एकांत में बैठकर स्वयं से एक प्रश्न पूछिएगा-आखिर हम जी किसलिए रहे हैं? धन कमाने के लिए? परिवार के लिए संपत्ति जोड़ने के लिए? समाज में प्रतिष्ठा पाने के लिए? या फिर उस जीवन को सार्थक बनाने के लिए, जो हमें न जाने कितने पुण्यों के बाद मिला है?

A. सात पीढ़ी का धन :

हम सात पीढ़ियों के भविष्य की चिंता करते हैं। उनके लिए धन, संपत्ति और सुविधाएँ जुटाते हैं। लेकिन क्या कभी सोचा है कि सात पीढ़ियों के धन की चिंता करते-करते हम अपने धर्म की कितनी चिंता करते हैं?

अहमदाबाद में एक अवसर पर परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने इसी संदर्भ में अत्यंत मार्मिक बात फरमाई थी-

'लोग सात पीढ़ी के धन की चिंता करते हैं, तो क्या सात पीढ़ी के धर्म की भी चिंता करते हैं?'

यह प्रश्न केवल सुनने के लिए नहीं, स्वयं के भीतर उतरकर इसका उत्तर खोजने के लिए है।

एक निवेश धन में, दूसरा धर्म में!

मान लीजिए, आपको पता चले कि किसी कंपनी के शेयर में आने वाले वर्षों में शानदार वृद्धि की संभावना है। क्या आप उसमें निवेश बढ़ाएँगे? स्वाभाविक है!

लेकिन जरा सोचिए-अपने आर्थिक भविष्य के लिए हम इतने सजग हैं, तो अपने आध्यात्मिक भविष्य के लिए कितने सजग हैं?

धन कमाना गलत नहीं, परिवार के लिए जीना भी गलत नहीं। गलती तब शुरू होती है, जब घर का भंडार भरते-भरते हम अपने भीतर का भंडार खाली कर देते हैं।

B. 'थाने लोग कतरा दिन याद राखसी' ? :

भगवान महावीर के निर्वाण को लगभग 2500 वर्ष, आचार्य भिक्षु के देवलोक गमन को लगभग 250 वर्ष और आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण को 25 वर्ष से अधिक समय बीत चुका है।

फिर भी हम उन्हें याद करते हैं। क्यों?इसलिए नहीं कि उन्होंने अपने लिए कितना संग्रह किया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपने जीवन को स्वयं से ऊपर उठाकर धर्म, समाज और मानवता के लिए समर्पित किया। स्वयं से प्रश्न करे कि हम चले जाएंगे तो लोग कितने वर्ष याद करेंगे? शायद स्मृति सभा के 2.5 मिनिट!!

C. एक दृष्टि अपने जीवन की ओर :

एक दिन हमारा भी यह संसार छूट जाएगा। हमारा पद किसी और के पास होगा, हमारी कुर्सी पर कोई और बैठेगा, हमारी संपत्ति के कागज किसी और के हाथों में होंगे और जिस घर को हमने अपना संसार समझा, वह हमारे बिना भी चलता रहेगा।

तब प्रश्न यह नहीं होगा कि हमने कितना कमाया। प्रश्न यह होगा कि हमने अपने जीवन से क्या कमाया-धन, प्रतिष्ठा और संपत्ति या किसी के हृदय में स्थान?

आँसू कुछ दिनों में सूख जाते हैं, तस्वीरों पर धूल जम जाती है। लेकिन किसी के जीवन में बोए गए अच्छे संस्कार और किसी के दुःख में दिया गया सहारा कभी-कभी पीढ़ियों तक जीवित रहता है। जीवन कितना लंबा था, यह महत्त्वपूर्ण है; लेकिन उससे भी बड़ा प्रश्न है-उस जीवन से कितना उजाला फैला?

D. गण का भंडार या घर का भंडार?

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने गुरु तुलसी के समर्पित जीवन को इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया-

'जीवन भर काम करूँगा,
गण का भंडार भरूँगा,
संकल्प अटूट निभाया रे...
महाप्राण गुरुदेव!'

और आज के मनुष्य की दौड़ को इन शब्दों में समझा जा सकता है-

'जीवन भर काम करूँगा,
घर का भंडार भरूँगा,
संकल्प मोह का साधा रे,
मन में ये संदेव'

घर का भंडार भरना कर्तव्य है, लेकिन समाज का भंडार भरना जीवन की सार्थकता है। आचार्यश्री तुलसी ने अपने जीवन से यही सिखाया कि मनुष्य की महानता उसके संग्रह की सीमा से नहीं, उसके समर्पण की सीमा से पहचानी जाती है।

E. जितनी भारी गठरी, उतना कठिन सफर!

'जितनी भारी गठरी होगी,
उतना तू हैरान रहेगा,
जितना कम सामान रहेगा,
उतना सफर आसान रहेगा।'

जीवन की गठरी में केवल धन और संपत्ति का बोझ नहीं होता। इसमें अहंकार, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, प्रतिशोध और अनगिनत इच्छाएँ भी भरी होती हैं।

एक इच्छा पूरी होती है, तो दूसरी जन्म ले लेती है। इस दौड़ में हम सब कुछ जुटाते रहते हैं, लेकिन कभी यह नहीं पूछते कि जिसे पाने के लिए हम जी रहे हैं, क्या वह वास्तव में हमारे जीवन को बेहतर भी बना रहा है?

त्याग का अर्थ संसार छोड़ देना नहीं, बल्कि संसार में रहते हुए भी उसके मोह का गुलाम न बनना है। परिवार के प्रति उत्तरदायित्व निभाना है, लेकिन अपने भीतर के मनुष्य को जीवित रखते हुए।

धन हमारे पास हो, लेकिन धन ही हमारा उद्देश्य न बन जाए। प्रतिष्ठा मिले, लेकिन अहंकार न आ जाए। सफलता मिले, लेकिन संवेदना न खो जाए।

F. फैसलो अब थारै हाथ में है!

आचार्यश्री तुलसी की जन्म जयंती पर स्वयं से केवल तीन प्रश्न पूछिए-

1. मैं अपने बच्चों के लिए कितनी संपत्ति छोड़कर जाऊँगा, यह तो सोचता हूँ; लेकिन कितने संस्कार छोड़कर जाऊँगा?

2. मैंने जीवन में कितने लोगों से संबंध बनाए, यह तो याद है; लेकिन कितने लोगों के दुःख में उनके साथ खड़ा रहा?

3. यदि कल मेरा नाम इस संसार से मिट जाए, तो मेरे जीवन का ऐसा क्या होगा, जो मेरे जाने के बाद भी जीवित रहेगा?

इन प्रश्नों का उत्तर किसी सभा में नहीं देना है। न किसी को दिखाना है, इनका उत्तर केवल अपने अंतर्मन को देना है। अंत में, फिर वही प्रश्न-

–थारी पहचान थारी तिजोड़ी सूं रहसी, या थारा संस्कारां सूं?

–थारी याद थारा पद अर प्रतिष्ठा सूं रहसी, या थारा त्याग अर सेवा सूं?

–थारो जीवन फ़गत तिजोड़ियाँ भरण में बीतसी, या गण, धर्म अर समाज रै भंडार में भी काई योगदान जोड़सी?

जीवण फ़गत तिजोड़ियाँ भरण रो नाम कोनी।

फैसलो अब थारै हाथ में है-

दो पल री मौन-पाळ पाछै
विस्मृति में रवो जावणो है,
या सेवा, संस्कार अर समर्पण रै बल पर,
लोगां रै हिवड़ै में चिरकाल ताईं जीवंत रैवणो है!

आचार्यश्री तुलसी को सच्ची श्रद्धांजलि यही है-हमारा जीवन केवल हमारे लिए नहीं, किसी बड़े उद्देश्य के लिए भी जिए।

–कार्यकारी संपादक, तेरापंथ टाइम्स



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 नवम्बर - 08 नवम्बर 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

पूज्य प्रवर ने चतुर्थ आचार्य 'प्रज्ञा पुरुष' श्रीमद् जयाचार्य के जन्मोत्सव पर उद्घाटित किया 'हाजरी' परंपरा का ऐतिहासिक मर्म

प्रज्ञा पुरुष श्रीमज्जयाचार्य अनुशासन और व्यवस्था के महान प्रतीक थे—आचार्यश्री महाश्रमण

धुलाबाड़ी/जोधपुर ज्ञानशाला के संभागियों ने दी प्रस्तुतियां, जोधपुरवासियों ने अर्पित की चातुर्मास की प्रार्थना

लाडनूं।
25 अक्टूबर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूँ स्थित सुधर्मा सभा में आश्विन शुक्ला चतुर्दशी का पावन पर्व अध्यात्म, अनुशासन और धर्मसंघीय गौरव के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। पूज्य प्रवर ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित विषय 'हाजरी निर्माता श्रीमज्जयाचार्य' पर अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य के महान व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके ऐतिहासिक अवदानों का विहंगम स्मरण कराया।

प्रज्ञा की तटस्थ समीक्षा और पूर्वाग्रहों का त्याग :

1. प्रज्ञा का वास्तविक कार्य : प्रवचन के आरंभ में आचार्यश्री ने प्रज्ञा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि प्रज्ञा हमेशा समीक्षा करती है। मनुष्य के भीतर निर्मल प्रज्ञा और यथार्थ के प्रति अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। यह बहुत बड़ी बात है कि आदमी यह तटस्थ समालोचना करे कि वास्तव में सही क्या है और गलत क्या है।

2. कुतर्क और आग्रह का निषेध: पूज्य प्रवर ने विशेष रूप से समझाया कि केवल अपने पक्ष को ही सही सिद्ध करने के लिए तर्क या कुतर्क करना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। सामने वाले की बात सही प्रतीत होने पर भी केवल अपने पूर्वाग्रह या अहंकार के कारण अपनी बात का आग्रह रखना सर्वथा अनुचित है। इसलिए आगम में सत्य और तटस्थता को ही सर्वोपरि माना गया है।

प्रज्ञा पुरुष श्रीमद् जयाचार्य का प्राकट्य और महान व्यक्तित्व :

1. जन्म और पारिवारिक पृष्ठभूमि: आश्विन शुक्ला चतुर्दशी और धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य, प्रज्ञा पुरुष श्रीमद् जयाचार्य का पावन जन्मदिवस है। विक्रम संवत १८६० की भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी को आद्य आचार्य भिक्षु का सिरियारी में महाप्रयाण हुआ था, और ठीक उसके एक माह पश्चात आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को जयाचार्य का शिशु



के रूप में जन्म हुआ।

2. बंधु त्रपुटी का अद्भुत संयोग : जयाचार्य के सांसारिक पिता श्री आईदान जी थे, जो स्वामीजी के समय ही तेरापंथी श्रद्धा से जुड़ गए थे। उनके सांसारिक भाई स्वरूपचंदजी स्वामी और भीमजी स्वामी भी तेरापंथी धर्मसंघ में दीक्षित हुए, जिससे यह 'बंधु त्रपुटी' संपूर्ण गण को गुलजार करने वाली बनी। बालक जीतमल ने अपनी आयु के १० वर्ष पूर्ण होने से पूर्व ही आचार्य भारमलजी के युग में मुनि रायचंदजी से दीक्षा प्राप्त कर ली थी।

3. विद्यादान और संघोन्नति : जयाचार्य के जन्म को आज २२३ वर्ष पूरे हो रहे हैं। गृहस्थावस्था में सगाई होने के बावजूद उनका महान व्यक्तित्व धर्मसंघ को प्राप्त हुआ। मुनिश्री हेमराजजी स्वामी ने उन्हें अपना समस्त ज्ञान और विद्यादान प्रदान किया। जीतमुनि से अग्रणी, युवाचार्य और तत्पश्चात ऋषिराजजी महाराज के बाद वे धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य बने। उन्होंने धर्मसंघ को नवीन ऊर्जा, सुदृढ़ व्यवस्थाएं और अनुशासन प्रदान किया।

चतुर्दशी अनुष्ठान, ज्ञानशाला प्रस्तुतियां और जोधपुर वासियों का चातुर्मास निवेदन :

1. लेखपत्र और श्लोक उच्चारण: चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित करते हुए आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं को विविध पावन प्रेरणाएं दीं। आचार्यप्रवर की आज्ञा से साध्वी पद्मप्रभाजी ने 'लेखपत्र' का उच्चारित किया तथा साध्वीजी द्वारा 'दसवें आलयं' के श्लोक उच्चारित किए गए। तत्पश्चात आचार्यश्री ने साध्वीजी को सात कल्याणक बख्शीश किए और समस्त चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

2. धुलाबाड़ी और जोधपुर ज्ञानशाला की प्रस्तुतियां : मंगल पाठ के उपरांत आचार्यश्री की पावन सन्निधि में धुलाबाड़ी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी पहुंचे। इस अवसर पर तेरापंथी सभा धुलाबाड़ी के पूर्व अध्यक्ष श्री इन्दरचंद बोथरा ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही जोधपुर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भी अपनी सुंदर प्रस्तुतियां दीं।

3. चातुर्मास की प्रार्थना और पाथेय : जोधपुर से पधारे श्रावणियों ने आचार्यश्री के श्रीचरणों में आगामी चातुर्मास हेतु सविनय प्रार्थना की और भावपूर्ण गीत का संगान किया। इस अवसर पर युवाचार्यश्री ने जोधपुरवासियों को प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया तथा पूज्य आचार्यश्री ने समस्त जोधपुरवासियों को अपना अहेतुक मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

> सामने वाले की बात सही प्रतीत होने पर भी केवल अपने पूर्वाग्रह या अहंकार के कारण अपनी बात का आग्रह रखना सर्वथा अनुचित है।
>
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

भिक्षु महाप्रयाण रे एक महीने बाद हुयो महापुरुष रो जन्म... कूण हो वा कुलदीपक?

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने प्रवचन में श्रीमद् जयाचार्य के प्रकटीकरण और उनके परिवार के असीम तेरापंथी समर्पण का एक अत्यंत प्रेरणादायी इतिहास सामने रखा:–

A. जन्म और काल : भिक्षु महाप्रयाण के ठीक एक महीने बाद :

1. पावन प्रकटीकरण : श्रीमद् जयाचार्य का जन्म आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को हुआ था।

2. ऐतिहासिक काल : प्रवचन में विशेष उल्लेख किया गया कि विक्रम संवत 1860 में आचार्य भिक्षु के महाप्रयाण (भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी) के ठीक एक महीने बाद इस धरा पर जयाचार्य का आगमन हुआ, जिसे मानो धर्मसंघ के लिए एक महान उत्तराधिकार का संकेत माना गया।

B. गोलछा परिवार का अटूट तेरापंथी समर्पण :

1. मूल निवास और निष्ठा : जयाचार्य का संसार पक्षीय परिवार मारवाड़ के 'रोयट' गाँव का प्रसिद्ध 'गोलछा' परिवार था।

2. भक्ति की गहराई : यह परिवार पहले से ही आचार्य भिक्षु का अनन्य अनुयायी था और पूरी तरह से तेरापंथी श्रद्धा से ओत-प्रोत था।

C. तीन भाइयों की त्रिवेणी: धर्मसंघ की अनूठी घटना :

1. तीन भाई की दीक्षाएं : इस परिवार की सबसे बड़ी और गौरवशाली विशेषता यह थी कि जयाचार्य के तीनों भाई— स्वरूपचंद जी, भीम जी और जीतमल जी (जो आगे चलकर श्रीमद् जयाचार्य बने)—तीनों ने संसार का त्याग कर संयम पथ को अपनाया।

2. इतिहास की स्वर्णिम घटना : एक ही परिवार से तीन भाइयों का एक साथ संघ में दीक्षित होना तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास की अत्यंत दुर्लभ और प्रेरणादायक घटना है।

D. संतों का स्मरण और गुरुदेव तुलसी का पावन गान :

1. स्वरूपचंद जी स्वामी का व्यक्तित्व : प्रवचन में स्वरूपचंद जी स्वामी का विशेष स्मरण किया गया, जिनका व्यक्तित्व धर्मसंघ में एक विशिष्ट और प्रभावकारी मुनि प्रवर के रूप में दर्ज है।

2. गौरवशाली पंक्तियाँ : गुरुदेव तुलसी ने अपने एक प्रसिद्ध गीत में इन महान संतों का स्मरण करते हुए फरमाया है—

धरा पर उतरा स्वर्ग विमान रे,
गतिमान रे, यह तेरापंथ महान।
निराला यह नंदन उद्यान रे,
गतिमान रे, यह तेरापंथ महान॥
संत सतजुगी मौजी बेणी,
स्वरुप कालू मगन त्रिवेणी।
महासती सरदार गुलाबां
ये गण के गौरव-गान रे॥

साँसां री आस टूटी, फेर हुयो चमत्कार... घर में गोचरी खेलतो वो बालक कूण हो?

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने प्रवचन में श्रीमद् जयाचार्य के बालजीवन का एक अत्यंत प्रेरणादायी प्रसंग फरमाया है। बचपन की गंभीर बीमारी से लेकर साधु बनने के बाल-अभिनय तक... आइए जानते हैं इस पावन आलेख का सार–

A. बाल्यावस्था की रुग्णता और साध्वी अजबूजी का आशीर्वाद :

1. आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त प्रसंग: आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि जब श्रीमद् जयाचार्य छोटे शिशु थे, तब वे काफी बीमार रहने लगे थे। उनकी शारीरिक स्थिति इतनी गंभीर हो गई थी कि उनकी माताजी ने उनके जीवित रहने की आशा लगभग छोड़ दी थी।

2. बुआ का पावन वचन: ऐसे समय में उनकी बुआ और दीक्षित साध्वी अजबूजी ने वहाँ आकर बच्चे की स्थिति देखी और माताजी को एक वचन माँगा— 'यदि यह बालक स्वस्थ हो जाए और भविष्य में दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट करे, तो इसे कभी रोकना मत।' उस समय माताजी को यह बात एक आश्चर्य जैसी लगी थी, क्योंकि उन्हें तो बस बच्चे के जीवित बचने की ही उम्मीद नहीं थी।

B. बचपन के संस्कार और वैराग्य की उमंग :

1. स्वास्थ्य लाभ और वैराग्य : आचार्य श्री ने आगे फरमाया कि वह बालक धीरे-धीरे स्वस्थ हुआ और जब वह मात्र सात-आठ वर्ष की आयु का हुआ, तो उसके भीतर पूर्वजन्म के संस्कार प्रगट होने लगे।

2. दीक्षा की जिद : बालक के मन में ऐसा तीव्र वैराग्य जागा कि वह बार-बार परिजनों से दीक्षा लेने की जिद्द करने लगा, जो यह प्रमाणित करता है कि उसका उच्च आध्यात्मिक लक्ष्य बचपन से ही तय था।

C. गोचरी का बाल-अभिनय और धर्म की अलख :

1. बाल-अभिनय का रोचक प्रसंग : आचार्य प्रवर ने प्रवचन में यह बेहद रोचक उल्लेख किया कि वे बचपन में ही साधु बनने का सुंदर अभिनय किया करते थे।

2. शुद्ध दान की प्रेरणा : वे घर में ही एक झोली और कटोरी लेकर अपने चाचा या अन्य परिजनों के पास 'गोचरी' के लिए जाते थे और बड़े प्रभावपूर्ण अंदाज में कहते थे— 'मैं साधु बन गया हूँ, मुझे शुद्ध दान ही देना, अशुद्ध दान दोगे तो पाप लगेगा!'

गण विशुद्धि करण 'हाजरी' व्यवस्था : आचार्य श्रीमद् जयाचार्य का ऐतिहासिक अवदान :

धर्मसंघ को सुव्यवस्थित रखने और साधु-साध्वियों के आचरण को शुद्ध व अनुशासित बनाने वाली 'हाजरी' व्यवस्था का इतिहास और उसका स्वरूप क्या रहा है? आइए जानते हैं इस आलेख में–

A. 'गण विशुद्धि करण हाजरी' : नामकरण और वर्गीकरण का इतिहास :

1. मर्यादाओं का संकलन : आचार्य भिक्षु ने धर्मसंघ की सुव्यवस्था के लिए जो महान मर्यादाएं बनाई थीं, आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने उनका वर्गों में सुव्यवस्थित संकलन किया।

2. नाम का सफर : इस वर्गीकरण का मूल और प्रामाणिक नाम 'गण विशुद्धि करण हाजरी' था, जो कालांतर में सहज रूप से सरल होकर केवल 'हाजरी' के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

B. मर्यादा पाठ का क्रम और ऐतिहासिक शुरुआत :

1. चातुर्मास के पश्चात नियम : विक्रम संवत 1910 में नाथद्वारा में चातुर्मास संपन्न होने के बाद, जब जयाचार्य बड़ी रावलिया पधारे, तब उन्होंने एक ऐतिहासिक और अनुशासित नियम की स्थापना की।

2. अनिवार्य श्रवण : उन्होंने संतों के लिए यह अनिवार्य किया कि प्रातःकालीन व्याख्यान के समय सभी संत खड़े रहकर स्वामी जी (आचार्य श्री भिक्षु) द्वारा रचित मर्यादाओं के लिखत को एकाग्रता से सुनें।

C. अनुशासन, संस्कार और व्यापक स्वरूप :

1. अनुशासन का सशक्त माध्यम: यह 'हाजरी' व्यवस्था केवल कोई सामान्य औपचारिकता नहीं थी, बल्कि यह धर्मसंघ के कठोर अनुशासन, जागृति और संस्कारों को निरंतर बनाए रखने का एक अत्यंत सशक्त माध्यम बनी।

2. दूरदर्शितापूर्ण दृष्टिकोण : जयाचार्य की यह अद्भुत दूरदर्शिता थी कि इस क्रम के माध्यम से संघ के प्रत्येक साधु-साध्वियों में मर्यादाओं के प्रति सतत जागरुकता बनी रहे और उनका आचरण सदैव शुद्ध व निर्मल बना रहे।

3. सर्वत्र अनिवार्यता : यह व्यवस्था केवल एक स्थान पर रहने वाले संतों या गुरुकुल वास तक सीमित नहीं रही, बल्कि न्यारा विहार करने वाले संतों के लिए भी उतनी ही अनिवार्य रखी गई, ताकि संपूर्ण संघ में अनुशासन की एकरुपता सर्वत्र बनी रहे।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।